04 - एसडीजी के शोर के बीच भारत का शानदार प्रदर्शन

05 - स्तनपान की राह में सामाजिक परंपराएं, रूढ़ियां और धारणाएं...

A Daily News Magazine

इंदौर

शुक्रवार, 02 अगस्त, 2024

06 - आरोग्य केंद्र के स्थान को लेकर दो भागों में बटे कामथवासी

07- म.प्र.शासन के कैबिनेट मंत्री प्रहलाद पटेल देवास पहुंचे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 281, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

प्रसंगवश

परिवार से दूर, दो वक्त का खाना, यूपीएससी तैयारी की भारी कीमत...

नूतन

चौबीस वर्षीय नीतीश सिन्हा अखिल भारतीय सेवा (आईएएस) के एक अधिकारी बनने की उम्मीद के साथ बिहार के दरभंगा स्थित अपने घर से सिर्फ 70 हजार रुपये लेकर दिल्ली आए थे। न्यूनतम ज्ञान और मामूली संसाधनों के साथ सिन्हा ने यूपीएससी की तैयारी शुरू की। वर्तमान में दो साल बाद भी सिन्हा के लिए यूपीएससी पास करना एक सपना बना हुआ है, उनका परिवार अब लगभग 7 लाख रुपये कर्ज में है, जबकि उनके किसान पिता हर महीने पैसे भेजते रहते हैं।

सिन्हा ने ओल्ड राजिंदर नगर में एक स्टॉल पर चाय की चुस्की लेते हुए कहा, 'मैंने अब प्लान बी के बारे में सोचना शुरू कर दिया है। मैं इसे लंबे समय तक नहीं कर सकता। मैंने अपने सारे वित्तीय संसाधन खत्म कर दिए हैं- रिश्तेदारों से लेकर मेरे पिता और दोस्तों तक। कोई सहायता तंत्र उपलब्ध नहीं है, न तो आर्थिक रूप से और न ही मानसिक रूप से।'

यूपीएससी एस्पिरेशन की कहानी - 24×7 पढ़ने, संघर्ष और आशा और निराशा के बीच का अंतहीन चक्र- बॉलीवुड फिल्मों, उपन्यासों और ओटीटी सीरीज़ में किंवदंतियों का विषय बन गई है, लेकिन एक और काफी हद तक नज़रअंदाज की गई कहानी हैः रोज़मर्रा का वित्तीय तनाव, पैसे की तंगी और माता-पिता के कर्ज को लेकर भारी अपराध बोध। नोटबुक खरीदने के लिए, एक्स्ट्रा चाय और समोसा खाने से पहले दो बार सोचने से लेकर असुरक्षित, अस्वच्छ मकान में रहने तक – एस्पिरेंट्स की स्पेंडिंग लिस्ट उस सैन्यवादी अनुशासन की एक झलक है जिससे वे बच नहीं सकते।

सिन्हा ने ओल्ड राजिंदर नगर के एक प्रतिष्ठित संस्थान में अपने ऑप्शनल पेपर - समाजशास्त्र के लिए कोचिंग में एडमिशन लिया। वे जनरल स्टडीज की कोचिंग का खर्च नहीं उठा सकते थे, जिसकी कीमत 2-2.5 लाख रुपये है। सिन्हा ने इन दो सालों में दिन में सिर्फ दो बार खाना और 6-7 कप चाय पीकर गुज़ारा किया।

वे करोल बाग मेट्रो स्टेशन से करीब 2 किलोमीटर दूर एक भीड़भाड़ वाले इलाके में स्थित चौथी मंजिल पर 2 बीएचके फ्लैट का 10 हजार रुपये किराया देते हैं, जिसमें दो अन्य लोग रहते हैं। लगातार असफल प्रयासों और सालों बीतने के कारण सिन्हा जैसे एस्पिरेंट्स हतोत्साहित हो जाते हैं और उनके पास अपने सपने को पूरा करने के लिए पैसे की कमी हो जाती है। तैयारी के पहले साल में अगर वे किसी कोचिंग संस्थान में जाते हैं, तो आमतौर पर उम्मीदवार 5 लाख रुपये खर्च कर देते हैं।

दिल्ली में एक कोचिंग सेंटर स्टडीआईक्यू के शिक्षक अमित किल्होर ने कहा, 'जनरल स्टडीज की कोचिंग के लिए कम से कम 2 लाख रुपये और ऑप्शनल पेपर के लिए कम से कम 50 हजार रुपये देने पड़ते हैं। औसत किराया 15 हजार रुपये प्रति माह है और भोजन, पढ़ने के लिए कंटेंट और बाकी खर्च इसमें जुड़ जाते हैं। यह उन लोगों के लिए बहुत है जिनके माता-पिता अपने खर्चों को सीमित करके पैसे भेज रहे हैं।'

नीतीश सिन्हा ने आंखों में आंसू लिए कहा, 'मैं अपने पिता से फोन पर ज्यादा बात नहीं करता, लेकिन जब मैं उनसे पैसे मांगने के लिए फोन करता हूं, तो मुझे बहुत बुरा लगता है, क्योंकि मुझे पता है कि मेरे महीने भर के खर्चों का इंतजाम करना उनके लिए बहुत मुश्किल है। उस पल मुझे ऐसा लगता है कि मेरा दिल टूट जाएगा।'

जो लोग यूपीएससी की तैयारी में सालों बिता देते हैं, वे कुछ कमाई करने के लिए काम करना शुरू कर देते हैं ताकि उन्हें अपने परिवार से पैसे न मांगने पड़ें। कई लोग कोचिंग सेंटरों में 3-4 घंटे काम करते हैं, जिसमें अनुवाद, कंटेंट क्रिएशन और उत्तर पुस्तिका जांचने जैसे काम शामिल हैं। रिजल्ट के बाद, जब सिन्हा का नाम परीक्षा पास करने वालों की पीडीएफ में नहीं आया, तो अगले कुछ दिन सबसे ज़्यादा तकलीफदेह रहे हैं। 'नहीं हुआ' ये दो शब्द कहने में बहुत मेहनत लगती है। उन्होंने कहा, 'लेकिन, मैं इस बात से दुखी भी नहीं हो सकता क्योंकि मैं तुरंत अगली परीक्षा की तैयारी शुरू कर देता हूं और यह कभी न खत्म होने वाला सिलसिला है।' सिन्हा ने कहा, पिछले कुछ महीनों से, मैं दवाएं ले रहा हूं और किस लिए? बस डर से बचने के लिए।' अब तक उनकी दवा पर 12 हजार रुपये खर्च हो चुके हैं, जिसे वे आगे नहीं वहन नहीं कर सकते।नए पेन खरीदने के बजाय, सिन्हा सिर्फ रिफिल का इस्तेमाल करते हैं। वे दिन में सिर्फ दो बार खाना खाते हैं और पिछले दो साल में शहर में एक भी बार मौज-मस्ती के लिए नहीं गए हैं।

पराठे और मैगी जैसे सस्ते खाने के विकल्प लगभग 50 रुपये में मिल जाते हैं, लेकिन इन खाने-पीने की दुकानों की स्वच्छता के मानक सवालों के घेरे में हैं। सिन्हा आने-जाने का खर्च भी कम करते हैं। वे रिक्शा लेने की बजाय हर दिन 1.5 किलोमीटर पैदल चलकर लाइब्रेरी जाते हैं। इस यात्रा के लिए रिक्शा से उन्हें हर तरफ लगभग 40 रुपये देने पड़ते हैं।

चेक्ड टी-शर्ट और बहुत पुरानी जींस पहने सिन्हा ने कहा, 'मैंने पिछले दो साल में कोई नया कपड़ा नहीं खरीदा है। आप मेरी बात पर यकीन नहीं करेंगे अगर मैं कहूं कि इस महीने मैंने सिर्फ फूलों और मोमबत्तियों पर ही खर्च किया है, जिनका इस्तेमाल कल रात तीन मृतकों के लिए न्याय की मांग करते हुए कैंडल मार्च में किया गया था।'

ओल्ड राजिंदर नगर में यूपीएससी के तीन एस्पिरेंट्स की मौत ने उन्हें अंदर से झकझोर दिया है। उनकी बेचैनी बढ़ गई और उन्हें अपनी दवा की खुराक बढ़ानी पड़ी। सिन्हा जो खुद भी विरोध प्रदर्शन में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं, ने कहा, 'उन तीनों ने गटर के पानी में डूबकर अपनी कीमती जान गंवा दी। मैं इस घटना से इतना आहत हुआ कि मैंने अगले दो दिनों तक कुछ नहीं खाया। वे भी मेरी तरह ही युवा और सपनों से भरे हुए थे, लेकिन कोचिंग संस्थान और अधिकारियों के खराब प्रबंधन ने उन्हें मार डाला।'

नीतीश को नहीं पता कि मौतों के बाद कुछ बदलेगा या नहीं, लेकिन ओल्ड राजिंदर नगर में सुविधाओं को लेकर उनका गुस्सा इतना तेज़ है कि वे अपना पूरा दिन सड़क पर बैठकर 'हमें न्याय चाहिए' चिल्लाते हुए बिताते हैं। सिन्हा ने ओल्ड राजिंदर नगर में विरोध प्रदर्शन में वापस आते हुए कहा, 'ये नारे सिर्फ मरने वालों के लिए नहीं हैं। जब मैं ये नारे लगाता हूं, तो मुझे लगता है कि यह मेरी भी लड़ाई है।'

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

आ खड़ा हुआ है स्कूल के पास
एक बांसुरी वाला
देखना अभी छूटेंगे बच्चे
घेर लेंगे दौड़ कर इसे
बस्ते फेंक देंगे
ढूंढेंगे बाप के जेब की
तलहटी से रेजगारियां
मां का बटुआ
पलटा के लूट लेंगे
बेसुर में अपने-अपने
बजाते बांसुरी घर जाएंगे
सुनो...यह दृश्य था
पर स्वप्न हो गया है इस सदी में।।

– विवेक चतुर्वेदी

पहाड़ों के लिए 'अभिशाप' बनी बरसात, हर ओर तबाही

- हिमाचल में 4 जगह बादल फटे, 2 मौतें, 52 लोग लापता
- उत्तराखंड में मंदाकिनी नदी में समा गई 30 मीटर की सड़क

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश में बीती रात 4 जगह बादल फटे। इससे रामपुर के समेज खड्ड में कई घर बह गए। यहां 2 लोगों के शव मिले हैं, जबकि 52 लोग लापता हैं। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ रेस्क्यू में जुटी है। वहीं, मलाणा में पार्वती नदी में पानी बढ़ने के बाद पावर प्रोजेक्ट का डैम टूट गया। कुल्लू और मंडी में भी भारी तबाही हुई है। उत्तराखंड में टिहरी गढ़वाल के घनसाली में भी बुधवार रात बादल फटे। यहां दो लोगों की मौत हो गई। एक व्यक्ति घायल है। केदारनाथ में बादल फटने से यात्रा रूट पर 30 मीटर की सड़क मंदाकिनी नदी में समा गई। यात्रा रोक दी गई है और 200 से ज्यादा लोग फंसे हैं। इधर, राजस्थान के जयपुर में एक घर के बेसमेंट में डूबने से एक बच्चे समेत 3 लोगों की मौत हो गई। बुधवार रात तेज बारिश के कारण दीवार ढहने से 25 लोग दो घरों में फंस गए थे। बाहर निकलते समय तीन लोग बेसमेंट में भरे पानी में डूब गए। हिमाचल प्रदेश के मनाली में मणिकर्ण सड़क पर सब्जी मंडी की पांच मंजिला बिल्डिंग ढह गई। बारिश के बाद ब्यास नदी का जल स्तर बढ़ने से बिल्डिंग की नींव कमजोर पड़ गई थी। इस वजह से आज गुरुवार सुबह बिल्डिंग नदी में जा गिरी। धर्मशाला जिले के कुछ

हिस्सों में भारी बारिश हो रही है। मौसम विभाग के मुताबिक प्रदेश में अगले चार-पांच दिन तक बारिश जारी रहेगी। कुल्लू में कलेक्टर तोरुल एस रवीश ने भारी बारिश के बाद सभी शिक्षण संस्थानों में 1 और 2 अगस्त को छुट्टी घोषित कर दी है। सीएम सुखविंदर सिंह सुक्खू ने शिमला के रामपुर में समेज खड्ड में खोज और बचाव अभियान का जायजा लेने के लिए अधिकारियों के साथ बैठक की। बारिश के रेड अलर्ट के चलते देर रात को दिल्ली और कर्नाटक के कुछ जिलों में आज गुरुवार के लिए स्कूल-कॉलेजों में छुट्टी घोषित कर दी गई है।

संसद और सुप्रीम कोर्ट में भी पानी भरा

संसद, सुप्रीम कोर्ट, एम्स, लुटियंस दिल्ली, भारत मंडपम, इंडिया गेट-रिंग रोड टनल, प्रगति मैदान पानी में डूबे रहे। कई पेड़ धराशायी हुए। रोज 20 मिनट में पूरे होने वाले सफर में 4.30 घंटे से ज्यादा लगे। खराब मौसम के चलते शाम 7.30 से 8 बजे के बीच 10 फ्लाइट डायवर्ट की गईं। 8 जयपुर भेजी गईं, 2 को लखनऊ भेजा गया। मौसम विभाग ने दिल्ली अगले 24 घंटे के लिए रेड अलर्ट जारी किया है। कई इलाकों में पानी भरने के कारण आईएमडी ने अधिकारियों को अलर्ट पर रहने को कहा है। नॉर्थ दिल्ली के सब्जी मंडी इलाके में एक इमारत ढह गई। दिल्ली मयूर विहार फेज थ्री में एक महिला और बच्चा नाले में बहे। तीन दिन पहले बेसमेंट में पानी भरने से चर्चा में आए ओल्ड राजेंद्र नगर में फिर पानी भर गया। बादल फटने के बाद सोनप्रयाग तक की सड़कों पर भगदड़ जैसी स्थिति है।

चित्रकूट में प्रदेश स्तरीय आभार सह-उपहार कार्यक्रम का शुभारंभ

इस बार 10 तारीख को लाड़ली बहनों के खाते में आएंगे 1500 रुपए

सतना (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव गुरुवार को चित्रकूट पहुंचे। उन्होंने यहां प्रदेश स्तरीय आभार सह-उपहार कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सीएम ने मंच से फूलों का तारों का सबका कहना है, एक हजारों में मेरी बहना है... गाना गाते हुए बहनों को राखी का उपहार दिया।

उन्होंने मंच से घोषणा की कि 10 तारीख को सभी बहनों के खाते में इस बार साढ़े 12 की जगह 1500 रुपए आएंगे। साथ ही उज्जवला गैस कलेक्शन के लिए भी 40 लाख बहनों के खाते में 450 रुपए डाले जाएंगे।

- **सीएम ने गाया...एक हजारों में मेरी बहना है**
- **उज्जवला गैस कलेक्शन के लिए भी 40 लाख बहनों के खाते में 450 रुपए डाले जाएंगे**

सीएम ने इस दौरान चित्रकूट में चल रही अवैध पार्किंग पर सख्ती दिखाई। चित्रकूट विधायक सुरेंद्र सिंह गहरवार के समस्या उठाने पर उन्होंने मंच से ही चित्रकूट में हर तरह की वसूली बंद कराने के निर्देश सतना कलेक्टर को दिए। उन्होंने कहा कि आज से सारी वसूली बंद कराइए। बहनों ने सीएम को राखी भेंट की वहीं, सीएम ने बहनों को उपहार दिए।

एक करोड़ 39 लाख बहनों ने हमारी पार्टी को प्रेम दिया- मुख्यमंत्री ने कहा -हमने जब तय किया कि सावन महोत्सव और रक्षाबंधन उत्सव मनाना चाहिए, लेकिन कहां से। तब ध्यान में आया कि चित्रकूट से धाम से मनाना चाहिए। यह वही धाम है, जहां भगवान कामतानाथ, माता मंदाकिनी, गुप्त गोदावरी हैं। 17 लाख साल पहले भगवान राम और भरत के अश्रुओं से ये धरती भीगी है। ये पावन धरती है। इससे बढ़िया स्थान इस कार्यक्रम की शुरुआत के लिए कोई और नहीं हो सकता।

आज मौसम से हमारी कुश्ती हो रही थी, लगा कि पहुंच नहीं पाएंगे, लेकिन हमने कहा- बहनों का कार्यक्रम है, जाना जरूरी है। भगवान ने भी साथ दिया और मैं यहां पहुंचा। हजारों साल से ऋषि

मुनियों ने त्याग, तपस्या से त्योहारों की श्रृंखला शुरू की। ये त्योहार प्रेम बांटते हैं। हमारे देश को देखने वाले लोग तो समझते हैं, लेकिन दूर रहने वालों को जरूर यह अटपटा लगता है, लेकिन जब वे आते हैं तो यहीं के हो के रह जाते हैं।

सावन के महीने का आनंद अनूठा होता है- होली, संक्रांति, बसंत, गुड़ी पड़वा, गुरु पूर्णिमा के महत्व को रेखांकित करते हुए सीएम ने कहा कि सावन के महीने का आनंद अनूठा होता है। बहनें मां-बाप के बाद भाई के लिए उस प्रेम की पूर्ति करती हैं। हम एक मात्र देश हैं, जहां माता का संबंध हमारी संस्कृति से जुड़ता है। हम मातृ संस्था को आदर देते हैं।

स्वप्निल कुसाले का 'पदक' पर निशाना,जीता ब्रॉन्ज

पेरिस ओलिंपिक में शूटिंग इवेंट्स में भारत को अब मिला तीसरा मेडल

पेरिस (एजेंसी)। पेरिस ओलिंपिक में बुधवार को भारत को तीसरा मेडल मिला। 50 मीटर राइफल थ्री पोजिशन की मेंस कैटेगरी में शूटर स्वप्निल कुसाले ने ब्रॉन्ज मेडल जीता। स्वप्निल ने कुल 451.4 अंक हासिल किए। खास बात यह है कि इस बार के ओलिंपिक में अब तक तीनों मेडल शूटिंग इवेंट्स में ही मिले हैं।

स्वप्निल कुसाले 2015 में कुवैत में हुई एशियन शूटिंग चैंपियनशिप में 50 मीटर राइफल प्रोन 3 इवेंट में गोल्ड मेडल जीत चुके हैं। उन्होंने 59वें नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप में गगन नारंग और चेन सिंह जैसे शूटर्स को हरा चुके हैं। मेडल जीतने के बाद स्वप्निल ने कहा, मुझे काफी खुशी हो रही है कि मैं देश के लिए मेडल जीता। फाइनल के दौरान काफी नर्वस था, धड़कने तेज हो गई थीं। स्वप्निल कुसाले 2015 में कुवैत में हुई एशियन शूटिंग चैंपियनशिप में 50 मीटर राइफल प्रोन 3 इवेंट में गोल्ड मेडल जीता था। इसके अलावा वे तुगलकाबाद में 59वें नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप में गगन नारंग और चेन सिंह जैसे बड़े शूटरों को हराकर जीत हासिल कर चुके हैं। स्वप्निल महाराष्ट्र के पुणे में जन्मे। 28 साल के स्वप्निल 2012 से इंटरनेशनल शूटिंग इवेंट्स में हिस्सा ले रहे हैं। ओलिंपिक में पहली 2024 में डेब्यू किया है। पहले ही ओलिंपिक में स्वप्निल ने ब्रॉन्ज मेडल जीता है। स्वप्निल के रोल मॉडल एमएस धोनी हैं। धोनी की तरह स्वप्निल भी सेंट्रल रेलवे में टिकट कलेक्टर का काम करते हैं।

'चाचा' ने फिर बढ़ाया बिहार का राजनीतिक तापमान

पशुपति कुमार पारस ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर रखी अपनी बात

2025 में भतीजे को नुकसान, बीजेपी करेगी डैमेज कंट्रोल

वैशाली (एजेंसी)। जाहिर है आगामी विधान सभा अपने दम पर लड़ने की चुनौती देकर राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के अध्यक्ष पशुपति कुमार पारस ने बिहार में चल रहे गठबंधन की लड़ाई की दिशा में एक और दरवाजा खोल दिया है। अब यह बात भविष्य के गर्भ में है कि आखिर आरएलजेपी को राजनीतिक संजीवनी कौन देता है। वफादारी के आवरण में आरएलजेपी के अध्यक्ष पशुपति पारस ने विद्रोह का बिगुल यह कहते हुए फूंक दिया कि मेरे साथ धोखा हुआ है। लोकसभा चुनाव में एनडीए ने आरएलजेपी के साथ नाइंसाफी की। फिर भी हम भाजपा के अध्यक्ष जेपी नड्डा पर विश्वास करते रहे। लेकिन अब समय आ गया है यह जानने कि एनडीए गठबंधन में मेरी पार्टी कहां है। आरएलजेपी के अध्यक्ष कितने घाव लिए बैठे हैं कि उन्होंने साफ कहा कि 243 सीटों पर लड़ने की तैयार कर बैठा हूं। अब यह एनडीए के रणनीतिकार तय करें कि मेरी राजनीतिक हिस्सेदारी क्या है। विधानसभा चुनाव में नाइंसाफी बर्दाश्त नहीं करेंगे।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38.5 °c
न्यूनतम 33°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शुक्रवार,02 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

13 अगस्त को उज्जैन में एमपी कांग्रेस का प्रदर्शन

महाकाल लोक, जमीन माफिया, कानून व्यवस्था पर सरकार को घेरेंगे सभी दिग्गज

भोपाल (नप्र)। विधानसभा के बजट सत्र में जल जीवन मिशन, नर्सिंग घोटाले, नीट एग्जाम फर्जीवाड़े जैसे मुद्दों पर सरकार को घेरने के बाद अब कांग्रेस 13 अगस्त को सीएम के गृह जिले में बड़ा प्रदर्शन करने जा रही है। उज्जैन में एमपी कांग्रेस के सभी नेता जुटेंगे और तमाम मुद्दों पर सरकार को घेरेंगे।

उज्जैन के कांग्रेसियों के साथ पटवारी ने की मीटिंग- पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने उज्जैन जिले के कांग्रेस नेताओं के साथ बैठक की। इस बैठक में उज्जैन के कांग्रेस विधायक, हारे हुए विधानसभा प्रत्याशी, जिला अध्यक्ष, ब्लॉक अध्यक्षों के साथ मंदसौर और उज्जैन के हारे हुए लोकसभा प्रत्याशी दिलीप सिंह गुर्जर और महेश परमार भी मौजूद थे।

पटवारी ने कांग्रेस नेताओं से हार के कारणों और संगठन में कमजोरी की वजह पूछी। कांग्रेस नेताओं ने पटवारी को बताया कि मुख्यमंत्री का गृह जिला होने के बाद भी अधिकारी बेलगाम हैं। क्षिप्रा नदी में सीवेज का गंदा पानी मिल रहा है। कानून व्यवस्था चौपट है।कांग्रेस पदाधिकारियों से चर्चा के बाद पटवारी ने कहा

कि अगस्त के महीने में उज्जैन में प्रशासन के खिलाफ हल्लाबोल धरना प्रदर्शन किया जाएगा।

सीएम के गृह जिले से विरोध प्रदर्शन के पीछे की वजह- सूत्र बताते हैं कि एमपी में विधानसभा और लोकसभा चुनावों में हार और कई सीनियर नेताओं के पार्टी छोड़ने की वजह से निचले स्तर पर कार्यकर्ताओं का मनोबल गिरा है। ऐसे में कांग्रेस सीएम के गृह जिले से विरोध प्रदर्शन की शुरुआत कर सरकार के खिलाफ मुखरता से लड़ाई लड़ने का संदेश देना चाहती है।

सभी दिग्गज किए जाएंगे आमंत्रित

उज्जैन में होने वाले विरोध प्रदर्शन में कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी भंवर जितेंद्र सिंह, पूर्व सीएम कमलनाथ, दिग्विजय सिंह, पीसीसी चीफ जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार, अरुण यादव, अजय सिंह राहुल सहित तमाम दिग्गजों को आमंत्रित किया जाएगा।

स्थानीय मुद्दों पर जिलों में होगा प्रदर्शन

उज्जैन के बाद एमपी के दूसरे बड़े शहरों और जिलों में भी कांग्रेस शक्ति प्रदर्शन करेगी। इन विरोध-प्रदर्शन में स्थानीय मुद्दों, बीजेपी विधायक, सांसदों, मंत्रियों के भ्रष्टाचार, उत्पीड़न, हत्याओं, खनिज, रेत, जमीन माफिया के मामले उठाए जाएंगे।

पापी लघुकथा को सम्मान

लखीमपुर खीरी । लखीमपुर खीरी अखिल भारतीय कथादेश लघुकथा प्रतियोगिता में नगर के साहित्यकार सुरेश सौरभ की लघुकथा पापी को सम्मान के चयनित किया गया है। पूरे देश की लघु कथाकारों में सुरेश सौरभ की लघुकथा को आठवां स्थान सम्मान के लिए मिला है विदित हो सुरेश सौरभ की एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिसमें नोटबंदी तालाबंदी, मन का फेर, गुलाबी गलियां, 100 कवि, 51 कवि, काव्य मंजरी, उपन्यास एक कवयित्री की प्रेम कथा आदि प्रमुख हैं। इस सम्मान के लिए डॉ. द्वारिका प्रसाद रस्तोगी, रमाकांत चौधरी, श्याम किशोर बेचैन, चंदन लाल, अशोक निगम,विकास सहाय आदि ने सौरभ को बधाई दी है।

अब भारत में लगेगा सैटेलाइट नेटवर्क मिली मंजूरी

मोदी सरकार ने लिया बड़ा फैसला, डीटीएच कंपनियों को होगा ज्यादा फायदा

नई दिल्ली (एजेंसी)। डायरेक्ट-टू-होम (डीटीएच) का इस्तेमाल करने वाले यूजर्स के लिए खुशखबरी है। क्योंकि सरकार की तरफ से एक फैसला लिया गया है और इससे डीटीएच प्रोवाइड करने वाली कंपनियों को काफी फायदा होने वाला है। दरअसल नई पॉलिसी में कंपनियों को इजाजत दी जाती है कि फॉरेन सैटेलाइट ऑपरेटर्स भी

भारत में लोकल यूनिट लगा सकते हैं। अप्रैल 2025 से कंपनियों को इजाजत दी जाती है कि वह चाहें तो भारत में नया सेटअप कर सकती हैं। ये फैसला आने के बाद कोई भी फॉरेन कंपनी आसानी से भारत में अपना सेटअप कर सकती है। साथ ही अब भारतीय सैटेलाइट यूजर्स इसका इस्तेमाल कर पाएंगे। इसमें जियो, एयरटेल जैसी कंपनियों को भी फायदा हो सकता है। क्योंकि ऐसा होने के बाद उन्हें भी सस्ते में सैटेलाइट नेटवर्क प्राप्त करना आसान हो जाएगा। अभी तक डीटीएच के लिए सैटेलाइट का इस्तेमाल करने के लिए कंपनियों को यूएसडी में पेमेंट करनी होती है। लेकिन भारत में कंपनियों को इसकी इजाजत मिलने के बाद वह आईएनआर में पेमेंट कर सकती हैं। इसको लेकर भी सरकार फॉरेन कंपनियों के साथ डील साइन कर रही है। अगर ऐसा होता है कि कंपनियों के लिए मनी एक्सचेंज रेट समेत कई अन्य टैक्स से बचा जा सकता है।

दूसरी पत्नी को पेंशन पर अब आ गया 'सुप्रीम' फैसला

सर्वोच्च अदालत ने किया 'स्पेशल पावर' का इस्तेमाल

23 साल की कानूनी लड़ाई के बाद महिला को मिली राहत

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने एक अनोखे मामले में दूसरी पत्नी को पेंशन देने का फैसला सुनाया है। मामला इसलिए भी खास है क्योंकि सुप्रीम कोर्ट पहले ही कई

बार कह चुका है कि पहली शादी के रहते हुए दूसरी शादी करना गैरकानूनी है। जस्टिस संजीव खन्ना, संजय कुमार और आर. महादेवन की बेंच ने संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत अपने विशेष अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए यह फैसला सुनाया। मामला साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के एक कर्मचारी से जुड़ा है। कर्मचारी की मौत के बाद उसकी दूसरी पत्नी ने पेंशन के लिए अर्जी दी थी, जिसे कंपनी ने यह कहते हुए खारिज कर दिया कि यह शादी गैरकानूनी थी। महिला ने इसके बाद कोर्ट का दरवाजा खटखटाया और लगभग 23 साल तक कानूनी लड़ाई लड़ी। सर्वोच्च अदालत ने अपने आदेश में कहा कि महिला की पत्नी के रूप में स्थिति पर कोई विवाद नहीं है, सिवाय इसके कि उसने उस व्यक्ति से तब शादी की थी जब उसकी पहली पत्नी जीवित थी। कोर्ट ने यह भी कहा कि तीनों एक साथ रहते थे। कोर्ट ने मामले के तथ्यों को बहुत ही असामान्य बताते हुए अपने स्पेशल पावर का इस्तेमाल करते हुए महिला को राहत दी।

जम्मू-कश्मीर के सांबा में पाकिस्तानी घुसपैठिया ढेर

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के सांबा जिले में भारत-पाक बॉर्डर पर बीएसएफ के जवानों ने एक पाकिस्तानी घुसपैठिए को मार गिराया है। बीएसएफ के आईजी डीके बूरा ने गुरुवार को बताया कि घुसपैठिए को बुधवार रात करीब 10 बजे खोरा पोस्ट के पास भारतीय इलाके में घुसते देखा गया। बीएसएफ जवानों

की चेतावनी के बाद भी घुसपैठिया नहीं रुका, जिसके बाद फायरिंग में वह मारा गया। सुरक्षा अधिकारी ने कहा कि घुसपैठिया भारत-पाक सीमा की जीरो लाइन पार कर रहा था जो बॉर्डर प्रोटोकॉल का उल्लंघन था। घटना को पाकिस्तान की ओर से उकसाने की कोशिश की तरह देखा जा रहा है। घुसपैठिए की पहचान और मकसद का पता नहीं चल पाया है। अधिकारियों ने जांच शुरू कर दी है।

कांग्रेस की ममता से नजदीकियों पर 'अधीर' हो रहे रंजन चौधरी

खोया आपा,आलाकमान पर बरसे, कहा-हमें तोड़ रही टीएमसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की बहरामपुर लोकसभा सीट से बुरी तरह हारने के बाद कांग्रेस के कद्दावर नेता अधीर रंजन चौधरी ने पार्टी आलाकमान से उखड़े हुए हैं। वो 2024 में बहरामपुर सीट से जीत का छक्का लगाने से चूक गए। उन्हें पहली बार राजनीति में किस्मत आजमा रहे पूर्व भारतीय क्रिकेटर और टीएमसी उम्मीदवार युसूफ पठान ने 74 हजार वोटों के भारी अंतर से मात दी। चुनाव में मिली करारी हार के बाद

अधीर रंजन ने पीसीसी पद से इस्तीफा दे दिया था। अधीर रंजन ने अब बंगाल कांग्रेस इकाई का टीएमसी के प्रति नरम रुख अपनाने पर कड़ा विरोध जताते हुए आरोप लगाया कि टीएमसी कांग्रेस पार्टी को तोड़ रही है। हमारे कार्यकर्ताओं को हर दिन पीटा जा रहा है। अधीर रंजन चौधरी ने अपनी ही पार्टी कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व पर सवाल उठा दिए हैं।

- पार्टी कार्यकर्ताओं को भी टीएमसी नहीं पसंद

अधीर रंजन चौधरी ने आरोप लगाया कि सिर्फ मैं और गिने-चुने पार्टी के नेता ही नहीं जमीनी स्तर पर पार्टी के कार्यकर्ता भी टीएमसी के साथ किसी भी तरह के गठजोड़ के खिलाफ हैं। अधीर ने कहा, आलाकमान को पश्चिम बंगाल में उन पार्टी कार्यकर्ताओं से बात करनी चाहिए जो पार्टी के झंडे को बनाए रखने के लिए रोजाना संघर्ष कर रहे हैं और सड़कों पर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। उनकी राय महत्वपूर्ण है और इसलिए उन्हें भी दिल्ली बुलाया जाना चाहिए।

साथी हाथ बढ़ना...

वायनाड की त्रासदी में अपनी सेना बनी सहारा

- इंसानी पुल बना बचा रही लोगों की जान,काबिलेतारीफ है जवानों का जज्बा

वायनाड (एजेंसी)। साथी हाथ बढ़ाना... एक अकेला थक जाएगा मिलकर बोझ उठाना। केरल के वायनाड में प्राकृतिक आपदा के सामने सेना के जवानों का जज्बा तारीफ के काबिल है। भूस्खलन के बाद केरल के वायनाड में बचाव अभियान जारी है। बारिश के बावजूद विपरीत परिस्थितियों में भी सेना के जवान बचाव कार्य जारी रखे हुए हैं।

सेना के जवानों पीड़ितों को बचाने के लिए एक मानव पुल बनाया। यहां तक कि उन्होंने बच्चों को गोद में उठाकर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया।

वायनाड में सेना के रेस्क्यू ऑपरेशन का एक वीडियो सामने आया है। जिसमें नजर आ रहा है कि कैसे जवानों ने हाथ पकड़कर इंसानी पुल बनाया। इस दौरान नदी तेज धारा के साथ बह रही है। सेना द्वारा मैदान के दोनों ओर रस्सियां लटकाकर लोगों को एक छोर से दूसरे छोर तक ले जाया जा रहा है।

इजरायल ने हमास का मिलिट्री चीफ किया ढेर

- दो दिन में मिली 2 गुड न्यूज, दुश्मन पर हावी हुआ यहूदी देश

तेलअवीव (एजेंसी)। हमास का मिलिट्री चीफ मोहम्मद दाइफ मारा गया। यह दावा गुरुवार, 1 अगस्त को इजराइली सेना ने किया। सेना ने बताया कि गाजा के खान यूनिस में 13 जुलाई को दाइफ को हवाई हमले में मार गिराया गया था। मोहम्मद दाइफ की मौत की खबर काफी समय से चर्चा में थी, लेकिन इजरायल ने पुष्टि अब की। रिपोर्ट्स के मुताबिक, हमास के जिन 3 बड़े नेताओं ने इजराइल पर हमले में बड़ी भूमिका निभाई थी, उनमें दाइफ भी शामिल था। बाकी 2 नेता हमास का पॉलिटिकल चीफ इस्माइल हानियेह, गाजा का चीफ याह्या सिनवार थे। इजराइल ने 7 बार दाइफ को मारने की कोशिश की थी, हालांकि उसे सफलता नहीं मिल पाई थी। उसके बार-बार बचने की वजह से उस पर कहावत 9 जिंदगी पाने वाली बिल्ली सटीक बैठती थी। हमास के 3 बड़े नेताओं में से मोहम्मद दाइफ और इस्माइल हानियेह की मौत हो चुकी है। याह्या सिनवार ही सबसे बड़ा नेता बचा है।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि केस में मुस्लिम पक्ष को तगड़ा झटका

हाईकोर्ट हिंदू पक्ष की 18 याचिकाएं एक साथ सुनेगा, दावा-ईदगाह गर्भगृह की जमीन पर

प्रयागराज/मथुरा (एजेंसी)। मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह विवाद मामले में हाईकोर्ट ने मुस्लिम पक्ष की याचिका खारिज कर दी। गुरुवार को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने यह फैसला सुनाया। हाईकोर्ट ने कहा कि हिंदू पक्ष की ओर से दायर 18 याचिकाएं एक साथ सुनी जाएंगी। जस्टिस मयंक कुमार जैन की सिंगल बेंच ने यह फैसला

सुनाया। हिंदू पक्ष की ओर से यह दावा करते हुए याचिकाएं डाली गईं थी कि शाही ईदगाह का ढाई एकड़ का एरिया मस्जिद नहीं है। वह भगवान कृष्ण का गर्भगृह है। वहीं, मुस्लिम पक्ष ने दलील दी थी कि 1968 में हुए समझौते के तहत मस्जिद के लिए जगह दी गई थी। 60 साल बाद समझौते को गलत बताना ठीक नहीं। हिंदू पक्ष की याचिकाएं सुनवाई लायक नहीं है। हालांकि, हाईकोर्ट ने दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद मुस्लिम पक्ष की इस दलील को स्वीकार नहीं किया। अब हिंदू पक्ष की 18 याचिकाओं की एक साथ सुनवाई होगी।

भारत के आसमान में गरजेंगे 30 देशों के लड़ाकू विमान

तरंग शक्ति 2024 में दिखाएंगे अपना जौहर, मेजबान बनेगा अपना देश

भारतीय सैन्य ताकत का दिखेगा दमखम,दहाड़ेंगे राफेल,तेजस और मिराज

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगस्त और सितंबर महीने में भारत तरंग शक्ति -2024 का आयोजन करने जा रहा है। इस आयोजन में दुनियाभर के 30 देश अपने सबसे शक्तिशाली फाइटर जेट्स की कलाबाजी दिखाएंगे। दुनिया के इस सबसे भव्य आयोजन में भारत भी अपनी सैन्य दमखम का प्रदर्शन करने वाला है। वायुसेना के अधिकारियों ने जानकारी दी है कि 51 देशों को आमंत्रण भेजा गया, जिसमें से 30 हिस्सा ले रहे हैं। इस महा हवाई अभ्यास में वायुसेना के एलसीए तेजस, मिराज 2000 से लेकर राफेल लड़ाकू विमान हिस्सा ले रहे हैं। आईएएफ अधिकारियों के मुताबिक, हिस्सा लेने वाले देशों में अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, ग्रीस, संयुक्त अरब अमीरात, सिंगापुर और बांग्लादेश शामिल हैं। इसमें 10 देशों की वायु सेना और 20 देश पर्यवेक्षक के रूप में हिस्सा ले रहे हैं। वहीं, भारत के दो प्रमुख रक्षा साझेदार रूस और इज़रायल भाग नहीं ले रहे हैं। इसकी वजह युद्ध में व्यस्त होना बताया गया है।

वायुसेना के उपप्रमुख (वायस चीफ ऑफ एयर स्टाफ) एयर मार्शल एपी सिंह ने कहा कि यह अभ्यास भारत के सैन्य दमखम को प्रदर्शित करेगा और रक्षा क्षेत्र में उसे 'आत्मनिर्भरता' की ओर ले जाएगा। देश में 'तरंग शक्ति' नामक दुनिया का सबसे बड़ा बहुपक्षीय हवाई अभ्यास दो चरणों में आयोजित किया जाएगा। वायुसेना के एक वरिष्ठ अधिकारी बताया कि अभ्यास का पहला चरण 6 से 14 अगस्त तक तमिलनाडु के सुलूर हवाई अड्डे पर आयोजित किया जाना है।

कोटा के अंदर कोटा को सुप्रीम कोर्ट ने दी मंजूरी

- 19 साल पुराना अपना ही फैसला पलटा, कहा-राज्य आरक्षण में सब कैटेगरी बना सकते हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को कोटा के अंदर कोटा केस में बड़ा फैसला सुनाया है। भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली सात जजों की संविधान पीठ ने 6-1 के बहुमत से फैसला सुनाते हुए कहा कि पिछड़े वर्गों में हाशिए पर जा चुके लोगों के लिए अलग से कोटा देने के लिए अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों का उप-वर्गीकरण करना जायज है। सिर्फ जस्टिस बेला त्रिवेदी ने इस पर असहमति जताई है। इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने ईवी चिन्नैया मामले में 2004 के फैसले को पलट दिया जिसमें कहा गया था कि उप-वर्गीकरण की अनुमति नहीं है क्योंकि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति सजातीय वर्ग बनाते हैं। सब कैटेगरी पर निर्णय की न्यायिक समीक्षा की जा सकती है। साथ ही राज्यों को पिछड़ेपन की सीमा के बारे में तय किए गए आधार पर निर्णय सुनाया।

महाराष्ट्र में महज 55-65 सीटें ही जीत सकती है भाजपा !

आंतरिक सर्वे बढ़ा रहे पार्टी की चिंता,उद्धव भी दे रहे हैं चुनौती

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव की तैयारियां जारी हैं। इसी बीच अटकलें हैं कि भारतीय जनता पार्टी को राज्य में बड़े नुकसान की चिंता सता रही है। इसे लेकर आधिकारिक तौर पर कुछ नहीं कहा गया है। हाल ही में संपन्न हुए लोकसभा

चुनाव में भी भाजपा की सीटों में गिरावट दर्ज की गई थी। इसके अलावा कयास ये भी लगाए जा रहे हैं कि आरएसएस यानी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भाजपा के साथ अजित पवार के गठबंधन से कुछ नहीं है। खबरें हैं कि मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को भाजपा की मदद से सत्ता में लौटने का भरोसा है। जबकि, रिपोर्ट के अनुसार, भाजपा अपने प्रदर्शन को लेकर चिंतित नजर आ रही है। रिपोर्ट के मुताबिक, भाजपा की तरफ से कराए गए आंतरिक सर्वे संकेत दे रेह हैं कि पार्टी 288 विधानसभा सीटों में से सिर्फ 55 से 65 सीटों पर जीत हासिल कर सकती है। जबकि, 2014 में आंकड़ा 122 और 2019 में 105 विधायक थे।

इंदौर में तीन दिनों में डेंगू के 25 मरीज

मूसाखेड़ी, बाणगंगा में भी मिले ; लोगों से अपील घरों और परिसरों में गंदगी न होने दें

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में तीन दिनों में डेंगू के 25 मरीज मिले हैं। इनमें भंवरकुआ, भोलाराम, टॉवर चौराहा क्षेत्र में 8 मरीज पाए गए हैं। इसके अलावा मूसाखेड़ी, बाणगंगा, विजय नगर सहित अन्य क्षेत्रों में पाए गए हैं। इससे अब चिंता बढ़ने लगी है। हालांकि ये सभी मरीज ठीक हैं। दरअसल बारिश के मौसम में घरों, परिसरों और आसपास पानी का भराव, गंदगी के कारण डेंगू के मच्छर पनप रहे हैं। मलेरिया विभाग द्वारा जिन इलाकों में मरीज निकल रहे हैं उन क्षेत्रों में सैंपल लेकर लार्वा नष्ट किया जा रहा है। 25 जुलाई को डेंगू के 7 मरीज मिले थे। इसके 28 जुलाई तक स्थिति सामान्य थी। इसके बाद 29 जुलाई को 8, 30 जुलाई को 9 और 31 जुलाई

भंवरकुआ, भोलाराम, टॉवर चौराहा क्षेत्र में 8 मरीज

को 8 मरीज पाए गए। इस तरह कुल 25 मरीज पाए गए हैं।

गंदे पानी के जमाव से होता है डेंगू

जिला मलेरिया अधिकारी दौलत पटेल बताया कि डेंगू एडीज इजिप्टी (मादा मच्छर) के काटने से फैलता है। यह बुखार मच्छरों द्वारा फैलाई जाने वाली बीमारी है। यह स्थिति तब बनती है घरों में या आसपास एक ही स्थान पर बहुत दिनों से पानी जमा हो। जैसे कूलर, वॉश एरिया, सिंक, गमलों आदि भी कई बार पानी जमा रहता है जो डेंगू का कारक बनता है।

* एडीज मच्छर पानी जमाव होने की स्थिति में सक्रिय हो जाते हैं। इन मच्छरों की प्रकृति यह है कि ये दिन में ही काटते हैं।
* फिर कुछ समय बाद इसकी चपेट में आए लोगों को तेज बुखार, शरीर पर लाल चकते पड़ना, सिर, हाथ-पैर और बदन में तेज दर्द, भूख न लगना, उल्टी-दस्त, गले में खराश, पेट में दर्द और लीवर में सूजन आदि लक्षण दिखते हैं।
* ऐसे में संबंधित व्यक्ति को तुरंत डॉक्टरों को दिखाना चाहिए। इसके बाद ब्लड टेस्ट में इसकी जांच होती है जिसमें पुष्टि होती है कि उसे डेंगू है या दूसरी बीमारी।

इंदौर एमजीएम मेडिकल कॉलेज के डीन को हाईकोर्ट का नोटिस

पूछा- ऑर्डर के 2 महीने बाद भी छात्रा को उसके कागजात क्यों नहीं लौटाए

इन्दौर (एजेंसी)। इंदौर हाई कोर्ट ने सरकारी एमजीएम मेडिकल कॉलेज डीन डॉ. संजय दीक्षित को नोटिस जारी किया हैं। कोर्ट ने सीट खाली करने वाली छात्रा को बिना रुपए लिए कागजात लौटने के ऑर्डर दिए थे। 2 महीने बाद भी एमजीएम मैनेजमेंट ने कागजात वापस नहीं किए। बता दें कि छात्रा से पहले कागजात लौटाने के नाम पर 30 लाख रुपए मांगे गए थे जिसे कोर्ट ने गलत ठहराया था।

ऑर्डर के बावजूद बगैर रुपए लिए जब छात्रा को कागजात नहीं मिले तो अवमानना याचिका लगाई थी। गुरुवार को मामले में सुनवाई हुई, जिसके बाद डीन डॉ. दीक्षित को नोटिस जारी कर दिया गया है। अगली तारीख 17 सितंबर लगी है। वकील आदित्य संघी ने बताया एमजीएम मेडिकल कॉलेज प्रबंधन ने छात्रा से भोपाल से डायरेक्शन लेने की बात कही थी। दो महीने हो गए अभी तक कुछ नहीं हुआ। प्री पीजी को

काउंसलिंग होना है। ऐसे में छात्रा उसमें शामिल नहीं हो पाएगी।

यह है मामला

हाईकोर्ट में छात्रा के वकील आदित्य संघी ने बताया छात्रा वर्तमान में मध्य प्रदेश सरकार के स्वास्थ्य विभाग में नरसिंहपुर जिले में मेडिकल ऑफिसर के पद पर है। वह रूब रेडियोथैरेपी भी करना चाहती थी इसके लिए उसे सरकारी स्वरू कॉलेज इंदौर आवंटित हुआ था। उसे एडमिशन लिया और मप्र सरकार का कर्मचारी होने के नाते उससे पढ़ाई के लिए एनओसी (अनापत्ति प्रमाण पत्र) मांगा। मप्र सरकार ने आवेदन के दो साल बाद भी एनओसी नहीं दी। इस बीच ही जिस कोर्स के लिए एडमिशन मिला था, वह पूरा हो गया। यानी वह पढ़ ही नहीं पाई। ऐसी परिस्थिति में छात्रा जिम्मेदार नहीं मानी जा सकती। याचिकाकर्ता डॉ.अदिति के वकील आदित्य संघी की दलीलें सुनने के बाद न्यायमूर्ति सुश्रुत अरविंद धर्माधिकारी की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने डॉ. अदिति को अंतरिम राहत दी है। 30 मई 2024 को एमजीएम मेडिकल को निर्देश दिया कि कॉलेज को 30 लाख रुपए के बिना मूल दस्तावेज लौटाने होंगे। साथ ही पीएस मेडिकल एजुकेशन भोपाल, नेशनल मेडिकल कमीशन, कमिश्नर हेल्थ, डायरेक्टर मेडिकल एजुकेशन, भोपाल, डीन, एमजीएम मेडिकल कॉलेज को 4 सप्ताह के भीतर जवाब दाखिल करने का नोटिस भी जारी किया गया। हाई कोर्ट ने छात्रा की ओर से दिए तर्क से सहमत होते हुए 30 मई को पक्ष में फैसला दिया। एमजीएम कॉलेज इंदौर से कहा कि वह छात्रा से बिना 30 लाख रुपए जमा कराए ही उसे अपने ओरिजिनल दस्तावेज वापस करे।

इंदौर के रीयल एस्टेट सेक्टर में गोदरेज की एंट्री

उज्जैन रोड पर 200 करोड़ रुपए की 46 एकड़ जमीन खरीदी

इंदौर (एजेंसी)। गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड ने इंदौर में एंट्री लेने की औपचारिक घोषणा कर दी है। शहर में तेजी से बढ़ते रियल एस्टेट सेक्टर में अब पहले बड़े कॉर्पोरेट घराने के रुप में गोदरेज की एंट्री हो गई है। कंपनी की ओर से मुंबई में जारी त्रैमासिक वित्तीय परिणाम की घोषणा के साथ ही इंदौर में प्रोजेक्ट लाने का भी एलान किया गया है। इंदौर-उज्जैन रोड पर गोदरेज आवासीय प्लॉटिंग प्रोजेक्ट लाने जा रहा है। सीनियर रजिस्ट्रार दीपक कुमार शर्मा के मुताबिक इस जमीन की दो रजिस्ट्री हुई है। इससे 5.25 करोड़ का राजस्व मिला है। बीएसई में रजिस्टर्ड गोदरेज प्रॉपर्टीज ने इंदौर-उज्जैन रोड पर 46 एकड़ जमीन पर क्षेत्र का अपना पहला प्रोजेक्ट लाने की तैयारी की है। सूत्रों के अनुसार सीधे किसान से जमीन खरीदी गई है।

सौदा करीब 200 करोड़ रुपये में हुआ है। गोदरेज ने पुणे, बेंगलुरु के बाद टीयर टू सिटी के रूप में इंदौर को चुना है। मप्र में किसी कॉर्पोरेट घराने का यह पहला प्लॉटिंग प्रोजेक्ट होगा।

बता दें कि इससे पहले इंदौर क्षेत्र में रेमंड भी अपने रियल एस्टेट प्रोजेक्ट के लिए बीते साल इंदौर का दौरा कर चुकी है। हालांकि उस समूह की ओर से किसी तरह की डील होने की अभी सूचना नहीं है।

इंदौर में नाबालिग को संतान माना, मां को पत्नी नहीं

महिला ने कोर्ट के फैसले को दी चुनौती; सुप्रीम कोर्ट से की शिकायत

इंदौर (एजेंसी)। यह कैसा कानून है? जिसे मेरे बेटे का पिता माना, उसे मेरा पति नहीं मान रहे हैं। मंदिर में हुई शादी के पक्ष में गवाही भी कराई, लेकिन सबकुछ खारिज कर दिया गया। मुझे और मेरे बेटे को इंसाफ दिलाइए। इंदौर के फैमिली कोर्ट के ऑर्डर को चुनौती देते हुए 40 साल की एक महिला ने ऐसी चिट्ठी 31 जुलाई को राष्ट्रपति, सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायधीश और महिला आयोग को भेजी है। इसमें दावा किया है कि फैमिली कोर्ट ने उसके नाबालिग बेटे को पति से भरण-पोषण दिलाया, लेकिन उसे पत्नी नहीं माना। यदि वो मेरा बेटा नहीं तो डीएनए जांच कराइए, दूध का दूध, पानी-का पानी हो जाएगा।

यह है मामला

महिला और नाबालिग बेटे ने 2018 में इंदौर के एक कांट्रैक्टर के खिलाफ फैमिली कोर्ट में केस किया था। भरण पोषण मांगा। महिला ने दावा किया था कि यह उसकी दूसरी

शादी है, जो 2009 में हनुमान मंदिर में की थी। इनसे एक बेटा भी है और 6 महीने पहले कांट्रैक्टर ने मुझे छोड़ दिया। महिला ने खुद के लिए 1 लाख और बेटे के लिए 50 हजार रुपए महीना भरण पोषण के दिलाने की मांग की। जवाब में कांट्रैक्टर ने पत्नी और बेटे को अपना मानने से मना कर दिया। कहा कि मैं पहले से शादीशुदा हूं। संतान भी है। आरोप लगाया कि महिला ने पहले पति के साथ मिलकर मुझे ब्लैकमेल किया है। न मैं इसका पति हूं, न इससे कोई बेटा हुआ है। 2019 में कोर्ट ने बेटे को अंतरिम राहत दी। जन्म प्रमाण पत्र और स्कूल मार्कशीट के आधार पर उसे कांट्रैक्टर का ही बेटे माना। उसके लिए 3500 रुपए महीना देने के आदेश दिए। हालांकि, महिला पहले पति से तलाक और कांट्रैक्टर से दूसरी शादी के दस्तावेज पेश नहीं कर पाई। 29 जुलाई 2024 को कोर्ट ने विस्तृत आदेश जारी कर दिया कि महिला के पक्ष में पर्याप्त सबूत नहीं है। उसका भरण-पोषण का दावा खारिज कर दिया। हालांकि, नाबालिग को कांट्रैक्टर की संतान मानकर भरण पोषण 3500 रुपए महीने से बढ़ाकर 5 हजार कर दिया। अब महिला ने इसी ऑर्डर को चुनौती दी है।

शिकायत में महिला ने ये लिखा...

मेरा और कांट्रैक्टर पति का 2018 से फैमिली कोर्ट इंदौर में केस चल रहा था। जजमेंट 29 जुलाई 2024 को हुआ है, जिससे मैं संतुष्ट नहीं हूं। मेरे साथ व मेरे बेटे (13) के साथ अन्याय हो रहा है। मेरे पति पहले से शादीशुदा थे, यह बात उन्होंने छिपाई। मेरी पहली शादी में राजी-मर्जी से तलाक हुआ। इसके कागजात थे, जो दूसरे पति ने जला दिए। मोबाइल से फोटो भी हटवा दिए। जो शादी के गवाह थे, उनकी मौत हो चुकी है। अब दूसरी शादी की एकमात्र गवाह मेरी सहेली है। बाकी मेरी डिलीवरी के कागज, बच्चे का जन्म प्रमाण पत्र, मेरा व बच्चे का आधार कार्ड, मेरा वोटिंग कार्ड, बच्चे के स्कूल का आईडी कार्ड, बच्चे की पुरानी मार्कशीट, बच्चे की गवाही, मेरे मकान मालिक जहां हम रहते थे, उनकी गवाही, शपथ पत्र को झूठा बताकर खारिज कर दिया है। मेरे बच्चे के पिता कांट्रैक्टर ही हैं, जिनके साथ 2009 से 2018 तक रही हूं। फिर भी मेरे साथ न्याय नहीं हुआ है। मेरा केस रि-ओपन किया जाए। उसकी जांच बैठाई जाए।

10 इंच में सिमट गया जुलाई माह

अब अगस्त माह में अच्छी बारिश की उम्मीद; बादल छाए थे, कहीं-कहीं बूंदाबांदी भी हुई

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में जुलाई माह इस बार 10 इंच की बारिश में सिमट गया जबकि करीब ढाई इंच की और जरूरत थी। अब तक इस सीजन में 14 इंच बारिश हो चुकी है। गुरुवार से अगस्त माह शुरू हो गया। इस माह औसत 10 इंच बारिश होती है। गुरुवार सुबह से बादल छाए हुए थे और कहीं-कहीं बूंदाबांदी का दौर जारी था। मौसम वैज्ञानिकों ने अगस्त के पहले हफ्ते में प्रदेश में अच्छी बारिश के आसार जताए हैं। इंदौर में दो दिन बूंदाबांदी और रिमझिम की उम्मीद है। इस बार 28 जुलाई को आखिरी बार ढाई इंच बारिश हुई थी। इसके बाद माह के आखिरी तीन दिन सिर्फ 6 मिमी बारिश हुई। इस तरह जुलाई में 10 इंच ही बारिश हुई जबकि जून मे 4 इंच बारिश हुई थी। अब बारिश के सीजन के सिर्फ दो माह ही बाकी हैं। इंदौर में बारिश का ट्रेण्ड यह है कि सीजन के कोटे की आधी बारिश जुलाई-अगस्त से होती है। ये दोनों माह इंदौर को तर करके रहे हैं। अगस्त में बारिश का औसत कोटा 10 इंच का है। अगस्त 2022 में यहां 9.5 इंच बारिश हुई थी जबकि पिछसे साल ढाई इंच बारिश हुई थी। हालांकि पिछले साल जुलाई में जोरदार बारिश हुई थी इसके चलते कोटा पूरा हो गया था।मौसम विभाग के अनुसा साइक्लोनिक सर्कुलेशन और मानसून ट्रफ लाइन की एक्टिविटी स्ट्रॉन्ग हो गई है। ऐसे में अगस्त के पहले सप्ताह में तेज बारिश का दौर चलेगा। जून-जुलाई में जो जिले बारिश के आंकड़ों में पिछड़ गए, वे आगे निकल जाएंगे।

पत्नी ने समझौता नहीं किया तो पति फंदे पर झूला

5 साल से बेटी के साथ मायके में रह रही थी पत्नी, पुलिस जांच में जुटी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के आजाद नगर में रहने वाले एक कैटरिंग कर्मचारी का शव गुरुवार सुबह उसके घर में फंदे पर लटका मिला। परिवार के लोगों ने उसे देखा तो लेकर एमवाय अस्पताल पहुंचे। यहां डॉक्टरों ने मौत की पुष्टि कर दी। परिवार के मुताबिक पत्नी ने भरण पोषण और तलाक को लेकर केस लगाया था। वह पत्नी से समझौता करना चाहता था। लेकिन पत्नी नहीं मान रही थी।आजाद नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक गोकुल (35) पुत्र राधेश्याम टटवाड़े निवासी शांति नगर ने अपने घर में फांसी लगाकर जान दे दी। सुबह परिवार जागा तो बेटे को फंदे पर लटके देखा। परिवार के मुताबिक गोकुल शादी पार्टी में कैटरिंग का काम करता था। उसकी 8 साल पहले शादी हो चुकी है। करीब 5 साल से पत्नी मंगला अपने मायके भोपाल में बेटी के साथ रह रही थी। उसने पति गोकुल पर केस लगाया था। कुछ समय पहले गोकुल ने पहल की थी कि वह अपनी पत्नी और बेटी के साथ रहना चाहता है। जिसमें समझौते को लेकर बात चल रही थी। लेकिन पत्नी समझौते को लेकर हां नहीं कर रही थी। इसी बात को लेकर गोकुल डिप्रेशन में था। पुलिस मामले में जांच कर रही है।

बेसमेंट में कोचिंग नहीं केवल पार्किंग होगी

इंदौर (एजेंसी)। दिल्ली में बेसमेंट में हुई घटना के बाद जिला प्रशासन द्वारा सुरक्षा के मद्देनजर सख्त कार्रवाई की रही है। दो दिनों में कोचिंग सेंटरों सहित 34 से ज्यादा संस्थानों पर सुरक्षा प्रबंध सहित कई खामियों के कारण सील करने की कार्रवाई की गई है। कलेक्टर आशीष सिंह ने चेतावनी दी है कि अब बेसमेंट का उपयोग सिर्फ पार्किंग के लिए होगा। इसके लिए भवन संचालकों को एक माह का समय दिया जाएगा।कलेक्टर ने स्पष्ट किया कि अब शहर में बेसमेंट का उपयोग सिर्फ पार्किंग के लिए किया जा सकेगा। वहां अन्य गतिविधियां नहीं चलने दी जाएंगी। जहां भी बेसमेंट का पार्किंग के अलावा अन्य उपयोग पाया जाएगा वहां कार्रवाई की की जाएगी। उन्होंने चेतावनी दी है कि बेसमेंट में यदि अन्य उपयोग किया जा रहा हो तो वह एक माह में खुद ही हटा लें अन्यथा रिमूव्हल की कार्रवाई की जाएगी।

लव मैरिज के बाद पति मांगने लगा दहेज

दस माह पहले पत्नी को छोड़कर गांव तो लौटा नहीं, पुलिस के पास पहुंची पत्नी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के राऊ में एक महिला ने अपने पति के खिलाफ प्रताड़ना और मारपीट-धमकाने के मामले में केस दर्ज कराया है। महिला का आरोप है कि 4 साल पहले दोनों ने पहले कोर्ट मैरिज की। फिर परिवार की मर्जी से दूसरी बार शादी रचाई। राऊ पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक ज्योति अस्थाना निवासी नेहरु नगर की शिकायत पर उसके पति रितिक अस्थाना निवासी आगरा के खिलाफ 498-ए, 294,323 की धाराओं में केस दर्ज किया गया है। ज्योति ने बताया कि फरवरी 2020 में दोनों की जान पहचान हुई। 22 जून 2020 को दोनों ने कोर्ट में शादी कर ली। परिवार को बात पता चली तब रितिक के आगरा स्थित घर पर जाकर पारिवारिक रीति रिवाज से 10 दिसंबर 2020 में शादी रचा ली। शादी के बाद दोनों कुछ माह आगरा में रहे। इसके बाद इंदौर आकर नेहरू नगर में रहने लगे। यहां पर एक माह तक पति का व्यवहार ठीक था। इसके बाद छोटी-मोटी बातों को लेकर कहासुनी होने लगी। कई बार वह गुस्से में आकर हाथ भी उठाने लगा। कहता था तुम्हारे मायके वालों ने दहेज नहीं दिया।इसके बाद वह बाइक मांगने को लेकर प्रताड़ित करने लगा। यह बात माता-पिता भाई-बहन को बताई। सभी की समझाइश के बाद भी पति के व्यवहार में कोई सुधार नहीं आया। 10 नवंबर को पति जरूर काम का कहकर गांव चले गए। करीब 10 माह बीत गए, लेकिन वे लौटे नहीं। जानकारी निकाली तो पता चला कि पति रितिक का आगरा में किसी अन्य महिला से संबंध है। इसके बाद परिवार को लेकर राऊ थाने में शिकायत की है।

इंदौर से खजुराहो और उज्जैन की सीधी उड़ान बंद

फ्लायओला के अधिकारी बोले- अभी दो ही शहरों के लिए फ्लाइट

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर से खजुराहो के लिए पीएम श्री पर्यटन वायु सेवा के तहत पिछले हफ्ते शुरू हुई सीधी उड़ान अब बंद हो गई है। पीएम श्री पर्यटन वायु सेवा के तहत फ्लाइटों का संचालन करने वाली फ्लाय ओला ने इंदौर से अपनी अधिकांश फ्लाइट का संचालन बंद कर दिया है। इसका खुलासा हाल ही में जारी हुए नए शेड्यूल में हुआ है। पीएम श्री पर्यटन वायु सेवा के तहत फ्लाय ओला कंपनी अब सिर्फ इंदौर से जबलपुर और भोपाल के लिए ही फ्लाइट का संचालन कर रही है। वह भी सिर्फ हफ्ते में एक दिन सोमवार को। इंदौर से खजुराहो और उज्जैन के लिए संचालन बंद करने पर कंपनी के अधिकारियों का कहना है कि नए शेड्यूल के हिसाब से कंपनी की वेबसाइट पर बुकिंग ली जा रही है। वहीं जहां की बुकिंग वेबसाइट पर शो नहीं हो रही है वहां की फ्लाइट अभी बंद है। उज्जैन को लेकर अधिकारियों का कहना है कि उज्जैन बहुत ही छोटा है। इंदौर से उज्जैन में हमें काफी तकनीकी समस्या हो रही थी इसलिए अभी वहां की फ्लाइट बंद की है। संभवत- 15 अगस्त के बाद इंदौर से उज्जैन की फ्लाइट दोबारा शुरू हो सकती है।

इंदौर से सिर्फ एक दिन उड़ान

इंदौर से उड़ानों का संचालन कर रही फ्लाय ओला कंपनी की वेबसाइट और जारी अगस्त माह के शेड्यूल के अनुसार कंपनी इंदौर से सिर्फ सोमवार को उड़ान का संचालन करेगी। बाकी दिन इंदौर से कोई उड़ान का संचालन नहीं होगा। कंपनी इस उड़ान का संचालन नॉन शेड्यूल उड़ान (चार्टर्ड उड़ान) के रूप में कर रही है, जिसके लिए 6 सीटर विमान का उपयोग किया जा रहा था। वहीं एयरपोर्ट अधिकारियों ने बताया कि शुरुआत में इस सेवा का संचालन इंदौर से सप्ताह में चार दिन होता था।

4 जगह के लिए शुरू हुई थी उड़ान, अब 2 ही बची

पीएम श्री पर्यटन वायु सेवा के तहत फ्लायओला कंपनी ने शुरूआत में इंदौर से सीधी उड़ानें उज्जैन, भोपाल और जबलपुर के लिए शुरू की थी। वहीं पिछले हफ्ते खजुराही के लिए भी शुरू की थी। कुल मिलाकर इंदौर से कंपनी 4 शहरों के लिए उड़ान शुरू की थी। लेकिन अब यह दो जगहों भोपाल और जबलपुर के लिए ही बची है। दो अन्य शहरों उज्जैन और खजुराहो के लिए उड़ान बंद हो गई है।

15 अगस्त के बाद की बुकिंग बंद

फ्लाय ओला कंपनी ने अपनी वेबसाइट पर 1 से 15 अगस्त तक की उड़ानों की बुकिंग को खोलने के साथ ही एक नया संदेश प्रसारित करना भी शुरू किया है। जिसमें बताया जा रहा है कि 16 अगस्त और उसके बाद की उड़ानों की बुकिंग 12 अगस्त से खोली जाएगी। वहीं कंपनी ने बुकिंग पर 1 महीने तक डिस्काउंट को 35 प्रतिशत कर दिया है। शुरुआत में यह डिस्काउंट 50 प्रतिशत था।

15 अगस्त तक इंदौर से चलने वाली सभी उड़ानों की सीटें खाली

कंपनी अपनी उड़ानों का संचालन 6 सीटर विमान के साथ कर रही है। कंपनी की वेबसाइट के मुताबिक ही आज यानी 1 जुलाई से 15 अगस्त के बीच कंपनी इंदौर से भोपाल और जबलपुर के लिए 5 अगस्त और 15 अगस्त को एक-एक उड़ानों का संचालन करने वाली है, इन उड़ानों में सभी सीटें खाली हैं। यानी कंपनी को इंदौर से किसी भी मार्ग पर अभी तक यात्री नहीं मिल पाए हैं। एयरपोर्ट सूत्रों का कहना है कि कंपनी के 6 सीटर विमान इंदौर से अधिकांश समय खाली चल रहे है। इसके कारण अक्सर कंपनी अपनी उड़ानों को भी निरस्त कर रही है।

इंदौर में शुरु हुई संघ की 4 दिवसीय बैठक

संपर्क विभाग की आंतरिक बैठक में मंथन, सरकार्यवाह होसबोले भी आए

इंदौर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क विभाग की आंतरिक बैठक गुरुवार 1 अगस्त से शुरू हो चुकी है। यह बैठक इंदौर में चार अगस्त तक एमआर 10 स्थित प्राइवेट रिसोर्ट परिसर में चलेगी। चार दिवसीय बैठक में संपर्क विभाग के विभिन्न क्षेत्र और प्रांत के 180 पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं की मौजूदगी में अलग-अलग मुद्दों पर विचार मंथन होना है। बैठक के लिए संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले और सह कार्यवाह डॉ. कृष्णगोपाल भी आए हैं। संघ के 11 क्षेत्र और सभी प्रांत के संपर्क और सहसंपर्क प्रमुख के साथ ही राष्ट्रीय सहसंपर्क प्रमुख सुनील देशपांडे और रमेश पप्पाजी भी इसका हिस्सा हैं।

बरसों बाद इंदौर में हो रही है बैठक

हर वर्ष देश के किसी एक बड़े शहर में होने वाली यह बैठक इंदौर में लंबे समय बाद हो रही

है। इसमें चार दिनों में 24 से अधिक सत्र में संघ के अलग-अलग प्रांत और क्षेत्र के संपर्क और सहसंपर्क प्रमुख अपने सालभर के कामकाज का विवरण देना है। एक दिन वर्षभर के कार्यकाल की समीक्षा कर आने वाले वर्ष की कार्ययोजना फाइनल की जाएगी। साथ ही संघ के विभिन्न प्रकल्प के माध्यम से किए जा रहे सेवा और अन्य गतिविधियों को लेकर जन मानस के विचार भी वरिष्ठ नेतृत्व के सामने रखे जाने हैं।

पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन से रख रहे अपनी बात

इन चार दिनों में कई सत्र ऐसे भी होने हैं, जिनमें प्रतिनिधि पावर पाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से अपनी बात रख रहे हैं। संघ का संपर्क विभाग संघ और जनता के बीच संवाद की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। दशहरा पर नागपुर में होने वाले संघ प्रमुख के उद्बोधन के बाद इस उद्बोधन में शामिल मुद्दों पर संपर्क विभागीय समाज के अलग-अलग वर्ग के प्रतिनिधियों को एक फोरम पर लाकर संवाद करता है और उनकी राय संघ के शीर्ष नेतृत्व तक पहुंचाई जाती है।

संपादकीय

यूपीएससी ने अपनी लाज बचाई

प्रशिक्षु और कई फर्जीवाड़ों में फंसी महाराष्ट्र की आईएएस अधिकारी पूजा खेड़कर की नियुक्ति रद्द कर यूपीएससी (संघ लोक सेवा आयोग) ने अपनी ही लाज बचाई है। वरना जिस चालाकी और शातिर तरीके से यूपीएससी में खुद का चयन करवाया, उससे देश की इस सबसे बड़ी परीक्षा एजेंसी की विश्वसनीयता पर ही सवालिया निशान लग रहे थे। कुछ समय पहले यूपीएससी के चेयरमैन मनोज सोनी का इस्तीफा भी संभवतः इसी कारण से हुआ था। हालांकि उसके कारणों का खुलासा नहीं किया गया। पूजा ने सिस्टम को धोखा देने का कोई मौका नहीं छोड़ा। जो खबरें सामने आ रही हैं, उससे तो लगता है कि न केवल पूजा उसका पूरा खानदान ही फर्जीवाड़े और दबंगई में लिप्त है। उस पर तुर्रा यह कि अपने खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज होने के बाद पूजा ने पुणे कलेक्टर पर ही यौन दुर्व्यवहार का आरोप जड़ दिया। तमाम शिकायतों के बाद ही जब यूपीएससी ने जब उसे वापस मसूरी बुलाया तो वह वहां हाजिर होने की जगह अदालत की शरण में गई। हालांकि निचली अदालत ने उसकी अग्रिम जमानत की याचिका भी खारिज कर दी है। पूजा अभी पुलिस की गिरफ्त से बाहर है। पूजा के तमाम फर्जीवाड़े आरटीआई एक्टिविस्ट की सक्रियता के कारण उजागर हुए हैं। हालांकि यूपीएससी ने पूजा की नियुक्ति रद्द करने के पीछे कारण यह बताया है कि उसने पहचान बदलकर तय सीमा से ज्यादा बार सिविल सर्विसेस का एग्जाम दिया था। अर्थात् यूपीएससी को भी अंधेरे में रखा। इसके पहले ट्रेनी होते हुए भी पूजा के अशिष्ट व्यवहार की शिकायत निचले स्टाफ ने पुणे कलेक्टर सुहास दिवासे को की थी। कलेक्टर ने इसकी शिकायत मुख्य सचिव की। इसके बाद मामला गंभीर हो गया। यूपीएससी ने अपने आदेश में यह भी कहा है कि पूजा भविष्य में यूपीएससी की कोई परीक्षा नहीं दे सकेगी। पूजा पर उम्र, माता-पिता की गलत जानकारी, पहचान बदलकर तय सीमा से ज्यादा बार सिविल सर्विसेस का एग्जाम देने का आरोप था। यूपीएससी ने दस्तावेजों की जांच के बाद पूजा को सीएसई-2022 नियमों के उल्लंघन का दोषी पाया। गौरतलब है कि पूजा को एग्जाम में 2022 में 841वीं रैंक मिली थी। वे 2023 बैच की ट्रेनी आईएएस हैं। जून 2024 से ट्रेनिंग कर रही थीं। यूपीएससी के अनुसार पूजा ने पहले तो तय सीमा से ज्यादा बार यूपीएससी का इम्तिहान दिया। साथ ही उसने क्रीमी लेयर में आने के बाद भी ओबीसी तथा फर्जी तौर पर दिव्यांग होने का लाभ लिया। इन बातों से जाहिर है कि उसका दिमाग बहुत शातिर है। यूपीएससी ने पूजा को दो बार अपना पक्ष रखने का समय दिया। लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। अंततः यूपीएसएसी ने उसका चयन ही रद्द कर दिया। यहां बड़ा सवाल यह है कि यूपीएससी परीक्षा के तंत्र में इतने लूप होल्स क्यों हैं कि कोई भी उसका आसानी से दुरूपयोग कर लेता है, जैसा कि पूजा ने किया। भारत ही नहीं दुनिया में यूपीएसएसी और खासकर आईएएस की परीक्षा अत्यंत कठिन परीक्षाओं में गिनी जाती है। लाखो छात्र इसमें उत्तीर्ण होने के लिए रात दिन जी तोड़ मेहनत करते हैं। पूजा प्रकरण ने उनमें आक्रोश और हताशा पैदा कर दी थी। कोई आश्चर्य नहीं कि पूजा ने आईएएस में चयन के लिए हर हथकंडा अपनाया हो, जिसमें पैसा, प्रभाव और दबंगई सब शामिल है। पूजा मामले से हिली यूपीएससी ने कहा है कि आगे से ऐसी की पुनरावृत्ति न हो, इसके लिए एसओपी व्यवस्था को और मजबूत किया जाएगा। न केवल एसओपी बल्कि समूची परीक्षा प्रक्रिया और बाद में प्रशिक्षण व्यवस्था की भी समीक्षा कर उसे पूरी तरह सुरक्षित और सक्षम बनाने की जरूरत है। तभी यूपीएससी की साख कायम रहेगी।

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। आप केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

एसडीजी के शोर के बीच भारत का शानदार प्रदर्शन

दुनिया में एक शब्द गूंज रहा है-एसडीजी। यह शब्द दुनिया को बेचैन कर रखा है क्योंकि सच्चाई यह है कि सन् 2015 से पहले मिलेनियम डेवलेपमेंट गोल्स-एमडीजी को जिस मनोभाव से एसडीजी-सस्टनेबल डेवलपमेंट गोल्स जब नाम दिया गया था। तो बड़े दावे किये गए थे कि हम विश्व के लोग एमडीजी में जो कर पाए वह कर पाए लेकिन अब हम एसडीजी में इससे भी बड़ा लक्ष्य रखेंगे और काफी कुछ कर गुजरेंगे। अब पूरा विश्व दबाव में है। संयुक्त राष्ट्र दबाव में है। वर्ल्ड बैंक, एडीबी और दूसरी अंतरराष्ट्रीय महत्व की एजेंसीज दबाव में हैं और कुछ शर्मिंदगी में भी हैं कि जो दावे हम सबने मिल बैठकर किये थे और जो लक्ष्य निर्धारित किये थे, वह तो हमसे बहुत दूर है।

वैश्विक चुनौतियों के बावजूद भारत एसडीजी की दिशा में शानदार प्रदर्शन कर रहा है। उसने समन्वय की रणनीति को अपनाया है और यह कोशिश की है कि सतत विकास लक्ष्य को हासिल करने में पुरजोर कोशिश करेंगे, चाहे जितना हमसे दूरी तय हो सके। सतत विकास लक्ष्य को लेकर वैसे तो संयुक्त राष्ट्र में लगातार बैठकें हो रही हैं। पुकार लगायी जा रही है। जिन चीजों से दुनिया को खतरे हैं या जिन चीजों में निवेश पर्याप्त किये जा रहे हैं और मनुष्यता के खिलाफ हैं, उसके खिलाफ आवाज़ उठाई जा रही है। यह कहा जा रहा है की जो विश्व का सामान्य जीवन-गुणवत्ता बनाये रखने का पैरामीटर हैं, उसे देश ज्यादा ध्यान दें। लेकिन इस पर सच बात यह है की विश्व के लोग ध्यान नहीं दे रहे हैं। प्रत्येक दिन संयुक्त राष्ट्र के अध्यक्ष, महासचिव और उप-महासचिव के दफ्तर से जरी किए गए पत्रों को ही आंकलित किया जाये तो यह पता चलता है की जिन देशों को संयुक्त राष्ट्र से पत्र भेजे गए उसका ज़वाब भी समय से नहीं दिया जा रहा है। इस आशय का जो भी दस्तावेज़ कोई भी देश जारी करने से बच रहा है कि उसने क्या ज़वाब दिया और उसकी क्या उपलब्धियां हैं।

इस बीच एसडीजी इंडिया इंडेक्स 2023-24 जारी की गई है। उसमें एसडीजी इंडिया इंडेक्स की मुख्य विशेषताएं गरीबी उन्मूलन, भूख से मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, स्वच्छ जल और स्वच्छता, सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा, अच्छा काम और आर्थिक विकास, उद्योग, नवाचार और इंफ्रास्ट्रक्चर, असमानताओं में कमी, स्थायी शहर और समुदाय, जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन, जलवायु के अनुकूल कार्रवाई, भूमि पर जीवन, शांति, न्याय और मजबूत संस्था सभी क्षेत्रों में उल्लिखित की गई हैं। यह भी कहा गया है कि भारत का समग्र स्कोर 2018 में 57 से बढ़कर 2020-21 में 66 था और अब 2023-24 में 71 हो गया। वैश्विक चुनौतियों के बावजूद भारत एसडीजी की दिशा में आगे बढ़ रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का एसडीजी प्रदर्शन चाहे जिस रूप में देखा जाए लेकिन निःसंदेह आमूलचूल परिवर्तन अवरसंरचनात्मक रूप से भारत में देखने को मिल रहा है। भारत ने शहरी विकास और गरीबी उन्मूलन, भूख और शिक्षा, पर्यावरण और शांति, न्याय के लिए समान रूप से ध्यान दिया है। मुख्य बात यह है कि भारतीय संघ में समन्वित व निर्णायक लक्ष्य तक पहुंचना एक कठिन चुनौती है क्योंकि यहाँ की

सांस्कृतिक विविधता और भौगोलिक विविधता कई बार लक्ष्य तक पहुँचने में आड़े आती है। कई बार सहायक भी हो जाती है। फिलहाल भारत की प्रतिबद्धता नीति आयोग की अगुवाई में संचालित है। एसडीजी लक्ष्य पर्याप्त प्रयासों से ही संभव हैं। इसे राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के साथ मिलकर हासिल करने की चुनौती है। नीति आयोग के पास देश में सतत विकास लक्ष्यों को अपनाने और उनकी निगरानी करने तथा राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के बीच प्रतिस्पर्धी और सहकारी संघवाद को बढ़ावा देने का दोहरा दायित्व है। विगत लगभग एक दशक में जो भी लक्ष्य हासिल किए गए हैं, उसमें सबकी अपनी-अपनी भूमिका है। समग्र स्कोर के हिसाब से यदि जमीनी सचाई है तो निश्चय ही भारत एसडीजी हासिल करने में अच्छा प्रदर्शन कर रहा है, ऐसा कहा जा सकता है।

सतत विकास लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक प्रमुख क्रियाकलापों में प्रधानमंत्री आवास योजना-पीएमएवाई के तहत 4 करोड़ से अधिक घर, ग्रामीण क्षेत्रों में 11 करोड़ शौचालय और 2.23 लाख सामुदायिक स्वच्छता परिसर, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत 10 करोड़ एलपीजी कनेक्शन, जल जीवन मिशन के तहत 14.9 करोड़ से अधिक घरों में नल का जल कनेक्शन, आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत 30 करोड़ से अधिक लाभार्थी, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम-एनएफएसए के तहत 80 करोड़ से अधिक लोगों को कवरेज, 150,000 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों तक पहुंच जो प्राथमिक चिकित्सा देखभाल और सस्ती जेनेरिक दवाएं वितरण, प्रधानमंत्री-जन धन खातों के माध्यम से 34 लाख करोड़ रुपये का प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण-डीबीटी, कौशल भारत मिशन के तहत 1.4 करोड़ से अधिक युवाओं को प्रशिक्षित और कौशलयुक्त मानव संसाधन बनाने की बात की गयी है। इसमें यह कहा गया है कि 54 लाख युवाओं को पुनः कौशलयुक्त बनाया गया है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत युवाओं की उद्यमशीलता संबंधी आकांक्षाओं के लिए 43 करोड़ ऋण स्वीकृत किए गए हैं, जो कुल मिलाकर 22.5 लाख करोड़ रुपये हैं। युवाओं की सहायता के लिए स्टार्ट-अप-इंडिया और स्टार्ट-अप-गारंटी योजनाएं, बिजली तक पहुंच के लिए सौभाग्य योजना, नवीकरणीय ऊर्जा पर जोर देने के दावे में 73.32 गीगावॉट ऊर्जा की पहुँच बताई गयी है। इंटरनेट डेटा की लागत में 97 प्रतिशत की कमी के साथ डिजिटल बुनियादी ढांचे में सुधार, जिसने बदले में वित्तीय समावेशन को सकारात्मक रूप से प्रभावित और बढ़ावा दिया गया है, इत्यादि दावे भारत सरकार के नीति आयोग ने एसडीजी लक्ष्य बताया है। यह सब दावे जो हैं, वे निश्चय ही उल्लेखनीय हैं और यह सभी एसडीजी लक्ष्य के अंतर्गत आते हैं लेकिन इसमें जो बुनियादी सफलता है, वह यह है कि सरकार अनुकूल विजुअलाइजेशन के लिए उसे जमीनी स्तर पर देख सकती है, उसे अभिव्यक्त कर सकती है। इसी से 71 तक स्कोर बढ़ा है। नीति आयोग की भूमिका ऐसे में अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाती है क्योंकि उसे इसके और स्कोर के लिए कुछ अलग करने की आवश्यकता है। राज्य के अलग से इनिशिएटिव यदि यह व्यक्त करें कि दुनिया से भिन्न भारत सोचता है, बतौर राज्य वह कार्य कर रहा है लेकिन कुछ अलग भी लक्ष्य को भारत ने हासिल कर लिया है जो अन्य देश नहीं कर सके हैं तो उससे भारत की छवि कुछ और बनेगी। इसलिए भी नीति आयोग को उस बेहतरी के लिए उपाय व मकैनिज्म खड़े करने ही होंगे।

नीति आयोग के दावे और उसकी अपनी संतुष्टि चाहे जो भी हो लेकिन अब भारत को बेहतरी की और बढ़ने की ज़रूरत है। उसे अपने दावों को यथार्थ में भी खुद आंकने की आवश्यकता है। जिन क्षेत्रों में सतत विकास लक्ष्य को लेकर हमारी खामियां हैं क्या भारत सरकार उसके लिए कोई ऐसा मापांक तैयार कर पाया है, सवाल यह है? प्रश्न यह है कि भारत में जो जनजीवन है वह एसडीजी के दावों के मुताबिक ही प्रगति कर सका है, इसको परखने के लिए कोई अलग से मॉनीटरिंग व्यवस्था सराकर अब तक खड़ी कर सकी है? यदि ऐसा नहीं है तो जो डाटा भारत की ओर से दिया जा रहा है, उसे कल झुठलाने वाले खड़े होंगे तो कोई सरकार के पास ज़वाब नहीं होगा।

एसडीजी को लेकर इसलिए व्यापक एक ऐसा परोक्ष रूप से जिसके बारे में हमारे सिस्टम को अंदेशा भी न हो, ऐसे मॉनिटरिंग सिस्टम सरकार को डेवलप करने होंगे।

भारत को यह दिखाना होगा कि वह कुछ बेहतर कर रहा है तो उसे अपने देश के रक्षा सौदों में निवेश को रोकना होगा। कुछ विशेष न हो तो जो संत महात्मा दिन-रात प्रवचन करके अपने होने का एहसास दिलाते हैं। उनके माध्यम से जन-जन में प्रेम व शांति के लिए कार्य करने व ऐसे जनमानस बनाने की कोशिश करनी होगी। वे भारत में अपराध कम करने के लिए क्या अवदान दे सकते हैं, इसके लिए एडवाइजरी जारी होनी चाहिए। संत व प्रवचनकर्ता कितने लोगों को मुख्यधारा में शामिल कर शांति स्थापित किए, यह मायने रखता है न की वह कितनी समस्याओं को बताकर जनमानस को उलझाये, यह भारत के हित में है। भारत रक्षा सौदे में निवेश की जगह शिक्षा व स्वस्थ्य, अच्छे मानव संसाधन तैयार करने हेतु निवेश बढ़ाये, जलवायु सुरक्षा के लिए कार्य करे, इसके लिए राज्य की ओर से विशेष एडवाइजरी यदि बने तो भारत एसडीजी लक्ष्य में कुछ अलग प्रदर्शन कर सकेगा। हमारा लक्ष्य है कि हम नेक हों और विश्व में हमारे अभिषेक हों तो जो 2047 तक विकसित भारत की दिशा में प्रगति का हमारा दावा है, उसके अनुरूप काम करने की आवश्यकता होगी। इसके लिए भारत के निर्णायक कर्तव्य ही उसे इस स्तर पर ले जा सकते हैं। प्रतिबद्ध कदम, प्रतिबद्ध नेतृत्व व भारत के प्रतिबद्ध नागरिक यदि एक हों, तो भारत का जो आज एसडीजी प्रदर्शन है वह विश्व में श्रेष्ठ गिना जाएगा।

पर्यावरण

प्रमोद भार्गव

लेखक, वरिष्ठ साहित्यकार और पत्रकार हैं।

केरल में भूस्खलन से तबाही

नयनाभिराम प्राकृतिक संपदा और बहुआयामी जल-संसाधनों के कारण केरल को उत्तराखंड की तरह भगवान का घर माना जाता है। किंतु मूसलाधार बारिश और भूस्खलन हिमालय से लेकर केरल तक तबाही के कारण बन रहे हैं। देश के सुदूर दक्षिण राज्य केरल में प्रकृति ने अपना रौद्र रूप दिखाया और भूस्खलन एवं चेरियाल नदी के जलभराव क्षेत्र में बसे चाय बागान मजदूरों के चार गांवों ने मिट्टी के मलबे में जल समाधि ले ली। चेरियाल नदी पहाड़ों से निकलती हुई समतल भूमि पर चार दिनों से चल रही बारिश के कारण अत्यंत तेज गति से बही। इसी समय पहाड़ जल के प्रवाह से बह पड़े और पत्थरों व मलबे से चूरलमाला, अट्टामाला, नूलपुझा और मुंडक्कई इस मलबे में पूरी तरह दब गए। जल की रफ्तार में हजारों पेड़, सैंकड़ों वाहन भी जड़ों से उखड़ कर ग्रामों की ओर बहते चले आए। करीब 2200 की आबादी के 400 से ज्यादा घर कुछ पलों में मिट्टी के ढेर में बदल गए। 165 के करीब लोगों के शव मिल चुके हैं और 500 के करीब लोग लापता हैं। यह पूरा इलाका पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र माना जाता है। अतएव ग्रामीणों को पहले से ही अनहोनी की आशंका थी, जो इस बारिश में घट गई।

केरल में केदारनाथ की तरह जो जल तांडव आया, उसने तय कर दिया है कि यह आपदा भगवान की देन न होकर मानव निर्मित है। पर्यावरणविदों ने भी इस बाढ़ को मानव निर्मित आपदा करार दिया है। इसका कारण बड़ी मात्रा में जंगलों की कटाई और पर्यटन में वृद्धि है। चेरियाल बाढ़ क्षेत्र की जीवनदायिनी नदी मानी जाती रही है, लेकिन वही आधुनिक विकास के चलते मौत का सबब बन गई। कृशि प्रधान इस इलाके चाय के अलावा नारियल, केला, मसाले और षुश्क मेवा की फसलें भी खूब होती हैं। इसके अलावा पर्यटन भी राज्य की आमदनी व रोजगार का मुख्य स्रोत है। आय के ये सभी संसाधन प्राकृतिक हैं। गोया, प्रकृति का इस तरह से रूठ जाना आर्थिक रूप से खस्ताहाल केरल पर लंबे समय से भारी पड़ रहा है। क्योंकि इसके पहले बरसात में ही केरल के 80 बांधों में से 36 बांधों के दरवाजे एकाएक खोल दिए गए थे। इन बांधों से निकले पानी ने बड़ी तबाही मचाई थी। यह तबाही पूरी तरह मानवीय भूल थी, लेकिन सिंचाई विभाग के किसी नौकरशाह की जवाबदेही तय करके दंड दिया गया हो, ऐसा देखने में नहीं आया।

अब आधुनिक विकास, बढ़ते शहरीकरण के साथ तकनीक भी बाढ़ के पानी को मौत के कारणों में बदल रही है। दिल्ली की एक बहुमंजिला इमारत के तलघर में चल रही कोचिंग संस्थान में पानी भर जाने से तीन होनहार बच्चों की मौतें हुई हैं। ये मौतें पानी के कारण नहीं तकनीक के कारण हुई हैं, जिसे जांच में नजरअंदाज किया जा रहा है। दरअसल तलघर के दरवाजे बायोमेट्रिक दरवाजे लगे थे। इस प्रकार के द्वार में चाबी वाला ताला नहीं होता है। यह द्वार उपयोगकर्ता के अंगूठे की पहचान से खुलता है। अंगूठे के निशान पहले से ही स्कैन कर स्टोर कर लिए जाते हैं। किंतु जब तलघर में पानी भरा तब बिजली बंद कर दी गई। अतएव अंगूठे का स्पर्श कराने के बावजूद दरवाजे नहीं खुले और आईएएस बनने की तैयारी में लगे तीन युवकों की मौत हो गई। लिहाजा आने वाले समय में तकनीक इस तरह के हादसे का कारण न बने, इसका ध्यान रखना होगा।

सेना, नौसेना, वायुसेना के लोग केरल के आपदाग्रस्त इलाके में लोगों को बचाने में लगे हैं। लेकिन जो लोग 24 घंटे से ज्यादा समय मलबे से मलबे में दबे हुए हैं, उनका बचना असंभव है।

देश में ऐसी आपदाओं का सिलसिला पिछले एक दशक से निरंतर जारी है। बावजूद हम कोई सबक लेने को तैयार नहीं हैं। यही कारण है कि विपदाओं से निपटने के लिए हमारी आंखें तब खुलती है, जब आपदा की गिरफ्त में आ चुके होते है। इसीलिए केरल में तबाही का जो मंजर देखने में आ रहा है, उसकी कल्पना हमारे शासन-प्रशासन को कतई नहीं थी। यही वजह है कि केदारनाथ, अमरनाथ, हिमाचल और कश्मीर के जल प्रलय से हमने कोई सीख नहीं ली। गोया वहां रोज बादल फट रहे हैं और पहाड़ के पहाड़ ढह रहे हैं। हिमाचल, असम और उत्तर प्रदेश में भी बारिश आफत बनी हुई है। बावजूद न तो हम शहरीकरण, औद्योगीकरण, तकनीकीकरण और तथाकथित आधुनिक विकास से जुड़ी नीतियां बदलने को तैयार हैं और न ही ऐसे उपाय करने को प्रतिबद्ध हैं, जिससे ग्रामीण आबादी शहरों की ओर पलायन करने को मजबूर न हो? शहरों में यह बढ़ती आबादी मुसीबत का पर्याय बन गई है। नतीजतन प्राकृतिक आपदाएं भयावह होती जा रही है। सूरत, चेन्नई, बैंगलुरू, गुड़गांव ऐसे उदाहरण हैं, जो स्मार्ट सिटी होने के बावजूद बाढ़ की चपेट में रहे हैं। लिहाजा यहां कई दिनों तक जनजीवन ठप रह गया था।

बारिश का 90 प्रतिशत पानी तबाही मचाकर अपना खेल खेलता हुआ समुद्र में समा जाता है। यह संपत्ति की बरबादी तो करता ही है, खेतों की उपजाऊ मिट्टी भी बहाकर समुद्र में ले जाता है। देश हर तरह की तकनीक में पारंगत होने का दावा करता है, लेकिन जब हम बाढ़ की त्रासदी झेलते हैं तो ज्यादातर लोग अपने बूते ही पानी में जान व सामान बचाते नजर आते हैं। आफत की बारिश के चलते डूब में आने वाले महानगर कुदरती प्रकोप के कठोर संकेत हैं, लेकिन हमारे नीति-नियंता हकीकत से आंखें चुराए हुए हैं। बाढ़ की यही स्थिति असम व बिहार जैसे राज्य भी हर साल झेलते हैं, यहां बाढ़ दशकों से आफत का पानी लाकर हजारों ग्रामों को डूबो देती है। इस लिहाज से शहरों और ग्रामों को कथित रूप से स्मार्ट व आदर्श बनाने से पहले इनमें ढांचागत सुधार के साथ ऐसे उपायों को मूर्तरूप देने की जरूरत है, जिससे ग्रामों से पलायन रुके और षहरों पर आबादी का दबाव न बढ़े ?

आफत की यह बारिश इस बात की चेतावनी है कि हमारे नीति-नियंता, देश और समाज के जागरूक प्रतिनिधि के रूप में दूरदृष्टि से काम नहीं ले रहे हैं। पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन के मसलों के परिप्रेक्ष्य में चिंतित नहीं हैं। कृषि एवं आपदा प्रबंधन से जुड़ी संसदीय समिति ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि जलवायु परिवर्तन से कई फसलों की पैदावार में कमी आ सकती है, लेकिन सोयाबीन, चना, मूंगफली, नारियल और आलू की पैदावार में बढ़त हो सकती है। हालांकि कृषि मंत्रालय का मानना है कि जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए खेती की पद्धतियों को बदल दिया जाए तो अनेक फसलों की पैदावार में 10 से 40 फीसदी तक की बढ़ोतरी संभव है। बड़ते तापमान के चलते भारत ही नहीं दुनिया में वर्शाचक्र में बदलाव के संकेत 2008 में ही मिल गए थे, बावजूद इस चेतावनी को भारत सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया। ध्यान रहे, 2031 तक भारत की शहरी आबादी 20 करोड़ से बढ़कर 60 करोड़ हो जाएगी। जो देश की कुल आबादी की 40 प्रतिशत होगी। ऐसे में शहरों की क्या नारकीय स्थिति बनेगी, इसकी कल्पना भी असंभव है ? बहरहाल देश को हर साल बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं का संकट नहीं झेलना पड़े, अतएव अब क्रांतिकारी पहल करना जरूरी हो गया है। वरना देश हर वर्ष किसी न किसी राज्य या महानगर में बाढ़ जैसी भीषण त्रासदी झेलते रहने को विवश होता रहेगा?

नए भारत की नई जातियां

कटाक्ष

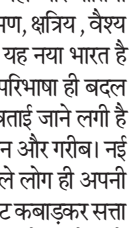

यशवंत गोरे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

प्राचीन काल से हम हमारे यहां चार जातियां ही सुनते आ रहे है ब्राह्मण, क्षत्रिय , वैश्य और शूद्र। परन्तु अब यह नया भारत है और नए भारत में जातियों की परिभाषा ही बदल गई है। अब चार नई जातियां बताई जाने लगी है और वह है महिला, युवा, किसान और गरीब। नई जातियों को परिभाषित करने वाले लोग ही अपनी मूल जाति की ढोल बजाकर वोट कबाड़कर सत्ता में बना रहना चाहते है। पुराने भारत को मानने वाले जिन्होंने सतत सत्ता का भोग किया भारत को नया होने नहीं दिया वही लोग अब जिसकी जितनी संख्या भारी , उसकी उतनी भागीदारी की मांग कर रहे है। जातीय जन गणना कराना चाहते है। जातीय गणना कर क्या करोगे ? कुर्सी का मोह क्या न कराये। हर कोई अपनी जाति बता रहा है। अपनी जाति के वोटों के ठेकेदार बन कर सत्ता का सुख पाना चाह रहे है। जो वह है नहीं, वह बता रहे है। कपड़ों के ऊपर से जनेऊ पहन कर अपने आप को ब्राम्हण दिखा कर गोत्र जग जाहिर कर रहे है। नेता आज भी जाति के नाम पर अपनी रोटी सेंकने की कोशिश रहे है। मौका मिलते ही रोटी के साथ खुद भी पलटी मार देते है। हर जाति में अपनी जाति के क्षत्रप बन कर नेता बनना की चाहत पाल रहे है। जिस समाज में, रोटी का रिश्ता हो सकता है , बेटी का रिश्ता नहीं, की मान्यता थी वहां अब हाई टेक युवा पीढ़ी ने सभी बंधनों को तोड़कर 'सहपाठी', 'सहकर्मी' नाम की नई जातियों पैदा कर दी है, और आपस में शादियां कर रहे है। पुरानी पीढ़ी चाहे मजबूरी में हो या खुशी-खुशी उसे कबूल भी कर रही हैं।

जातिवाद कहाँ नहीं है ? साहित्यकारों की भी कई जातियाँ है। लघुकथाकार, कहानीकार, व्यंग्यकार, समीक्षक, कवि, शायर यह सब साहित्यकारों की जातियां है। हर साहित्यकार अपनी जाति के रचनाकार के साथ जल्दी घुल मिल जाता है साहित्यिक कार्यक्रमों में अपने जाति के साहित्यकार का पक्ष लेने लगता है, समर्थन करने लगता है। कुछ साहित्यकार जो जाति भेद में विश्वास नहीं करते वे हर विधा में निपुण होते है कोई भी कोई भी साहित्यिक कार्यक्रम हो अपनी उपस्थिति दर्ज कर ताली बजवा ही लेते है। सुबह उठते ही सबसे पहले अख़बारों की स्थानीय पृष्ठों की ख़बरों में अपना नाम और फोटो तलाशते हुवे देखे जा सकते है। सोशल मिडिया पर छाए रहते है, एक दूसरे की पोस्ट लाइक और शेयर करते रहते है। बहुत शानदार, छा गए गुरु, गजब, बधाई, अभिनंदन, नाइस जैसे कमेंट की भरमार इनकी पोस्ट पर रहती है।

अलग- अलग जाति के श्वान पालने की होड़ लगी है। श्वान पालना आजकल एक सामाजिक प्रतिष्ठा बन गया है।श्वान पालने वाले बताते है कि देश भर में 300 से 400 जाति के श्वान पाए जाते है। जर्मन शेफर्ड, बुल डॉग, लैब्राडोर, गोल्डन रिट्रीवर, फ्रेंच बुलडॉग, साइबेरियन, हस्की ऐसी कई जाति के श्वान शहरों में सुबह मॉर्निंग वॉक करते हुये अपने स्वामी के साथ देखे जा सकते है। विदेशी जाति के होने से इन्हे सम्मान स्वरुप 'श्वान' कहना हमारी मजबूरी है। देशी श्वान को तो हम कुत्ते ही कहते है, वे बिचारे बुरा भी नहीं मानते। कुत्ते तो कुत्ते ही है गली- गली भटकते है , अपनी जाति के विदेशी भाइयों को सुन्दर महिलाओं की गोद में बैठा देखकर, बंगलो के एसी कमरों बैठकर, एस.यू.वी. गाड़ी में घूमते हुवे देखते है तो जलन महसूस करते है। इनकी खीज आम जनता पर निकाल रहे है। नगर निगम वाले इनकी इस खीज से परेशां है। अस्पतालों में कुत्ते के काटने के इंजेक्शन की कमी पड़ने लगी है। नसबंदी कर छोड़ देते है, फिर भी उनकी संख्या में कोई कमी नहीं हो रही है। श्वान प्रेमी 'पेट लवर्स' उनके प्रेम में उनके रक्षक बन कर कुत्ते पीड़ित लोगों से झगड़ रहे है। पुलिस वाले इसलिए परेशान है कि कार्यवाही कुत्ते की खिलाफ करें या आदमियों के। नई पीढ़ी बच्चों को पालने से ज्यादा श्वान पालने में ज्यादा सुख अनुभव कर रही है। देशी कुत्ते इस बात से खुश है कि सरकार ने 23 जाति के पालतू कुत्तों को पालने पर प्रतिबंध लगा दिया है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रभुनाथ शुक्ल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

आओ रे ! बदरा मोरे अंगना

पूर्वांचल में बादल नाराज हैं। सूरज और बादलों के बेमेल गठजोड़ ने सावन और किसानों की सत्ता हिलाकर रख दिया है। किसानों के चेहरे पर जहाँ हवाईयां उड़ रहीं है वहीं खेतों में झुर्रियां पड़ गई हैं।जमीन में मोटी-मोटी दरारें पड़ गई हैं। सावन हाफ रहा है और प्यासा है। सावन बदहवास और बदहाल सा है। खेत -खलिहान में हरियाली गायब है। पूरवाई के साथ धुल उड़ रहीं है। धान की फसल ऐंठ कर सुख गई है। धरती पर हरियाली का नाम नहीं है। हर तरफ बस! सूखा-सूखा नजर आ रहा है। अल्हण सावन जैसे कुंवारे में बुढ़ा हो चला है। उसके हाथों में जैसे किसी ने लाठी पकड़ा दिया हो और वह बीमार सा अपनी अंतिम साँसे गिन रहा है। बादलों ने अबकी पूर्वांचल में सावन का अजीब हाल बना दिया है।

पूर्वांचल में बादलों और सूरज के गठजोड़ से धरती और सावन का सारा फागुन गायब हो चला है। नदिया, पोखर, ताल और तलैया सब सूखे पड़े हैं। कहीं भी बूंद भर पानी नहीं दिख रहा है। सबका दिल जल रहा है लेकिन कोई प्यास बुझाने वाला नहीं है। हर तरफ बिरह का गान है। सुक्खू, कालू, रामू और बलिराम काका का बुरा हाल है। खेत में धान की फसल सुख कर ऐंठ गई है जैसे उसके पेट में हिका पड़ा हो। खेतों में लगी धान की फसल रात-दिन रट लगाए है मेघा रे मेघा रे पानी दे पानी दे। सावन, धान, किसान सब पानी -पानी पुकार रहें हैं। लेकिन बादल, सावन और उन बेगुनाह किसानो को कोई तवज्जो नहीं दे रहें हैं। जैसे नई नवेली दुल्हन किसी को भाव नहीं देती वैसा हाल इन बादलों का हो गया है।

सावन उदास है जैसे उसका प्रियतम बादल, रेगिस्तान में जा बसा है और एकदम नीरस हो गया है और वह सावन की बेकरारी नहीं समझ रहा है। गाँवों में झूले नहीं दिख रहें हैं। सूरज इतना आग उगल रहा है कि जेठ के नौतपता को उसने मात दे दिया है। बेचारा सावन, बारिश में भींगने को बेताब है, लेकिन उसकी बेताबी प्रेमी बादल नहीं समझ रहे हैं। सावन, बरसात में भींगने के बजाय पसीने से भींग रहा है। चकबेनिया डुलाते -डुलाते वह पस्त है। पूरे शरीर और माथे से पसीना टपक रहा है। वह तो बस! पिया -पिया रट रहा है, लेकिन हरजाई बादल उसकी बेकरारी को सुनने से रहे। उदास और लाचार सावन पुरवाई पवन के जरिए अपनी पीड़ा बादलों तक भेजना चाहता है, लेकिन निर्मोही बादल जब उसकी पीड़ा को समझें तब ना।

विश्व स्तनपान सप्ताह पर विशेष-2

स्तनपान की राह में सामाजिक परंपराएं, रूढ़ियां और धारणाएं बड़ी चुनौती

सुनील कुमार गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

कभी परंपराओं, कभी मान्यताओं,
कभी मिथकों, कभी रूढ़ियों के बहाने,
जो छीन चुके बच्चों का दूध, उनकी सांसें ।।
ऐसे हर व्यवहार को बदलने,
हम भी हैं तैयार, टूटी नहीं है आस ।।
सदियों पुरानी ये आदतें जाते-जाते जाएंगीं,
जाकर रहेंगी, मन में है विश्वास।।

देश की बात हो या दुनिया की, सदियों से सामाजिक परंपराओं, मान्यताओं के नाम पर, मिथकों, रूढ़ियों, धारणाओं के बहाने सबसे ज्यादा महिलाएं और बच्चे ही छले और निशाना बनाए जाते रहे हैं। भले ही बच्चे की जिंदगी से जुड़ा मां के दूध का मुद्दा ही क्यों न हो। लैंगिक भेदभाव की मानसिकता वाले पितृसत्तात्मक समाज ने मां के स्तनों और शरीर का फिगर खराब होने का डर दिखाया, कहीं मां के पहले दूध को अशुद्ध बताया और फिंकवाया, कहीं पहले शहद चटाया, घुट्टी पिलाई। वहीं बाजार ने बेबी मिल्क यानी फार्मूला मिल्क पेश कर मां के दूध का विकल्प बनने की कोशिश की। बाजार ने मांओं और बच्चों की जिंदगी से खिलवाड़ किया। फार्मूला मिल्क, उसकी गुणवत्ता लेकर सवाल भी उठते रहे हैं। नेस्ले जैसी कंपनियों के उत्पादों के बहिष्कार तक हुए हैं।

सामाजिक व्यवहार परिवर्तन और बाजार के जानलेवा षड्यंत्रों को पहचानते हुए ही हर साल भारत में 1 अगस्त से 7 अगस्त तक स्तनपान को बढ़ावा देने के मकसद से विश्व स्तनपान सप्ताह मनाया जाता है। मप्र में इस साल थीम है, 'स्तनपान मां की ही नहीं, पिता की भी जिम्मेदारी'। डॉक्टरों का स्पष्ट मत है कि मां के दूध को लेकर चाहे जितनी धारणाएं, मिथक और भ्रांतियां हों, चाहे जितनी तरह के फार्मूला मिल्क हों, हकीकत यह है कि मां के दूध का कोई विकल्प हो ही नहीं सकता है। मां का दूध, रोगप्रतिरोधक क्षमता वाला, सभी पोषक तत्वों से भरपूर और अमृततुल्य होता है।

सामाजिक व्यवहार परिवर्तन का सफर लंबा, मंजिल अभी दूर

चिकित्सक, महिला-बाल विकास विभाग, सामाजिक कार्यकर्ता सभी यह मानते हैं कि समाज में व्याप्त रूढ़ियां, पारंपरिक मान्यताएं और अंधविश्वास स्तनपान को प्रभावित करते हैं। मप्र के अलग-अलग इलाकों में अलग-अलग परंपराएं और प्रथाएं हैं। जैसे मप्र के अलीराजपुर-झाबुआ के आदिवासी इलाकों में अभी भी कई जगह मां को तीन दिन तक अपने बच्चे को स्तनपान नहीं कराने दिया जाता। कोलोस्ट्रम वाले दूध को अशुद्ध माना जाता है। कई ग्रामीण इलाकों में इस अमृत तुल्य दूध याने कोलोस्ट्रम को फिंकवा दिया जाता है। गांव के बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि यह गाढ़ा दूध गले में फंस जाने का डर रहता है। कई लोग मानते हैं कि प्रारंभिक दूध ताजा नहीं होता, क्योंकि 9 महीने तक बच्चे के साथ मां के शरीर के अंदर था। जब तक दूध पीला है, तब तक अशुद्ध है। 3 दिन बाद सफेद दूध आने पर ही बच्चे को पिलाना शुरू करते हैं। कुछ परंपराओं में मां का पहला दूध भगवान को समर्पित होता है, कई शहरी और ग्रामीण इलाकों में जन्म के बाद बच्चे को सबसे पहले शहद चटाने या गुड़ का पानी पिलाने की परंपरा है।

खंडवा के खालवा और पंधाना जैसे इलाकों में जब तक घर में पूजा नहीं हो जाती, तब तक जच्चा को उपवास रखना पड़ता है और बच्चे को भी स्तनपान नहीं कराने दिया जाता। कई बार नई माताओं को पारंपरिक मान्यताओं के चलते अपने परिवार की इच्छा या दबाव के आगे झुकना पड़ता है। हालांकि जहां महिलाएं और घर-परिवार-समाज के लोग शिक्षित और जागरूक हैं, वहां हालात सकारात्मक रूप से बदल रहे हैं, लेकिन जहां अशिक्षा ज्यादा है, परिवार और महिलाओं और बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता का अभाव है, वहां लोग ज्यादा अंधविश्वासों और रूढ़ियों में जकड़े हुए हैं।

रोशनी के अनुभव और आंखों देखी

खंडवा जिले में कुपोषण से मौतों के लिए अक्सर चर्चा में रहने वाले आदिवासी बाहुल्य खालवा ब्लाक में महिला-बच्चों के बीच काम करने वाली सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री रोशनी झा बताती हैं कि खालवा में बरेला, कोरकू, सहरिया, गोंड जैसे आदिवासियों के बीच लगातार काउंसलिंग से सकारात्मक प्रभाव तो पड़ा है, संस्थागत प्रसव और स्तनपान कराने वाली महिलाओं की संख्या बढ़ी है। लेकिन अभी भी पारंपरिक मान्यताओं, झाड़-फूंक, पूजा-पाठ, दागना जैसी कुप्रथाओं और अंधविश्वासों से भरे सामाजिक व्यवहार में लोग जकड़े हुए हैं। कोई नवजात शिशु की जुबान पर पारा रखता है, तो कोई 15-20 दिन के भीतर शहद, दूध, जायफल की घुट्टी पिलाने लगता है। यहां बच्चे के जन्म पर उसे धागा बांधने वाले को भूमका और पूजा-पाठ करने वाले को पड़िहार कहा जाता है। इन परपंराओं को पूरा करने के बाद ही मां बच्चे को दूध पिला सकती है। हालांकि अब कोई खुले आम दागना जैसी अंधविश्वास से भरी कुप्रथा नहीं अपनाता, लेकिन कोरकू समुदाय में कुछ लोग बच्चे को दूध नहीं पीने या उसके बीमार पड़ने पर डाक्टर के पास ले जाने की बजाय चचुआ कहलाने वाली दागना जैसे क्रूर कुप्रथा को अपनाते हैं। इस प्रथा में गर्म सलाई से बच्चे के पेट को दागा जाता है। कई बार इस प्रथा के चलते बच्चों के मौत की खबरें भी सामने आ चुकी है।

पंधाना ब्लाक में गोंड-भील-भिलाला आदिवासियों का बाहुल्य है, जो बच्चे को स्तनपान कराने से पहले पूजा-पाठ करते हैं। इन कुछ घटनाओं के बावजूद अब आदिवासी समुदाय भी जागरूक हो रहा है, लेकिन पूरी तरह से व्यवहार परिवर्तन में समय लगेगा।

लुब्ना का दर्द

हाल ही स्तनपान को लेकर भोपाल में एक जागरूकता कार्यक्रम में लुब्ना भी शामिल हुई, वह खुद सर्टिफाइड फिटनेस ट्रेनर हैं, स्तनपान के महत्व को बखूबी समझती हैं, लेकिन बच्चे को सबसे पहले शहद चटाने पर अड़े परिवार के दबाव के चलते अपने बच्चे को पहले घंटे में अपना दूध पिलाने से वंचित रह गई। उन्हें इसका बहुत दुख है। वो कहती हैं कि संतान के जन्म के समय परिवार में खुशी का मौका होता है। ऐसे मौके पर नई-नई सलाह देने वालों की भी भरमार रहती है। खुशियों में खलल से बचने के चक्कर में नई मां कुछ कह भी नहीं पाती। लेकिन अब वह मानती हैं कि किसी भी कीमत पर बच्चे की सेहत के साथ समझौता नहीं करना चाहिए। उसे स्तनपान जरूर कराना चाहिए।

स्तनपान केवल मां की ही नहीं पिता की भी जिम्मेदारी

महिला बाल विकास विभाग की वरिष्ठ अधिकारी निशा जैन कहती हैं कि हमारा स्पष्ट मानना है कि स्तनपान केवल मां की ही नहीं, पिता और परिवार की भी जिम्मेदारी है। घर के पुरुष जन्म के बाद बच्चे को दूध पिलाने के लिए अनुकूल और तनाव रहित वातावरण दे सकते हैं, घर के काम खाना बनाने, बर्तन-कपड़े धोने, साफ सफाई जैसे कामों में हाथ बंटाकर मां को केवल दूध पिलाने पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए कह सकते हैं। पुरुषों का यह मानना कि स्तनपान में केवल महिलाओं की ही भूमिका है, यह सही नहीं है, जबकि पिता का साथ, स्तनपान में सुधार के लिए सफल और उसकी निरंतरता से जुड़ा मामला है। मां के दूध के महत्व की जानकारी से पुरुषों और समुदायों को भी अवगत कराने की जरूरत है।

व्यंग्य

कसक रह गई नेता बनने की !

पूरन सरमा

मुझे आजादी से पहले का नेता तो बनना नहीं था, कसक थी तो आजादी के बाद वाले नेता बनने की, गांधीजी जैसा नेता बनने में त्याग और बलिदान की आवश्यकता थी। फिर उनके जैसा बनना मेरे बूते के भी बाहर था। इसलिए नेता का नया रूप ही मुझे लुभा पाया था, इसमें ज्यादा मेहनत भी नहीं थी। सब कुछ दिखावे और ढ़ोंग से होना था, जनता की आंखों में धूल झोंकनी थी, जिसमें मैं पूरी तरह माहिर था। झूठे आश्वासन देने थे, लच्छेदार भाषा में भाषण देने थे और नहा-धोकर इत्र फुलेल कर कुर्ता-पाजामा में जनसेवक का झूठा रूप धारण करना था। इस दिशा में मैं थोड़ा बहुत सक्रिय भी हो गया था, लेकिन पिताजी आड़े आ गये, एक दिन कहने लगे- 'बरखुरदार, तुम्हारे लक्षण मुझे शुभ दिखाई नहीं दे रहे मैंने सुना है तुम नेता बनने की सोच रहे हो, वास्तविकता तो यह है बेटा नेतागिरी हमारे वश में नहीं है, इसमें जनसेवा करनी पड़ती है।'

मैं हंसकर बोला-'आप खामखां घबरा रहे है। मैं जनसेवा में अपना समय जाया नहीं करंगा। मैं इस नये जमाने का नेता बनना चाहता हूँ और इसके लिए मुझे आपका मोरल सपोर्ट चाहिए, विद इन नो टाइम मैंने इस घर की तकदीर नहीं बदल दी तो मेरा नाम बदल देना। आखिर आपका बेटा जो ठहरा।'

पिताजी ने अचरज से पूछा-'मैं तुम्हारा आशय समझा नहीं बेटा, तुम कहना क्या चाहते हो ? मेरे आदर्श तो गांधी जी है वैसा जज्बा तेरे भीतर कुलबुला रहा हो तो मेरा 'मोरल सपोर्ट' आज से ही समझना, बाकी तेरी योजनायें क्या हैं, मुझे विस्तार से समझा।'

मुझे पिताजी की बात पर फिर हंसी आ गई, मैं बोला-'नहीं पिताजी आप मेरी बात समझ नहीं पा रहे हैं। देखिये अपने घर की हालत ठीक नहीं है, हम लोग गरीब हैं, घर की प्राथमिक आवश्यकतायें ही बड़ी कठिनाई से हम लोग जुटा पाते हैं। मैं इस नये जमाने का नेता बनना चाहता हूँ।'

पिताजी फिर असमंजस में पड़ गये और बोले-'नये जमाने का नेता कैसा होता है बेटा? तुम कहीं जीवन मूल्यों से हटकर घोटालेबाज बनने की बात तो नहीं कह रहे हो ?'

मैं बोला-'अब आपने ठीक जाना और सही रूप में मुझे पहचाना। बिना घोटाला किये आज के जमाने का नेता नहीं बना जा सकता। आप शायद नहीं जानते कि मैं मुफ्त का पैसा कमाने के लिए किस हद तक जाकर गिर सकता हूँ ?'

पिताजी का मूंह खुला का खुला रह गया। उन्हें मुझसे शायद ऐसी आशा नहीं थी मैं ही बोला-'आप इससे तनिक भी मत घबराइये।

आजकल कुछ भी कर लो, कुछ भी नहीं होता। देख लेना मेरा बाल भी बांका नहीं होगा, आपका आशीर्वाद मेरे साथ रहा तो मैं आज के जमाने के नेताओं के रिकॉर्ड्स को तोड़ डालूंगा। मेरा मतलब जिस भी तरीके से माल आयेगा मैं हड़प जाऊंगा, बस पहले थोड़ा ढोंग करके चुनाव जीतने भर की देर है। टिकिट के लिए तो कई पार्टियों के ऑफर आ रहे हैं। इतना अवसरवादी हूँ कि सारा मामला तोलकर तय कर लूंगा कि किस दल का उम्मीदवार बनना है, दल-बदलने में मेरे पेट का पानी भी नहीं हिलता है।'

पिताजी ने मुझे बीच में ही रोका और कहा-'मैंने तुझे इन संस्कारों की शिक्षा तो नहीं दी थी तू यह क्या बोले जा रहा है। हालांकि तू मैट्रिक भी पास नहीं कर सका है, परन्तु मेरे संस्कारों की तो शर्म कर, मेरा नाम डुबोने पर क्यों तुला है। मुझे पता चल गया है कि तू क्या बनना चाहता है।'

'लेकिन पिताजी आप समझते क्यों नहीं, मेरा नेता बनना अब बहुत जरूरी हो गया है। बिना नेता बने यह गरीबी नहीं मिटने वाली। सरकार ने खुद ने यह नारा दिया है कि 'गरीबी हटाओ' और 'पिछड़े को पहले' ये दोनों बातें हम पर पूरी तरह लागू हो रही हैं। अपनी गरीबी कैसे भी करके हमें मिटानी है। हम पिछड़े हुए हैं, इसलिए हमें ही पहल करके आगे आना है।' मैंने कहा तो पिताजी बोले-'अपनी ही कहेगा या मेरी भी सुनेगा। मैं पूछता हूँ कि गांधी के इस देश में तू इस तरह जनसेवा करेगा। तुझे पता भी है, तेरे ऐसा करने से और कितने लोग गरीब हो जायेंगे, नहीं चाहिए मुझे हराम की कमाई। भगवान ने तुझे हट्टा-कट्टा शरीर दिया है। इससे मेहनत करके रोटी कमा और मेरे सिद्धान्तों की लाज रख। मुझे पता नहीं था तू इस हद तक बिगड़ जाने को तैयार बैठा है। मेहनत करते लाज आती है क्या तुझे ?'

मैं बोला-'सवाल जहाँ तक मेहनत का है, उसे करने वाले भूखों मरते हैं तथा मक्कारी करने वाले माल मारते हैं। इसलिए इस समय सवाल केवल रोटी का नहीं है। सवाल है भौतिक सुख-सुविधाओं का, जो बिना घपला किये हासिल नहीं हो सकती, मेहनत से आपको क्या मिला? तार-तार जिंदगी और अभावों से भरा जीवन, मुझे याद नहीं हमने कभी ढ़ंग का खाया और पहना हो। इस जीवन शैली से मैं तंग आ गया हूँ। अब मुझे नये जमाने का नेता बन ही जाने दीजिये।'

पिताजी की आंखें गुस्से से लाल हो गई, तैश में बोले-'खबरदार जो तू आगे बोला तो, तुझे हरामखोरी करने की सूझ रही है। कान खोलकर सुनले अगर तूने नेता बनने की भी सोची। पच्चीस वर्ष का जवान है। देश को तू यही देना चाहता है। अभावों का जीवन जीकर क्या मैं यहां तक नहीं आ गया।

रिश्वत कमीशन खाना चाहता है। उसूलों को तिलांजली देकर देश का नाम डुबो देना चाहता है। बनना है तो गांधी जी बनकर दिखा।'

मैं बोला-'कमला करते हैं आप तो पिताजी, आजकल के जो नेता लूटपाट कर रहे हैं, क्या कानून या अन्य कोई उनका कुछ बिगाड़ सका है ? दोनों हाथों से लूट रहे हैं आज के नेता। बंगला, कोठी कार व नौकर-चाकर क्या नहीं है उनके पास ? आपने कभी उनको कोसा। आज जब मैं नेता बनने की कसक को पूरा करने आया तो आप आड़े आ गये। कोई चारा खा गया, कोई यूरिया और कोई दलाली। उनके मुख मण्डल चमक रहे हैं। वे देश की सत्ता पर काबिज हैं। यदि मैं भी कुछ इसी तरह का करना चाहता हूँ तो आप क्यों रोक रहे है ?'

पिताजी बोले-'बहस मत कर। मैं ऐसे लोगों को नेता नहीं मानता, मेरे उसूल हैं, उनसे समझौता नहीं हो सकता, तू चाहें भूखों मर जाना लेकिन ऐसा नेता मत बनना। जनसेवा और राष्ट्र सेवा पहली आवश्यकता है नेतागिरी में, तूने अपना आदर्श गलत लोगों को बना लिया है। आजादी के पहले का इतिहास पढ़ और ढ़ाल अपने आपको उन महान् नेताओं की तरह। मैं फिर कहता हूँ तूने फिर कभी ऐसी बातें की तो मैं यह घर छोड़कर कहीं चला जाऊंगा। मैं इतने गिरे हुए बेटे के पास नहीं रह सकता।'

'यह तो कैसे हो सकता है, रहेंगे तो आप मेरे पास ही, चाहे मैं नये जमाने का नेता नहीं बनूं, ठीक है मैं अपने आदर्श बदलने को तैयार हूँ, लेकिन आप इस घर में ही रहिये।'

पिताजी की आंखों मे आंसू आ गये और उन्होंने मुझे अपने गले से लगा लिया। इस तरह कसक ही रह गई नेता बनने की।

मंत्रिमंडल के गठन को लेकर एक विचार कुछ ऐसा भी

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

राजनेताओं की शारीरिक और मानसिक श्रमशक्ति का अधिकांश भाग पद एवं प्रतिष्ठा बनाए रखने/ बढ़ाने या प्रतिद्वंदियों के साथ शह और मात का खेल खेलने में जाया हो जाता है। इसके चलते उनके मनोमस्तिष्क की रचनात्मकता का सीधा लाभ देश-प्रदेश को नहीं मिल पाता। वैसे चंद राजनीतिज्ञ ऐसे हैं, जो पेशेवर दृष्टि से प्रचलित राजनीति के तौर-तरीकों से कोसों दूर है। लेकिन इनका कोई अलग से जनाधार नहीं है। एक प्रकार से यह पूर्णतया किसी कद्दावर राजनेता के संरक्षण में ही उनके आश्रित रहकर क्षेत्र विशेष में अपनी विशेषज्ञता के चलते राजनीति के मैदान में टिके हुए होते हैं। इसमें दो मत नहीं कि समय-समय पर देश-प्रदेश को इनकी योग्यता का लाभ मिलता रहा है।

इस संदर्भ में क्या ही बेहतर हो यदि देश-प्रदेश के मंत्रिमंडल में ऐसे वर्ग के लिए एक निश्चित स्थान आरक्षित कर दिया जाए। आमतौर पर देखा गया है कि पूर्णकालीक राजनेताओं की अपेक्षा विषय विशेष के विशेषज्ञ ही ऐसी कार्ययोजनाओं को मूर्त रूप दे सकते हैं, जो दीर्घकालीन दृष्टि से अत्यंत फलदायी हो। अन्यथा अन्य राजनेताओं का एकमात्र लक्ष्य अपने सक्रिय कार्यकाल के दौरान मिलने वाले लाभ पर ही केंद्रित रहता है। दरअसल देश-प्रदेश में इस समय दीर्घकालीन लाभ की दृष्टि से अनेक योजनाओं को क्रियान्वित किए जाने की नितांत आवश्यकता है।

वरना अब तक तो ऐसा होता आया है कि राजनीतिक विवशताओ के चलते जाति, वर्ग तथा क्षेत्र के आधार पर विभिन्न दृष्टि से संतुलन स्थापित करते हुए सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित की जाती रही है। ऐसे में स्वाभाविक रूप से योग्यता एवं कार्यक्षमता का सटीक मूल्यांकन नहीं हो पाता। जिसके चलते अनेक अवसरों पर मंत्रिमंडल में नादान चेहरे भी स्थान पा जाया करते हैं। ऐसी स्थिति में सरकार के हर निर्णय पर अफसरशाही का प्रभुत्व एवं छाप स्थापित हो जाती है। इसके चलते विभागीय मुखिया की पराश्रित मानसिकता प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से देश-प्रदेश के सर्वांगीण विकास में बाधक सिद्ध हो जाती है। कई बार प्रतिपक्ष द्वारा सरकार को कटघरे में खड़ा करने का अवसर भी मिल जाता है।

इस संबंध में एक किस्सा सुना था कि तत्कालीन मध्यभारत के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने वित्त मंत्रालय स्वयं के पास रखा। शायद कि वित्त मंत्रालय के योग्य चेहरे की सदन में कमी थी। बजट पूर्व उन्होंने वित्तीय मामलों के गहरे जानकारों की अपनी उपस्थिति में लंबी चौड़ी बहस करवाई। उन्होंने हर एक के तर्क को ध्यानपूर्वक श्रवण किया। हर किसी सुझाव का चर्चारत समूह में उसकी उपयोगिता या अनुपयोगिता के बारे में तमाम तरह के तर्क वितर्क के स्वयं मुख्यमंत्री साक्षी बने। तदुपरांत उन्होंने किसी एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचते हुए सदन में बजट प्रस्तुत किया था। वर्तमान दौर में तो शायद ही कभी कहीं ऐसा होता हो। वैसे भी सदन के अधिकांश सदस्य अपने पदीय उत्तरदायित्व का गंभीरतापूर्वक निर्वहन करते दिखाई नहीं देते। भला सदन की गतिविधियों से कौन वाकिफ नहीं !

तब और अब की राजनीति में बहुत बदलाव आ चुका है। बिना किसी विशेष ज्ञान या अनुभव के, संतुलन के नाम पर अनेक बार मंत्रिमंडल में सदन के किसी साथी को उपकृत कर दिया जाता है। जिसके चलते विभागीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण या महत्वाकांक्षी निर्णय लेने की काबिलियत संबंधित विभाग के कर्ता-धर्ता को नहीं होती। जिसके चलते उनमें पराश्रित मानसिकता घर कर जाती है। जाहिर है कि इस स्थिति का लाभ सीधे तौर पर अफसरशाही को मिलने लगता है। इन संदर्भों में यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि कम से कम महत्वपूर्ण विभाग में तो योग्यता के अनुरूप मंत्रिमंडल के किसी साथी को आवश्यक प्रशिक्षण के उपरांत ही राजनीतिक दृष्टि से उपकृत किया जाए।

जीवन मंच

विचित्र किस्म के अधैर्य और जल्दबाजी के शिकार हम

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

आज लोगों की सहन शक्ति जवाब देती जा रही है हर आदमी सब कुछ तुरंत चाहता है। एक क्षण भी रुक कर संसार नहीं देखता, बस भाग रहा है और भागते भागते ही संसार की हर गति को पकड़ना चाहता है । भला इस संसार को या किसी भी संसार को कोई ऐसे थोड़े पकड़ पाता है पर भाग रहे हैं । किसी को भी किसी पर भरोसा नहीं है । सब अपने अपने अंदाज में चलना चाहते हैं और अपने हिसाब से दुनिया को हांकने में लगे हैं । किसी को कहां फुरसत है कि कुछ जाने या समझे । जानना समझना जैसे पिछले जमाने का मूल्य हो और अब तो बस भागने में ही सब कुछ दिख रहा है । भागते भागते लोग-बाग संसार बसाने के चक्कर में रहते हैं । यह दुनिया समझदारों से भरी है और समझदार ऐसे हैं कि सब कुछ बेच दें और आपको कानों कान खबर भी न लगे । आप चाहें जितने बड़े ज्ञानी हो इस दुनिया में किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि आप किसी के काम आ सकते हैं तो ठीक है नहीं तो कोई मतलब नहीं है। आप ज्ञानी हों तो हों संसार को आपके ज्ञान से कोई लेना-देना नहीं है । संसार तो हमेशा इसी तैयारी में रहता है कि आप किसी के काम आ सकें। यदि काम आते हैं तो आपका कोई मूल्य है अन्यथा इस संसार में आपसे बड़ा फालतू आदमी कोई नहीं मिलेगा । समझने और समझाने के लिए कोई तैयार दिखता ही नहीं । कोई भी सुनना नहीं चाहता फिर आप किसे समझाने चलें हैं। अमूमन समझाने की बात वहां आती है जहां अगला व्यक्ति कुछ सीखना और समझना चाहता हों। वह तो बस अपनी जिद को जीना चाहता है या जो समझ बना ली उससे अलग दुनिया है ही नहीं।

आज सबसे बड़ी जरूरत सही ढ़ंग से समझने, सहन करने और बातों को उसके सही संदर्भ में देखने की है। यह बात हर समय पर लागू होती है। आज बराबर ऐसा लगता है कि आपसी समझदारी की कमी आ गई है। सामान्य सामाजिक बोध की कमी बहुत तेजी से हो रही है । किसी बात के लिए धैर्य नहीं है। सब तुरत-फुरत किसी भी तरह अपना कार्य कराना चाहते हैं । कार्य हो जाना चाहिए। बस अपना कार्य कराने के लिए घूम रहे हैं । हर फिल्ड में शार्टकट से जाना चाहते हैं जबकि सफलता के पथ पर संघर्ष और कठोर परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है । धैर्य से अपना कार्य करना ही नहीं चाहते। उन्हें तो बस जल्दी जल्दी सबकुछ चाहिए यह बात अलग है कि इस जल्दबाजी में सब बिखर जाएं तो बिखर जाएं। उनका क्या ? उन्हें तो बस अपने काम से मतलब है ।

हर बात को हर सवाल को जिस तरह नेट पर ढूंढते है यदि उसकी जगह उस बात को उस संदर्भ को मन मस्तिष्क में संभाल कर रखे, थोड़ा दिमाग लगाए तो

समाधान मिल जाये। हर बात हर संदर्भ सर्च इंजन पर ढूढ़ते हैं तो केवल हड़बड़ी वाली दुनिया ही हाथ लगती है सुकून नहीं मिलता । इस तरह लोग चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं । भ्रम के इस कदर शिकार हो जाते हैं कि थोड़ा भी अटपटा प्रश्न आते ही, थोड़ी सी असहज स्थितियां होते ही अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं । आज इस कदर बौखलाएं लोग दिखते हैं कि लगता है पता नहीं क्या हो जायेगा। कौन सा पहाड़ इनके कंधे पर टूट पड़ा है जो इतना परेशान दिख रहे हैं। कोई कोई तो इतना महान होता है बिना किसी बात के ही हैरानी और परेशानी के ढ़ेर पर अपने को खड़ा रखता है, कभी भी सामान्य ढ़ंग से या सुकून में नहीं दिखेगा एक न एक समस्या लिए परेशान घूम रहा है और समस्या भी ऐसी कि समस्या नाम की बला भी परेशान होकर भाग जाएं । समस्या भी इसी तरह की हो सकती है कि तीन दुकान घूम लिए चार घंटे बरबाद हो गये पर ढ़ंग की एक पेन नहीं मिली, जो पेन चाहते हैं वो मिली नहीं और जो मिल रही है वह लेना नहीं है अब इस तरह की समस्याओं को लेकर जी रहे लोगों को भला कैसे समझा सकते हैं ?

आज इतनी छोटी छोटी बातों पर लोग लड़ते झगड़ते हैं कि आश्चर्य होता है कि यह भी कोई लड़ाई झगड़े का कारण हो सकता है क्या? हम कहां आ गए ? किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा है। हैरान परेशान सब लोग बस भाग रहे हैं। इस भागती हुई दुनिया में जो भीड़ है वह बस काम निकालना चाहती है और काम निकालने के लिए ही दौड़ रहे हैं । किसी को इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि हम कहां जा रहे हैं या हमारा समाज कहां जा रहा है ? हमारी जो सामूहिक चेतना थी वह बची है कि नहीं? हमारे होने का , हमारे अस्तित्व का , हमारे भीतर बैठे मनुष्य की कोई जवाबदेही है कि नहीं या बस अपने मतलब का काम निकालने के लिए ही हैं। इन्हीं स्थितियों को देख कवि ने कहा होगा कि 'स्वार्थ महाभीषण होगा' इस स्वार्थ समर में लहुलुहान होने के साथ-साथ औरों को भी लहुलुहान करते चलते हैं लोग। आखिर क्यों इस तरह की भागदौड़ मची है क्यों यह होड़ है कि सबकुछ मेरा हो जाएं । सब मैं ही पा लूं...। किसी को कुछ और न मिले ।

इस भागादौड़ी का परिणाम है कि आदमी एक घड़ी सोचता भी नहीं कि क्या कर रहा हूं ? या जो कर रहा हूं वह कहां तक ठीक है। उचित अनुचित पर विचार किए बिना ही भाग रहे हैं। भला ऐसे कैसे काम चलेगा? इस समय नदी आ रही है पर आदमी को पार लग जाने की जल्दी है। इस तरह की लापरवाहियां हैरान करती है। कहां गया हमारा स्वतंत्र विवेक, हमारा सामूहिक बोध और जीवन के प्रति नैतिक जिम्मेदारी व जवाबदेही का भाव, क्यों जल्दबाजी में भाग रहे हैं ?

कहीं न कहीं विचित्र किस्म का अधैर्य और जल्दबाजी के हम शिकार होते जा रहे हैं । एक खबर आई कि आधार कार्ड में अपडेशन न हो पाने से एक पिता इतना परेशान हो गया कि जान दे दी। ऐसी स्थितियों में भाग रहे समाज को कैसे समझाया जाएं कि जीवन कितना महत्वपूर्ण है - हर स्थिति में, हर चुनौती में आप को जीना है । आप धैर्य से विचार करें कि जो कदम उठाने जा रहे हैं वह उचित है क्या? उचित अनुचित पर विचार करें फिर आगे बढ़े ।

हवा में न कूदें। आजकल अक्सर हवा में कूदते लोग ही ज्यादा मिलते हैं । बात विचार और संदर्भ के साथ जीने वाले लोग कम ही मिलते हैं ।

आरोग्य केंद्र के स्थान को लेकर दो भागों में बटे कामथवासी

स्थान यथावत रखने और परिवर्तन करने के लिए दो पक्षों ने सौंपा ज्ञापन, 65 लाख रुपए की लागत से बनेगा उप स्वास्थ्य केंद्र

बैतूल/ मुलताई। मुलताई क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाएं बेहतर हो सके इसके लिए विधायक चंद्रशेखर देशमुख के प्रयास से क्षेत्र के 16 ग्रामों में आरोग्य केंद्रो के निर्माण की मंजूरी मिली है। 16 ग्राम पंचायतो में मुलताई सीमा से लगी ग्राम पंचायत कामथ भी शामिल है जहां पर 65 लाख रुपए की लागत से उप स्वास्थ्य केंद्र का भवन निर्माण किया जाना है। किंतु अभी उप स्वास्थ्य केंद्र निर्माण का कार्य प्रारंभ हुए दो दिन भी नहीं हुए है थे कि उप स्वास्थ्य केंद्र भवन के स्थान चयन को लेकर ग्रामीणों की दो अलग-अलग राय सामने आ रही है। कुछ लोगों का कहना है कि जहां भवन बन रहा है वह स्थान आरोग्य केंद्र के लिए उपयुक्त नहीं है। जबकि दूसरे पक्ष का कहना है कि ग्राम पंचायत कामथ मे उप स्वास्थ्य केंद्र के लिए वर्तमान में जहां भवन बन रहा है उसे उपयुक्त कोई अन्य स्थान हो ही नहीं सकता कुछ लोग कार्य में अडंगे लग रहे हैं। आज दोनों पक्षों ने अपनी अपनी राय के साथ ग्राम पंचायत की सरपंच पुष्पा जीतू डहारे को ज्ञापन सौप उक्त पंचायत द्वारा चयनित स्थान पर स्वास्थ्य भवन बनाए जाने की मांग की तो दूसरे ओर कुछ लोगों ने ज्ञापन सौप उक्त चयनित स्थान पर स्वास्थ्य भवन निर्माण रोक कर दूसरे स्थान पर भवन निर्माण की मांग की। कुल मिलाकर उप स्वास्थ्य केंद्र भवन निर्माण को लेकर आज ग्रामीण दो अलग-अलग खेमो में बटे दिखाई दिए।

चयनित स्थान पर ही बने उप स्वास्थ्य केंद्र भवन- मोरध्वज सिंह सेवानिवृत्ति सीआरपीएफ सब इंस्पेक्टर के नेतृत्व में ग्राम पंचायत कामथ के सैकड़ो ग्रामीणों ने ग्राम सरपंच पुष्पा जीतू डहारे को ज्ञापन सौंप ग्राम पंचायत द्वारा लिए गए प्रस्ताव के आधार पर ही आरोग्य केंद्र भवन निर्माण की मांग की ज्ञापन में बताया गया कि उक्त स्थान यहां पर वर्तमान में निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ है वहा चारो तरफ से सड़क उपलब्ध है। जहां मरीजों के आवागमन में सुविधा होंगी। अन्य ग्रामीण जिस जगह की मांग कर रहे हैं वहां पहले से तालाब बना हुआ है, साथ ही आसपास 20 से 30 ईट भट्ठे संचालित हो रहे है। मोरध्वज सिंह बताते हैं कि सभी लोग दिल से चाहते हैं कि यहीं पर निर्माण हो कुछ लोग अच्छे कार्य में अड़गा दालना चाहते हैं।

बदला जाए उप स्वास्थ्य केंद्र भवन का स्थल- ग्रामीणों ने सतीश साहू के नेतृत्व में सरपंच को ज्ञापन सौंप कर आरोग्य भवन निर्माण का स्थान परिवर्तन करने की मांग की। स्थान परिवर्तन के पक्ष में अपने तर्क देते हुए सतीश साहू ने बताया कि जहां उप स्वास्थ्य केंद्र भवन का निर्माण हो रहा है वह ग्राम पंचायत के अंतिम छोर पर है इसलिए हम उक्त भवन का स्थान परिवर्तन कर चिखली पुलिया के पास आरोग्य भवन निर्माण की मांग कर रहे हैं । जहां हम भवन निर्माण की बात कर रहे हैं वहां पर स्टॉप डेम जरूर है किंतु वहां पानी संग्रहित नहीं होता।

इनका कहना

हमने ग्राम पंचायत में प्रस्ताव लेकर ही उप स्वास्थ्य केंद्र के लिए उक्त स्थान का चयन किया था। यह स्थल सभी तरह से उप स्वास्थ्य केंद्र भवन के लिए सुविधाजनक है।

- पुष्पा जीतू डहारे, सरपंच ग्राम पंचायत कामथ

विधायक ने क्षेत्र के मनोनीत विधायक प्रतिनिधियों के पद को किया निरस्त

भौंरा। क्षेत्रीय विधायक गंगा सजजन सिंह उईके ने अपने विधानसभा क्षेत्र के मनोनीत विधायक प्रतिनिधियों को पद को तत्काल प्रभाव से निरस्त कर दिया है। विधायक द्वारा जारी आदेश में कहा गया है। कि सभी मनोनीत विधायक प्रतिनिधियों के पद को अगले आदेश तक निरस्त किया जाता है। विधायक गंगा सजन्य सिंह उईके के हस्ताक्षरित इस आदेश में निलंबन के कारणों का उल्लेख नहीं किया गया है। इस आदेश की प्रतिलिपि बैतूल के कलेक्टर और सभी विभाग प्रमुखों को भेजी गई है ताकि आवश्यक कार्यवाही की जा सके। विधायक गंगा सजन्य सिंह उईके ने बताया कि यह निर्णय क्षेत्र की आवश्यकताओं और प्रतिनिधियों के कार्यप्रणाली की समीक्षा के बाद लिया गया है।

कलेक्टर ने शहर में भारी वाहनों के प्रवेश पर लगाया प्रतिबंध

शहर में सुबह 8 से 12 एवं सायं 5 से 9 बजे तक रहेगा प्रतिबंध

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने शहर में भारी वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया गया है। शहर में 7 किलोमीटर के दायरे में मालवाहक ट्रक, डम्फर, मध्यम भार क्षमता के ट्रक, कृषि कार्यों के लिए प्रयोग में आने वाले ट्रैक्टर प्रातः 8 बजे से दोपहर 12 बजे तथा सायं 5 से रात्रि 9 बजे तक प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा। इस अवधि में प्रतिबंधित वाहन आवागमन हेतु बायपास मार्गों का उपयोग कर सकेंगे।

एसपी के प्रस्ताव पर प्रतिबंधित- पुलिस अधीक्षक निश्चल एन झारिया द्वारा बैतूल शहर में वाहनों की संख्या बढने से सडक़ों पर ट्राफिक के बढ़ते घनत्व के कारण शहरी क्षेत्रों के मार्गों में भारी वाहनों का आवागमन होने से लगातार जाम की स्थिति निर्मित होने की स्थिति भारी वाहनों का प्रवेश प्रतिबंध का प्रस्ताव रखा गया था। उनके अनुसार शहरी क्षेत्र में प्रातन 7 बजे से दोपहर 2 बे तक स्कूली एवं सायंकाल 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक शहर के कोठीबाजार एवं गंज बाजार के व्यस्ततम मार्गों पर जिले के विभिन्न स्थानों से नागरिकों का आवागमन रहता है। ऐसे में भारी वाहनों के प्रवेश से दुर्घटना की संभावना बनी रहती है।

पुलिस अधीक्षक के प्रस्ताव के अनुसार पूर्व में भारी वाहनों से सडक़ दुर्घटना होने से शहर में कानून व्यवस्था की स्थिति निर्मित हो जाती है। उपरोक्त परिस्थितियों के साथ-साथ वर्तमान में वाहनों की बढ़ती संख्या एवं यातायात प्रबंधन को ध्यान में रखते हुए भारी वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया जाना आवश्यक हो गया है। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने प्रस्ताव मान्य करते हुए शहर के 7 किलोमीटर दायरे में भारी वाहनों के प्रवेश पर सुबह 8 बजे से दोपहर 12 बजे तथा सायं 5 से रात्रि 9 बजे तक प्रतिबंध लगाया है।

आवश्यक सेवाओं में लगे वाहन प्रतिबंधित आदेश से मुक्त- कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बताया कि आवश्यक सेवाओं में लगे वाहनों को उक्त प्रतिबंधित आदेश से मुक्त रखा जाएगा। उन्होंने बताया कि पुलिस तथा आर्मी के वाहन, नगर पालिका के फायर बिग्रेड, पानी टेंकर, कचरा गाड़ी वाहन, शासकीय कार्यों में लगे वाहन, विद्युत मंडल के कार्यों मं संलग्न वाहन, एलपीजी एवं पेट्रोलियम पदार्थ वाहन, स्वास्थ्य सेवाओं, बैंक, शासकीय खाद्यान्न तथा उर्वरक परिवहन में लगे वाहनों को इस आदेश से मुक्त रखा गया है।

शासकीय हाईस्कूल सालीमेट में किया एक पेड़ मां के नाम अभियान में पौधारोपण

भौंरा। पर्यावरण संरक्षण और हरियाली को बढ़ावा देने के लिए एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत गुरुवार को शासकीय हाई स्कूल सलीमेट विद्यालय परिसर में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में जिला पंचायत सदस्य बिल्किस बारस्कर, सरपंच वीरेंद्र बारस्कर, विकासखंड शिक्षा अधिकारी वीरेंद्र नामदेव, बीआरसी गुलाब राव बर्डे, संकुल प्राचार्य एसके कटारे, बृजेश

दुबे शामिल हुए। इस अवसर पर संस्था प्रभारी प्राणनाथ तिवारी ने कहा कि शासन की मंशानुरूप विद्यालय परिसर में 50 पौधों का रोपण किया गया है। जिसमें छात्रों सहित जनप्रतिनिधियों ने एक पेड़ मां के नाम' लगाया। इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को पेड़ लगाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। मुख्य अतिथि जिला पंचायत सदस्य बिलकिस बारस्कर ने पौधा रोपण कर कहा कि पेड़ लगाना बहुत ही अच्छी पहल है परंतु पेड़ लगा कर उसकी देखभाल करना बडी बात है। लोग अत्यधिक पौधे लगाकर उसकी देखरेख करने भूल जाते हैं। इसलिए एक पेड़ माँ के नाम एक बहुत ही अच्छी पहल है पेड़ की देखभाल भी माँ की तरह ही करनी होगी। तब ही पेड़ लगाने का उद्देश्य पूरा होगा। साथ ही सभी बच्चों को निर्देशित किया गया कि सभी बच्चे अपनी माँ के नाम पर घर में एक पौधा लगाएंगे और उसकी देखरेख माँ की तरह करेंगे। इस कार्यक्रम में उपस्थित जिला पंचायत सदस्य बिलकिस बारस्कर द्वारा संस्था प्रभारी की मांग पर ने शाला परिसर की बाउंड्री वॉल एवं विद्युत कनेक्शन हेतु राशि आवंटित करने का आश्वासन दिया। इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से शाला के शिक्षक,शिक्षिकाएं, छात्र,छात्राएं एवं ग्राम पंचायत के पंच व ग्रामीण उपस्थित रहे।

आर.आई. के स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने पर आयोजित पौधरोपण में शामिल हुए विधायक

बैतूल। राजस्व विभाग के रेवन्यु इंस्पेक्टर हरीश गढ़ेकर के अपने पद से स्वेच्छिक सेवानिवृत्ति ले लिया है, जिसके तारतम्य में समाजसेवी संस्था नित्या सेवा समिति द्वारा सरस्वती शिशु मंदिर गढ़ाघाट टिकारी बैतूल में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में विशेष रूप से बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल शामिल हुए। बैतूल की अग्रणी समाजसेवी संस्था नित्या सेवा समिति के अध्यक्ष रिटायर्ड बैंक ऑफिसर बलराम जसूजा ने बताया कि उनकी समिति के अहम सदस्य हरीश गढ़ेकर, राजस्व निरीक्षक जैसे पद पर लंबे समय तक अपनी सेवाएं देने के बाद स्वेक्छिक सेवानिवृत्ति लिया है। उनके इस अवसर पर संस्था द्वारा देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के महत्वाकांक्षी योजना एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत गाड़ाघाट रोड स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में सुबह 10 बजे पौधारोपण कार्यक्रम रखा गया था, जिसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में क्षेत्र के विधायक हेमंत खंडेलवाल शामिल हुए और उन्होंने पौधारोपण भी किया।

जानकारी के मुताबिक सरस्वती शिशु मंदिर कैंपस में 40 फलदार एवं छायादार पोधे रोपित किए गये। इस अवसर पर सरस्वती विद्या मंदिर के अध्यक्ष कश्मीरी लाल बत्रा, लायंस क्लब के अध्यक्ष श्री देशमुख, नित्या सेवा समिति के अध्यक्ष बलराम जसूजा, सुरेन्द्र कपूर, दीपक पाल, हरीश गढ़ेकर, राहुल मालवीय, विनीत मेहतो, दिनेश मानकर, कमल नागले एवं पत्रकार बलवंत बलवंत धोटे व राधेश्याम सिन्हा तथा शाला के स्टाफ, बच्चे आदि उपस्थित थे। पर्यावरण संरक्षण के लिए नित्या सेवा समिति के अध्यक्ष बलराम जसूजा ने बताया कि समिति द्वारा बैतूल में अनेक स्थानों पर पौधरोपण किया है एवं इस तरह पौधा रोपण करते रहेंगे, साथ ही लगाये जा रहे पौधों की देखभाल का कार्य भी निरंतर किया जायेगा। इस अवसर पर हरीश गढ़ेकर द्वारा सरस्वती विद्या मंदिर के विद्यार्थियों को छाते एवं मिष्ठान वितरण किया गया। नित्य सेवा समिति के अध्यक्ष श्री जसूजा ने बताया कि पौधा रोपण के उपरांत स्कूल हॉल में अतिथियों का स्वागत, सम्मान किया।

रोजगार मेला में 143 युवक-युवतियों ने कराया पंजीयन, 56 को मिला रोजगार

भौंरा। म.प्र. दीनदयाल स्माल अंत्योदय योजना राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत मंगलवार को विजय मंगल भवन में रोजगार मेले का आयोजन किया गया। इस मेले का उद्देश्य स्थानीय शिक्षित बेरोजगार युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करना था। इस रोजगार मेले में वर्धमान, मानस, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन, डीडीयू-जीकेवाय, प्रथम ग्राफिक्स डिजाइन सहित अन्य कंपनियों ने भाग लिया। मेले में कुल 143 शिक्षित बेरोजगार युवक-युवतियों ने अपना पंजीकरण कराया, जिनमें से 56 को विभिन्न कंपनियों द्वारा रोजगार के लिए चुना गया। कार्यक्रम में MPDAY SRLM के जिला मैनेजर सलाम उन्हात, सीएलएफ प्रभारी प्रियंका उपराले, एबीएम प्रीति तिवारी व गोविन्द रैदास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर उन्होंने युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि ऐसे मेले उन्हें अपने कौशल और क्षमता के अनुसार नौकरी के अवसर खोजने में मदद करते हैं। बीएम घनश्याम यादव के मार्गदर्शन में आयोजित इस मेले को सफल बनाने में उन्नति सीएलएफ की प्रबंधक पूनम पासी, बैंक सखी प्रतिज्ञा वर्मा, पशु सखी विनीता और समुदाय समन्वयक रेशमी का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस रोजगार मेले ने न केवल युवाओं को रोजगार के नए अवसर प्रदान किए, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाने का मौका भी दिया। यह आयोजन क्षेत्र में रोजगार को बढ़ावा देने और युवाओं को उनके सपनों की दिशा में प्रेरित करने के लिए एक सराहनीय प्रयास साबित हुआ है। अंत में रोजगार मेले की सफलता में योगदान देने वाले सभी अधिकारियों और कंपनियों का धन्यवाद दिया गया। मेले में शामिल सभी प्रतिभागियों ने इस पहल की सराहना की और भविष्य में भी ऐसे आयोजनों की उम्मीद जताई।

भौंरा के ग्राम कोढ़ा के शिवपाल धुर्वे की आयुष्मान कार्ड बनाने के दौरान मौत

परिवार की आर्थिक स्थिति ने डाला गहरा प्रभाव

भौंरा। ग्राम कोढ़ा के 26 वर्षीय निवासी शिवपाल धुर्वे की बुधवार शाम ग्राम पंचायत भवन के सामने अचानक तबियत बिगड़ने से मृत्यु हो गई। परिवार जनों की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण मृतक के शव को ग्राम पंचायत सरपंच मीरा धुर्वे एवं सचिव राजेश उइके के द्वारा स्वर्ग रथ से ग्राम कोढा पहुंचाया गया। मृतक के बड़े भाई चंपालाल धुर्वे ने बताया कि शिवपाल धुर्वे विगत कई दिनों से पेट की बीमारी से जूझ रहा था । जब उनकी हालत गंभीर हो गई, तो परिवार ने उन्हें शाहपुर शासकीय अस्पताल में भर्ती कराया। शाहपुर शासकीय अस्पताल में जांच के बाद, डॉक्टरों ने उन्हें बैतूल जिला अस्पताल रेफर कर दिया। वहां एक दिन इलाज के बाद भी स्थिति में सुधार नहीं हुआ और डॉक्टरों ने उन्हें भोपाल के हमीदिया अस्पताल रेफर किया। हमीदिया जाने के लिए एंबुलेंस की व्यवस्था भी की गई थी, लेकिन परिवार ने उन्हें वहां ले जाने के बजाय अस्पताल से छुट्टी करा दी और बस से गांव जाने के लिए भौरा के लिए रवाना हो गए। भौरा पहुंचने पर, परिजनों ने आयुष्मान कार्ड

न होने के कारण भौरा के एमपी ऑनलाइन सेंटर में कार्ड बनाने का प्रयास किया। दुर्भाग्यवश, इसी दौरान शिवपाल की तबीयत और बिगड़ गई और उनकी मृत्यु हो गई। मृतक के बड़े भाई, चंपालाल धुर्वे ने बताया कि शिवपाल की तीन साल पहले शादी हुई थी और उनका एक दो साल का बेटा है, जबकि उनकी पत्नी आठ माह के गर्भ से है। परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यंत खराब है। इस संकट की घड़ी में ग्राम पंचायत भौरा की सरपंच मीरा धुर्वे और सचिव राजेश उइके ने तत्परता दिखाते हुए स्वर्ग रथ की मदद से शिवपाल के शव को उनके गृह गांव पहुंचाने का प्रबंध किया। शिवपाल की असामयिक मृत्यु ने उनके परिवार को गहरे दुख में डाल दिया है। उनकी पत्नी, छोटे बेटे और गर्भवती पत्नी की भविष्य की चिंता भी परिवार के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है।

कलेक्टर पहुंचे जिला अस्पताल, मिली अव्यवस्था, नर्स का वेतन काटने के निर्देश

बैतूल। बुधवार शाम को कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने जिला अस्पताल बैतूल का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर को अस्पताल में अव्यवस्था मिली है। अव्यवस्था पाए जाने पर सुधार के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बताया कि बुधवार शाम लगभग 7:30 बजे जिला अस्पताल के ट्राम सेंटर का निरीक्षण किया है। ट्राम सेंटर महिला वार्ड में गंदगी मिली है। प्रतिदिन साफ सफाई व्यवस्था बनाए रखने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने बताया कि एक नर्स की लापरवाही मिली है जिसका एक दिन का वेतन काटने के निर्देश दिए हैं। अस्पताल के मुख्य गेट के पास अतिक्रमण कर पान गुटके की दुकान लगाई थी जिसे हटाने के निर्देश दिए हैं। जिला अस्पताल के 100 मीटर के दायरे में पान गुटके की दुकान लगाने पर प्रतिबंध लगाया है। अस्पताल के पास कोई गुटखा पाउच बेचते पाया तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। कलेक्टर ने कहा कि जिला अस्पताल में किसी प्रकार से कोई भी लापरवाही बर्दाश्त नहीं करेंगे।

गुरुवार फिर पहुंचेंगे अस्पताल- कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कहा कि अस्पताल में जाकर व्यवस्था सुधारने के निर्देश दिए हैं। गुरुवार सुबह फिर अस्पताल का निरीक्षण कर व्यवस्था देखी जाएगी। अस्पताल में मरीजों को भोजन अच्छा नहीं मिलने की शिकायत मिली है। भोजन शाला पहुंचकर भोजन को भी चेक किया जाएगा। इसके अलावा अस्पताल के अन्य वार्ड में भी पहुंचकर निरीक्षण करेंगे। निरीक्षण के दौरान सीएमएचओ रविकांत उइके, आरएमओ रूपेश पद्माकर प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

पुलिया के नीचे कार गिरने से एक की मौत, पांच घायल

बैतूल। जिले के चिचोली क्षेत्र की एक कार पुलिया के नीचे गिर जाने से उसमें सवार एक युवक की जहां मौत हो गई है वहीं पांच लोग घायल हैं, इनमें से एक की हालत गंभीर बताई जा रही है। हादसा गुरुवार सुबह 7 बजे हरदा में जिला जेल के पास घटित हुआ। कार सवार चिचोली के धनोरा निवासी है। वह उज्जैन महाकाल के दर्शन करने के लिए जा रहे थे।

प्राप्त जानकारी के अनुसार बैतूल-इंदौर नेशनल हाईवे पर गुरुवार सुबह 7 बजे हरदा शहर के जेल के पास चिचोली से उज्जैन जा रही कार तेज गति से अनियंत्रित होकर पुलिया से नीचे गिर गई। इस हादसे में बैतूल जिले के चिचोली ब्लाक के धनोरा ग्राम निवासी मोंटी पिता जयप्रकाश आर्य (32) की घटनास्थल पर ही मौत हो गई।

वहीं पांच अन्य युवक घायल हो गए। घायलों का उपचार हरदा जिला मुख्यालय पर स्थित जिला चिकित्सालय में जारी है। घायलों में से एक चिचोली नगर के शास्त्री वार्ड निवासी आशुतोष उर्फ शुट्टी राठौर की हालत गंभीर बनी हुई है। घायलों ने बताया कि बुधवार रात बैतूल विकासखंड के ग्राम धनोरा निवासी मोंटी जयप्रकाश आर्य, हरीश पिता भगवत राव बाघमारे, दादा यादव मोटू देशमुख आशुतोष उर्फ शुट्टी राठौर निवासी चिचोली सहित एक अन्य युवक उज्जैन महाकालेश्वर दर्शन के लिए कार से निकले थे। जैसे ही वह हरदा में जेल के पास पहुंचे, उनकी कार पलट गई।

भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता सदन आर्य ने दिया त्यागपत्र

संगठन में जातिवाद, परिवारवाद और माफियाओं को संरक्षण देने का आरोप

प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा को पत्र लिखकर जताई नाराजगी, संगठन के रवैये से दुखी होकर लिया फैसला

बैतूल। चिचोली की भाजपा राजनीति में पिछले कुछ दिनों से उठापटक और कलह चल रही है जिसके परिणामस्वरूप आज चिचोली क्षेत्र के वरिष्ठ भाजपा नेता और भूमि विकास बैंक के पूर्व अध्यक्ष चिचोली नगर मंडल के सक्रिय कार्यकर्ता सदन आर्य ने प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा को पत्र लिखकर पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से त्यागपत्र देने की घोषणा की है। प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा को लिखे पत्र में आर्य ने संगठन में जातिवाद, परिवारवाद और माफियाओं को संरक्षण देने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि एक या दो परिवार के लोगों को ही विभिन्न पदों पर बैठाने और माफियाओं को संरक्षण देने

जैसी गतिविधियों के कारण उन्होंने यह निर्णय लिया है। इन कारणों से वे बेहद निराश हैं और अब पार्टी में बने रहना उनके लिए संभव नहीं है।

उन्होंने पत्र में लिखा है कि लम्बे समय से जिला संगठन में अपनाए जा रहे रवैये से वे अत्यंत दुखी हैं। एक या दो परिवार के लोगों को ही विभिन्न पदों पर बैठाने, जातिवाद और परिवारवाद को बढ़ावा देने तथा पैसे वाले माफियाओं को संरक्षण देने जैसी गतिविधियों के कारण संगठन में पदों के बिकने की धारणा बन रही है। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं के बीच मतभेद और असंतोष के चलते संगठन में अस्थिरता का माहौल बनता जा रहा है। इस फुट से पार्टी की छवि पर भी असर पड़ रहा है और आगामी चुनावों में इसका प्रभाव देखने को मिल सकता है। गौरतलब है कि चिचोली नगर मंडल के उपाध्यक्ष दिलीप यादव ने भी विगत दिनों पार्टी के जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला को अपने पद से इस्तीफा देने का ज्ञापन सौंपा था।

जल संचय हमारे भविष्य के लिए महत्वपूर्ण, हमें इसके लिए प्रयास करना चाहिए : कलेक्टर श्री गुप्ता

''अमृत संचय अभियान'' को लेकर कलेक्टर श्री गुप्ता सी.एम. राइज विद्यालय देवास में विद्यार्थियों के बीच पहुंचे

देवास/ मोहन वर्मा । देवास जिले में वर्षा जल के संचय के लिए चलाये जा रहे अमृत संचय अभियान के तहत कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता सी.एम. राइज मॉडल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय देवास में विद्यार्थियों के बीच पहुंचे। कार्यक्रम में कलेक्टर श्री गुप्ता ने विद्यार्थियों को जल संचय का महत्व बताया। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि जल संचय हमारे भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है और हमें इसके लिए प्रयास करना चाहिए। कलेक्टर श्री गुप्ता ने विद्यार्थियों को बोरी बांध बनाने के तरीके भी बताए। कार्यक्रम के माध्यम से सीएम राइज स्कूल में जल संचय के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रयास किया गया है। कार्यक्रम विद्यार्थियों को जल संचय की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करेगा।

कलेक्टर श्री गुप्ता ने सीएम राइज विद्यालय के नवीन भवन के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान इंजीनियर एवं ठेकेदार को गुणवत्ता का ध्यान रखने तथा समय-सीमा में कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने विद्यालय में कम्प्यूटर लैब और अटल लैब (रोबोटिक लैब) का निरीक्षण भी किया।

कार्यक्रम में भू-जल वैज्ञानिक सुनील चतुर्वेदी ने विद्यार्थियों को जल संचय की आवश्यकता एवं उपायों पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने अपने दैनिक जीवन में जल संचय के तरीकों को अपनाने का आव्हान किया। कार्यक्रम का संचालन श्वेता काकडे ने किया तथा आभार प्राचार्य देवेन्द्र बंसल ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में श्रीकांत उपाध्याय, गंगासिंह सोलंकी, मोहन वर्मा, मनीष वैद्य, मनीषा सोनी, अरविन्द त्रिवेदी, विद्यालय का स्टॉफ उपस्थित था।

लूट के आरोपी को न्यायालय ने दिया तीन-तीन वर्ष का कारावास तथा 2000 के दंड से दंडित किया

देवास। घटना के संबंध में मिली जानकारी अनुसार दिनांक 8.1 22 को जितेंद्र शर्मा अपने रिश्तेदार से मिलने के लिए इंदौर से ग्राम अरण्य गया था और घटना दिनांक को वह अपने पिता गोपाल शर्मा की मोटरसाइकिल से वापस इंदौर की ओर जा रहा था। जब शाम करीब 6:00 बजे वह ग्राम टोक कला स्थित ओवर ब्रिज के पास अंग्रेजी शराब की दुकान के पास पहुंचा तो आगरा मुंबई रोड पर आरोपी फिरोजशाह एवं सलमान ने उसे हाथ देकर रोका और कहा कि वे लोग उज्जैन के निवासी हैं और मक्सी में घूमने आए थे । आरोपी ने जितेंद्र से अनुरोध किया कि वह उन्हें देवास तक छोड़ दे तो जितेंद्र ने आरोपी को अपनी मोटरसाइकिल पर बैठा लिया और जब उन्होंने टोंक कला ब्रिज को पार किया तो आरोपी ने कहा कि उनका मोबाइल फोन ढाबे पर छूट गया है और ऐसा कहकर आरोपी ने मोटरसाइकिल रुकवा दी इसके पश्चात आरोपी ने मोटरसाइकिल से नीचे उतरकर जितेंद्र शर्मा की गर्दन पकड़ कर नीचे गिरा दिया तथा आरोपी ने जितेंद्र शर्मा की जेब से उसका पर्स मोबाइल फोन निकाल लिया और उसकी मोटरसाइकिल लेकर देवास की ओर भाग गए। जितेंद्र शर्मा के पास में उसका ड्राइविंग लाइसेंस आधार कार्ड पैन कार्ड वह रू. 180 नगद रखे थे सभी ले गए इसके बाद फरियादी जितेंद्र शर्मा ने पुलिस थाना टोंक खुर्द में रिपोर्ट दर्ज कराई। उक्त प्रकरण में शासन की ओर से पैरवी सरकारी वकील अशोक चावला द्वारा की गई तथा प्रकरण में सहयोग न्यायालय मुंशी श्याम अंजना का रहा।

संजीवनी क्लीनिकों पर लगे ताले, कांग्रेसी पार्षदों ने काली पट्टी बांधकर किया प्रदर्शन

25-25 लाख की लागत के बने क्लीनिक अपनी दुर्दशा पर बहा रहे आंसू

देवास। शहरीय क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर मप्र शासन द्वारा संजीवनी क्लीनिक आरोग्य मंदिर स्वास्थ्य केन्द्र 25-25 लाख रुपये की लागत से पिछले 01 वर्ष पूर्व बनाये गये थे, जिसका लोकार्पण लगभग 8-9 माह पूर्व किया गया था, जो कि एक चुनावी घोषणा थी। लोकार्पण के बाद से आज तक लगभग 8 से 10 संजीवनी क्लीनिकों पर ताला लटका हुआ है। जिसकों को लेकर कांग्रेसी पार्षदों ने गुरुवार को नाहर दरवाजा स्थित संजीवनी क्लीनिक आरोग्य मंदिर के बाहर बैठकर जमकर प्रदर्शन करते हुए मुख्यमंत्री के नाम कलेक्ट्रेट में ज्ञापन सौंपकर बंद क्लीनिकों को शीघ्र शुरू किए जाने की मांग की। पार्षद एवं नेता प्रतिपक्ष प्रतिनिधि राहुल पंवार ने बताया कि उन सभी क्षेत्रों के रहवासी व मरीज उस बंद संजिवनी क्लिनिक की राह देख रहे है कि मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक कब शुरू होगा। छोटे-छोटे उपचार व बीमारियों के लिए यह संजीवनी क्लीनिक बनाई गई थी, जिसका लाभ उन सभी क्षेत्रवासियों को आज तक नही मिल पाया और ना ही कोई स्वास्थ्य विभाग के डॉ. व कर्मचारी की ड्यूटी लगाई गई, जहां पर गंदगी पसर रही है। कुछ जगह ताले है, कुछ जगह असामाजिक तत्वो का जमावड़ा लगा रहता है। इसी लिए करोड़ो की लागत से बने संजीवनी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में नजर आ रहे है। क्या देवास कि भोली जनता को संजिवनी कलीनिक का लाभ मिल पायेगा। आखिरकर आम जनता के पैसो का दुरूपयोग क्यो किया गया। पार्षदों ने मांग की है कि शीघ्र अतिशीघ्र बंद पडे सभी संजीवनी क्लीनिकों को सुचारू रूप से शुरू किया जावे व डाक्टरो कर्मचारी की ड्यूटी लगाई जावे। प्रदर्शन एवं ज्ञापन के दौरान पार्षद प्रतिनिधि वसीम हुसैन, प्यारे मियां पठान, राजेश दाँगी, गोलू रितेश विजयवर्गीय, दुष्यंत पांचाल, राहुल कुमावत, रोहन वाघमारे, जितेंद्र मालवीय, संजय रेकवार, शक्ति मालवीय, सूरज बघेल, लोकेश गोस्वामी, प्रथमेश ताँबेकार, हेमंत विश्वकर्मा, सुमित चौहान, रुपेश पटेल, आयुष पटेल आदि उपस्थित थे ।

मुंशी जी की कहानियों में ग्राम्य जीवन साकार हो उठता है, मुंशी प्रेमचंद की कहानियां कालजयी हैं

देवास। कहानियां नैतिक शिक्षा प्राप्त करने का सशक्त माध्यम है। कहानियां सभी आयु वर्गों को प्रभावित करती हैं। जब कहानियां मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखी गयी हों तो उन्हें पढ़कर एक विशेष अनुभूति होती है। मुंशी जी की कहानियों में ग्राम्य जीवन साकार हो उठता है। मुंशी जी ने जिस तरह ग्रामीण परिवेश को अपनी कहानियों का आधार बनाया है वह अद्भुत है। तत्कालीन ग्राम्य समाज की वास्तविकता समझना हो तो मुंशी प्रेमचंद एक आदर्श साहित्यकार हैं। जय हिन्द सखी मंडल द्वारा मुंशी प्रेमचंद जयंती के अवसर पर महारानी चिमनाबाई शा.क.उ.मा.वि. में एक कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अतिथि के रूप में उक्त विचार व्यक्त करते हुए शिक्षाविद और पूर्व प्रशासनिक अधिकारी जी.एल.व्यास ने कहा कि कहानी भावों की भाषा है। वरिष्ठ लेखक मोहन वर्मा ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद की कहानियां कालजयी हैं। मुंशी प्रेमचंद की कहानियां यथार्थ सत्य है।

म.प्र.शासन के कैबिनेट मंत्री प्रहलाद पटेल देवास पहुंचे

● म.प्र.पाठ्यपुस्तक निगम पूर्व अध्यक्ष रायसिंह सेंधव ने किया भव्य स्वागत

देवास। मध्य प्रदेश शासन के पंचायत एवं ग्रामीण विकास कैबिनेट मंत्री प्रहलाद पटेल का देवास आगमन हुआ । म.प्र.पाठ्य पुस्तक निगम पूर्व अध्यक्ष एवं प्रदेश भाजपा कार्यसमिति सदस्य रायसिंह सेंधव ने देवास जिले की सीमा क्षिप्रा पर मंत्री प्रहलाद पटेल का भव्य स्वागत किया एवं देवास जिले की राजनीति विषय पर चर्चा की। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे। स्मरण रहे की भारतीय जनता पार्टी संगठन ने कर्तव्यनिष्ठ, ऊर्जावान, हिंदूवादी भाजपा नेता रायसिंह सेंधव को छिंदवाड़ा विभाग संगठन मंत्री का महत्वपूर्ण दायित्व सौपा। छिंदवाड़ा लोकसभा सीट से प्रहलाद पटेल को भाजपा उम्मीदवार बनाया गया था। उस समय से रायसिंह सेंधव के मंत्री प्रहलाद पटेल से घनिष्ठ सम्बन्ध है । इस दौरान कैबिनेट मंत्री प्रहलाद पटेल अपनी देवास यात्रा के दौरान अपने मित्र रायसिंह सेंधव को पूरा सम्मान देकर राजनीति कद बड़ा गए।

मजदूर संघ ने समारोह कर दी विदाई..

विधायक ने कहा कि ओपी नगरपालिका की सेवा में तब आये जब संझले भैया नपाध्यक्ष थे और सेवानिवृत्त पर उनका छोटा भाई विधायक बनकर..

नर्मदापुरम। भारतीय मजदूर संघ से संबद्ध नगरपालिका कर्मचारी मजदूर संघ ने अपने सहयोगी सहायक राजस्व निरीक्षक ओपी रावत की सेवानिवृत्ति पर सम्मान समारोह आयोजित कर भावभीनी विदाई जलसा रूप में दी स्टेशन रोड सिंधी समाज गुरुद्वारा धर्मशाला में इस समय काफी गहमागहमी रही जब सहायक राजस्व निरीक्षक कर्मचारी ओमप्रकाश रावत (ओपी) को उनकी सेवानिवृत्त पर हर प्रशंसक उन्हें सम्मानित करने उतावला रहा। मजदूर संघ ने सम्मान समारोह आयोजित कर जिन्हें स-सम्मान विदाई दी। श्री रावत ने नगरपालिका में दैनिक वेतनभोगी से लेकर नियमित कर्मचारी के रूप में नगरपालिका के सभी विभागों 45 वर्ष तक लगातार अपनी सेवाएं दी, अपने सेवा काल में लोगों के प्रति उनका आचार विचार, सरलता कठोरता आज सब-कुछ उनके सामने उनकी पूंजी रुप में आया सेवानिवृत्त करना शासन का नियम है। पर यह भी सच है कि 45 साल जिस व्यक्ति ने नगरपालिका में व्यक्तित्व की तरह गुजार दिए उसे जल्द भुला पाना संभव नहीं होगा रामजी बाबा मेला, पटाखा बाजार दुकान आवंटन, अतिक्रमण, मतदाता कार्य व्यवस्था, वसूली, बाढ़ यानि नगरपालिका हित से सभी संबंधित कार्य निपटान में श्री रावत को गजब की महारत हासिल थी। ऐसे कर्मचारी की सेवा निवृत्ती पर भी यदि विभाग उदारीकरण नहीं दिखा पाए तो क्या कहा जाए, इसका मलाल कार्यकारी अध्यक्ष महेश वर्मा के उद्बोधन से साफ नजर आता है। वित्त मंत्रालय के आदेशानुसार कोई भी कर्मचारी सेवानिवृत्त होता है तो उसके सेवानिवृत्त सम्मान के लिए शासन पन्द्रह हजार रुपए कि राशि का भुगतान करता है जिसका लाभ नगरपालिका सीएमओ के द्वारा नहीं दिया गया कर्मचारी के अंतिम कार्यकाल में सम्मान व विदाई नहीं दी गई इसके पहले भी विनियमित कर्मचारी सूबेदार व अन्य सेवानिवृत्त हुए उनको उपादान राशि व एनपीएस फंड राशि के भुगतान नहीं किये वो कर्मचारी आज भी अपने जमा भुगतान को लेकर दर दर भटक रहा हैं। मुख्य नगरपालिका अधिकारी भी एक कर्मचारी हैं, कर्मचारी होकर कर्मचारियों के स्वागत सम्मान समारोह में

उनको सम्मानित न करना देयक फंड व अन्य भुगतान न किए जाना यह कृत्य कर्मचारी विरोधी नीति में आता है। लेखा शाखा से चार दिन पूर्व समायोजन राशि का पत्र जारी किया गया जबाब देने के पूर्व बाइस हजार कि जगह अड़तीस हजार रुपए कि श्री रावत के देयक राशि से काटे गए वसूली की गई। भारतीय मजदूर संघ के वरिष्ठ नेता राधामोहन परसाई ने अपने उद्बबोधन में संघ के पंजीयन से साप्ताहिक अवकाश, नियमितीकरण, फंड जमा व कर्मचारियों कि हित में कि शासन प्रशासन से टकराहट व संघर्ष के बारे में बताया गया श्री रावत ने संगठन शक्ति व कर्तव्य पर वक्तव्य देते हुए कहा कि वो हमेशा कि तरह कर्मचारियों के हित में तन मन धन से तैयार हैं उनके लिए वह आवश्यकता पड़ने पर अनशन व अपने प्राण भी न्योछावर कर सकते हैं कर्मचारी डरे नहीं बस संगठन के साथ खड़ा रहे भाजपा नेता पीयूष शर्मा ने कहा कि श्री रावत के साथ वह भी कर्मचारी संगठन में रहे हैं नगरपालिका से संबंधित कोई भी समस्या हो उसका समाधान हो जाता था पैंतालिस काम करने के बाद यह जानकारी नहीं थी कि ये किस वे पद पर हैं इनके पास कौन सा काम है। विधायक डॉ. सीताशरण शर्मा ने कहा कि ओपी नगरपालिका कि सेवा में आये तब संझले भैया गिरिजा शंकर शर्मा नगरपालिका में अध्यक्ष थे इनकी सेवानिवृत्त के समय छोटा भाई विधायक हैं। नगरपालिका से संबंधित कार्य के लिए अब नये व्यक्ति का चयन करना पड़ेगा मंच का संचालन मनोहर सराठे, सुनील अवस्थी ने किया कार्यक्रम कि व्यवस्था मूर्ति सिंह राजपूत, अंनत सिंह राजपूत, ने की, नगरपालिका उपाध्यक्ष अभय वर्मा, मजदूर संघ अध्यक्ष राजेश अत्रे, दाताराम सगर, परशुराम सूर्यवंशी, रविन्द्र सूर्यवंशी, दौलत सिंह राजपूत, विजय दीक्षित, राजेन्द्र पालीवाल, शिवाजी कांटे, मनीष स्वामी, विशाल पतंगें, दिलावर बेग सैकड़ों लोग उपस्थित थे। सम्माननीय पार्षदगण, ग्वाल समिति व विभिन्न सामाजिक कर्मचारी संगठनों ने व महिला शक्ति ने साल, श्रीफल, स्मृति चिन्ह, पुष्पमाला भेट करके सम्मान किया गया उपस्थित परिवार जनों ने स्वागत समाप्ति के बाद ढोल ढमाकों के जुलूस में निज निवास जुमेराती ले गए जिसमें कर्मचारी वर्ग व मजदूर संघ के सदस्य पदाधिकारी भी शामिल थे।

सेवानिवृत्ति पर अभिनंदन समारोह संपन्न

नरसिहपुर। शिक्षा के कार्य के साथ साथ खेल के मैदान पर विद्यार्थियों के लिए सदैव समर्पण, सेवा, सहयोग की भावना के साथ अपने दायित्व का निर्वहन कर विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ खेल के क्षेत्र राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने वाले वरिष्ठ शिक्षक श्री योगेश शर्मा के शासकीय सेवा में 32 वर्ष की सेवा उपरांत अधिवार्षिकी पूर्ण होने पर डाइट नरसिहपुर में विद्यालय परिवार एवं क्रीड़ा विभाग द्वारा गरिमामय अभिनंदन समारोह एवम् भोज कार्यक्रम का आयोजन डाइट नरसिहपुर में किया गया कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों , कर्मचारियों, शिक्षकों, जनप्रतिनिधियों , द्वारा शाल, श्री फल, तिलक पुष्पहार , उपहार भेंट कर सेवानिवृत शिक्षक श्री शर्मा को सम्मानित कर उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। अभिनंदन समारोह में स्वागत उद्बोधन में संयुक्त संचालक लोकशिक्षण श्री प्रचीस जैन द्वारा श्री शर्मा द्वारा किए गए कार्यों की सराहना करते हुए को कार्यकाल को अनुकरणीय बताया। जिला शिक्षा अधिकारी श्री अनिल व्यौहार द्वारा खेल एकेडमी के माध्यम से खेल के क्षेत्र में खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारने में सहयोग की बात की। विकासखंड शिक्षा अधिकारी डा एस के पाल द्वारा पारिवारिक सदस्य के रूप में अच्छा सलाहकार माना। उत्कृष्ट प्राचार्य श्री जी एस पटेल ने विद्यालय में साथ बिताए समय के अनुभव साझा करते हुए कहा की सदैव बच्चों को अनुशासन की सिखाने वाले, स्नेह समन्वय, सहयोग की प्रतिमूर्ति बताया। डा अशोक उदेनिया ने कहा कि निजी निस्वार्थ को छोड़कर सभी के साथ समर्पित रहे श्री शर्मा को सहज, सरल नम्रता की प्रतिमूर्ति बताया। व्हालीवाल जोनल सचिव श्री मनीष कटारे ने कहा कि आपने सदैव सभी को हिम्मत और साहस देते हुए एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया एवं व्हालीवाल के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर नरसिहपुर की पहचान बनाई। खेल विभाग में सेवारत रहे श्री संतोष राजपूत ने कहा कि मेरा परिचय 1986 में हुआ और आपके खिलाड़ी जीवन के संघर्ष को देखा है, विद्यालय समय के बाद खेल प्रतिभाओं को निखारकर छात्रों को तैयार कर खेल जगत में जिले का आत्मसम्मान बढ़ाया है । खेल जगत में खिलाड़ियों की की प्रतिभा को निखारने साथ खेल विकास की योजनाओं को कार्यरूप में परिणत किया।जिला पंचायत सदस्य श्री धनंजय पटेल ने कहा कि शिक्षक कभी रिटायर्ड नही होता वह अपने ज्ञान और अनुभव के प्रकाश से समाज को प्रकाशित करता है। सेवानिवृत अभिनंदन समारोह में शिक्षक श्री शर्मा के माता पिता एवं परिजन उपस्थित रहे ।सेवानिवृत अभिनंदन समारोह में डाइट प्राचार्य एम एस खान, आर एस शर्मा, द्वारा ने विचार रखे । श्री शर्मा ने सेवानिवृत के अवसर पर अपने शासकीय सेवा में आने से पूर्व किये संघर्ष को भावपूर्ण शब्दों में व्यक्त करते हुए कहा की जीवन में कोई भी कार्य लग्न मेहनत से किया जाये तो सफलता निश्चित मिलती हैं विद्यालय में शिक्षा एवं खेल में किये गये कार्यों याद कर सभी के प्रति आत्मीय आभार व्यक्त किया । कार्यक्रम का सफल संचालन श्री दीपक अग्निहोत्री द्वारा किया गया।इसके पूर्व शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला बी टी आई में पदस्थ वरिष्ठ शिक्षक श्री योगेश शर्मा के सेवानिवृति पर विद्यालय परिवार एवं छात्र छात्राओं द्वारा विद्यालय में तिलक पुष्पहार श्मारती चिन्ह भेट कर आत्मीय अभिनंदन किया गया श्री शर्मा द्वारा छात्र छात्राओं को टी-शर्ट का वितरण किया गया । उक्त अवसर पर श्री प्रचीस जैन संयुक्त संचालक लोकशिक्षण ,श्री अनिल व्यौहार जिला शिक्षा अधिकारी,डॉ.आर पी चतुर्वेदी जिला परियोजना समन्वयक ,एम.ए. खान प्राचार्य डाईट ,डॉ आर एस शर्मा सेवा निवृत उप संचालक शिक्षा, श्री एच पी कुर्मी सेवानिवृत जिला शिक्षा अधिकारी,,श्री ए .एस मशरामउप संचालक शिक्षा, ,श्री जी के नायक योजना अधिकारी डॉ.एस के पाल विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी ,श्री जी एस पटेल प्राचार्य,जे.पी. शर्मा, जी आर शर्मा,स्वतंत्र खरे, प्रधानपाठक संजय चौबे, प्रज्ञा नामदेव ,खेल विभाग प्रणव मजुमदार,खेल विभाग से श्री एस एस राजपूत , सुनीता यादव खेल अधिकारी म्रदुलेश दुबे,देवेश वैध,श्री शर्मा के माता पिता एवं परिजन सहित शिक्षा विभाग के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे ।

विश्व स्तनपान सप्ताह का होगा आयोजन

नरसिंहपुर। कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले के निर्देशन में जिले में एक अगस्त से 7 अगस्त तक विश्व स्तनपान सप्ताह का आयोजन किया जायेगा। विश्व स्तनपान का शुभारंभ सहायक कलेक्टर श्री शुभम यादव की अध्यक्षता, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. आशीष प्रकाश सिंह व सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक डॉ. मुकेश कुमार जैन की मौजूदगी में जिला चिकित्सालय नरसिंहपुर में किया गया। स्तनपान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह विश्व स्तनपान सप्ताह का आयोजन किया जायेगा, जिससे शिशुओं को सही पोषण मिलें और उनका स्वास्थ्य एवं बौद्धिक क्षमता बेहतर हो सके। कार्यक्रम में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सिंह ने विश्व स्तनपान के अंतर्गत की जाने वाली गतिविधियों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इसके अंतर्गत स्वास्थ्य संस्था में स्तनपान के प्रोत्साहन से जुड़ी कमियों का आंकलन कर उन्हें दूर करने के लिए आवश्यक संसाधन एवं उपलब्ध मॉनीटरिंग टूल का उपयोग करना है। माँ एवं शिशु के बेहतर स्वास्थ्य के लिए स्तनपान प्रोत्साहन संबंधी गतिविधियों का समर्थन करेंगे। सप्ताह के दौरान मेटरनिटी, शिशु वार्ड के स्टाफ नर्स तथा पोषक प्रशिक्षक द्वारा भर्ती माताओं का सरल एवं रोचक खेल के माध्यम से स्तनपान संबंधी परामर्श एवं उनका ज्ञानवर्धन किया जाएगा। विश्व स्तनपान सप्ताह के दौरान दस्तक अभियान के अंतर्गत स्वास्थ्य एवं महिला बाल विकास विभाग के संयुक्त मैदानी अमले द्वारा दो वर्ष के बच्चों के घरों में जाकर परिवारजनों को स्तनपान तथा शिशु एवं बाल आहारपूर्ति व्यवहारों पर परामर्श दिया जाएगा। आशा व आशा सहयोगी, एएनएम एवं आंगनवाडी कार्यकर्ता द्वारा ग्राम स्तर पर मातृ सहयोगिनी समूह बैठक आयोजित की जाएगी। समुदाय में स्तनपान को बढ़ावा देने तथा समुदाय में प्रचलित स्तनपान संबंधी अंधविश्वासों/ कुरीतियों को दूर करने संबंधी संदेश दिया जायेगा। साथ ही गर्भवती एवं धात्री माताओं को संतुलित पौष्टिक आहार लेने एवं एनीमिया की रोकथाम के लिए आईएफए की गोलियां के सेवन आदि पर विशिष्ट परामर्श दिया जाएगा। जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. सुनील पटैल व आहार विशेषज्ञ श्रीमती मनीषा नेमा ने संस्था में भर्ती माताओं को माँ के दूध के फायदे से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि नवजात शिशु को पहले 6 माह तक सिर्फ माँ का दूध पिलाना चाहिए।

मुख्यमंत्री के नाम कलेक्टर को सौंपा 2627वां पत्र

नरसिंहपुर। मां नर्मदा अंचल क्षेत्र के अंतर्गत तेंदूखेड़ा ब्रह्मांड घाट से समाजसेवी जीवेश चौरसिया द्वारा 1 नवंबर 2015 से नियमित मुख्यमंत्री को पत्र लिखा जा रहा है जिसमें किसी ने किसी माध्यम से यह पत्र प्रतिदिन पहुंचाया जा रहा है इसी क्रम में बीते दिवस 31 जुलाई 2024 को नरसिंहपुर जिला कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर मध्य प्रदेश शासन के मुख्यमंत्री माननीय डॉक्टर मोहन यादव जी के नाम 2627वां पत्र माननीय कलेक्टर मैडम जी माननीय पुलिस अधीक्षक महोदय माननीय जिला पंचायत सीईओ माननीय एसडीएम महोदय नरसिंहपुर के द्वारा दिया गया इसमें मां नर्मदा अंचल क्षेत्र भगवान ब्रह्मा जी की तपस्या स्थल बरमान घाट में श्रद्धालुओं की संख्या प्रतिदिन हजारों पर्वों पर लाखों होने के कारण यात्रियों की सुविधा के लिए अनेक मूलभूत समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए इनको शीघ्र पूरा करने की मांग की गई है जो इस प्रकार उल्लेखित है ग्राम पंचायत परिक्षेत्र बरमान कला तहसील करेली जिला नरसिंहपुर की महत्वपूर्ण मांगा बरमान कला तहसील करेली के अंतर्गत विधानसभा नरसिंहपुर परिक्षेत्र में है जो मां नर्मदा जी के उत्तराखंड में स्थित है यहां की आबादी लगभग 14 हजार के आसपास है लगभग दो दर्जन से अधिक ग्राम पंचायत का सीधा संपर्क है और बरमान केंद्र बिंदु है पूरे क्षेत्र की लगभग 70 हजार के आसपास की आबादी यहां से केंद्रित होती हैग्राम पंचायत को नगर पंचायत में परिवर्तित किया जाए, तहसील घोषित की जाए और तत्काल नायब तहसीलदार की लिंक कोर्ट प्रारंभ की जाए, पुलिस चौकी को पुलिस थाने में परिवर्तित किया जाए, उपकृषि उपज मंडी शीघ्र प्रारंभ कराई जाए, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में उन्नयन किया जाए तत्काल में यहां पर

स्थाई चिकित्सक की व्यवस्था के साथ पर्याप्त पदों की भरती की जाए, यहां पर लंबे समय से संचालित पूर्व में अनुदान प्राप्त महाविद्यालय को शासकीय शीघ्र किया जाए तत्काल यहां पर प्रशासन की ओर से रिसीवर की नियुक्ति की जाए और कॉलेज में स्वरोजगारमुखी पाठ्यक्रम प्रारंभ होकर बंद हो गए फिर से प्रारंभ किया जाए, मिनी आईटीआई क्रश्चस्त डीएलएड कॉलेज पॉलिटेक्निक कॉलेज प्रारंभ किया जाए, उपपशु प्रजनन केंद्र से पशु चिकित्सालय बनाई जाए, पुरानी स्मारक रानी कोठी जर्जर हो चुकी है उसके स्थान पर इसको बेहतर नया स्वरूप प्रदान किया जाए यहां पर पर्वों पर भीड़भाड़ देखते हुए पर्याप्त कमरों वाला भवन बनाया जाना चाहिए,पुरानी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मां नर्मदा घाट के पास में वृद्ध आश्रम को स्थानांतरण किया जाए और तपोभूमि को पूर्व की तरह सार्वजनिक उपयोग के लिए दिया जाए , निर्माण हो चुकी जीवन रेन बसेरा को प्रारंभ से किया जाए , कक्षा 11 एवं 12वीं की कक्षा संचालित करने के लिए हाई स्कूल से हायर सेकेंडरी में अपग्रेड किया जाए, कन्या नवीन शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल बनाया जाए और उसमें सीएम राज स्कूल प्रारंभ किया जाए, अभी हिरणपुर समिति के नाम से संचालित हो रही है बरमान कला में प्रथम सेसहकारी समिति की दुकान प्रारंभ की जाए, राष्ट्रीय राजमार्ग का 6 लाइन में चौड़ा करण होने के कारण साप्ताहिक बाजार संकीर्ण हो गया है मुख्य रोड पर दुकान लगती है बसों का आना जाना रहता है इसलिए पास में ट्यूबवेल के पास तक खाली जगह में विस्तार किया जाए साप्ताहिक बाजार मंगलवार शुक्रवार को लगता है, दुकान में आवंटन नहीं हो पाई उनका सीधा आवंटन किया जाए और झरना के पास से साप्ताहिक बाजार तक रोड पर किनारे दुकानों का निर्माण किया जाए, पुरानी बस्ती वाली अधिकतर जगह आबादी क्षेत्र घोषित नहीं हो पाई है इसका प्रस्ताव लंबित है शीघ्र घोषित किया जाए 19 एक और राष्ट्रीयकृत बैंक की स्थापना की जाए, 20 निर्माण हो रही पानी की टंकी की पाइप लाइन संपूर्ण बस्ती में बिछाई जाए और जो जगह-जगह लाइन के कारण सड़क टूट गई है उसका शीघ्र सुधार कराया जाए।

79 हजार पदों पर अतिथि शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया शुरू

खाली पदों के लिए संकुल प्राचार्य डाल रहे रिक्वेस्ट, खराब रिजल्ट वालों को दोबारा मौका नहीं

भोपाल (नप्र)। शिक्षकों के प्रदेश में रिक्त 79 हजार पदों पर अतिथि शिक्षक रखने की प्रक्रिया बुधवार से शुरू हो गई थी। आज से संकुल प्राचार्यों ने उन पदों की रिक्वेस्ट जीएफएमएस पोर्टल पर दर्ज करना शुरू कर दिया है, जिन पदों पर नियमित शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं। वैसे तो स्कूल शिक्षा विभाग ने पिछले साल सेवाएं देने वाले

अतिथि शिक्षकों को दोबारा रखने के निर्देश दिए हैं, पर जो शिक्षक विषय और कक्षा का 30 प्रतिशत से अधिक रिजल्ट नहीं दे पाए हैं, उन्हें दोबारा नहीं रखा जाएगा।

तय प्रक्रिया के तहत 4 अगस्त तक संकुल प्राचार्य पोर्टल पर रिक्वेट दर्ज करेंगे और 6 एवं 7 अगस्त को अतिथि शिक्षक पोर्टल के माध्यम से ज्वाइनिंग करेंगे। उधर, विभाग में उच्च पद का प्रभार दिया जा रहा है। इसके लिए काउंसिलिंग की जा रही हैं। वहीं भविष्य में तबादले भी होंगे। इसके पहले 79 हजार पद अतिथि शिक्षकों से भरे जा रहे हैं। पिछले साल की स्थिति देखें, तो उच्च पद के प्रभार और तबादलों के कारण 20 हजार अतिथि शिक्षकों को बाद में पद छोड़ना पड़ा था। इस बार भी ऐसे ही हालात बनने की आशंका है।

जिन पदों पर अतिथि शिक्षक रखे जाएंगे, उच्च पद के प्रभार या तबादलों से वे पद भरे जाते हैं, तो अतिथि शिक्षकों को बाहर होना पड़ेगा। मामले में अतिथि शिक्षकों के संगठन के पदाधिकारी कहते हैं जो शिक्षक पिछले सत्र में बाहर हुए थे, उनके पास 7 से 12 वर्ष से ज्यादा तक का अनुभव था। अनुभव की प्राथमिकता के आधार पर इन्हें दोबारा मौका मिलना चाहिए।

प्रदेश में 3 नए मेडिकल कॉलेज इसी सत्र से

सिवनी, मंदसौर और नीमच में होंगे शुरू, 150 सीटों पर होगा एडमिशन

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के 3 नए सरकारी मेडिकल कॉलेज सिवनी, मंदसौर और नीमच इसी सत्र से शुरू हो जाएंगे। नेशनल मेडिकल काउंसिल (एनएमसी) ने 50-50 सीटों पर प्रवेश को मंजूरी दे दी है। यानी इसी सत्र से एमबीबीएस की 150 सीटें बढ़ जाएंगी। अब प्रदेश में सरकारी कोटे की एमबीबीएस की कुल 2,425 हो जाएंगी। डिप्टी सीएम व स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री राजेंद्र शुक्ला ने बताया कि सिंगरौली और श्योपुर कॉलेज के लिए नियुक्ति प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। संभवतः दो नए मेडिकल कॉलेज अगले सत्र से शुरू हो जाएंगे।

एकसाथ 3 कॉलेज को मान्यता गर्व की बात

मप्र के लिए गौरव की बात है कि एक साथ 3 सरकारी मेडिकल कॉलेज खुल रहे हैं। हमारा प्रयास यह है कि हर जिले में एक मेडिकल कॉलेज हो। कुछ जिलों में वहां पीपीपी मोड पर मेडिकल कॉलेज खोलने की तैयारी है। चुनाव के दौरान भर्ती प्रक्रिया पूरी कर विशेष प्रयास किए।

-डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

भस्म आरती की धुन पर बजेगा डमरू, बनेगा वर्ल्ड रिकॉर्ड

शक्ति पथ पर प्रैक्टिस, डमरू वादकों को थीम बताने के लिए वीडियो भेजा

उज्जैन (नप्र)। महाकालेश्वर मंदिर में 5 अगस्त को भगवान महाकाल का प्रिय वाद्य यंत्र डमरू को एक साथ 1500 लोग बजाकर विश्व रिकॉर्ड बनाएंगे। इसके लिए गुरुवार को भस्म रमय्या के नाम से डमरू बजाने वाला दल ने प्रैक्टिस शुरू की। साथ ही, इस दल द्वारा जो प्रस्तुति दी गई है, उसे प्रदेश के डमरू बजाने वाले आमंत्रित अतिथियों को भेजा जा रहा है, ताकि समान रिदम पर रिकॉर्ड बनाया जा सके।

उज्जैन में विश्व रिकार्ड बनाने की तैयारी शुरू हो गई है। महाकाल की नगरी में इस तरह का आयोजन पहली बार बाबा महाकाल की सवारी निकलने के पहले होगा। इसके पहले महाशिवरात्रि पर शिवज्योति अर्पणम् के तहत दीप प्रज्वलित करने का रिकार्ड उज्जैन में बन चुका है। अब सवारी के दौरान 1500 वादक डमरू बजाकर 10 मिनट प्रदर्शन करेंगे। महाकाल लोक के पास शक्ति पथ पर करीब दो दर्जन से अधिक डमरू बजाने वाले पहुंचे। उन्होंने करीब एक घंटे तक प्रैक्टिस की।

श्री भस्म रमय्या भक्त मंडल के संस्थापक प्रवीण मादुस्कर ने बताया कि तीन दिन तक रोजाना प्रेक्टिस करेंगे। जिसमें करीब 35 से अधिक डमरू बजाने वाले सदस्य होंगे। हाल ही में हमने साउथ की फिल्म में भी डमरू बजाया है। विश्व रिकॉर्ड के दौरान शिव का प्रिय डमरू भस्म आरती की धून पर बजेगा, इस प्रस्तुति की रिकॉर्डिंग भेजी जायेगी इसी थीम पर सभी डमरू वादक प्रस्तुति देंगे।

प्रदेश के 10 जिलों में भारी बारिश

भोपाल में बच्चों से भरी स्कूल वैन नाले में फंसी, मंडला में नर्मदा नदी में बाढ़

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में अगस्त की शुरुआत भारी बरसात से हुई है। गुरुवार को भोपाल, रायसेन समेत 10 जिलों में तेज और रिमझिम बारिश का दौर जारी था। राजधानी में बच्चों से भरी स्कूली वैन नाले में फंस गई। उसे जेसीबी की मदद से निकाला गया। पुराने भोपाल में कुछ इलाकों में सड़कें पानी में डूब गई।

मंडला में बुढ़नेर नदी में आई बाढ़ में एक महिला फंस गई। एसडीईआरएफ ने उसका रेस्क्यू किया। विदिशा, शाजापुर, राजगढ़, गुना, सतना, जबलपुर, नर्मदापुरम और रतलाम में भी पानी गिरा। इससे पहले मौसम विभाग ने भोपाल, सागर, जबलपुर, नर्मदापुरम, ग्वालियर और चंबल संभाग के 19 जिलों में भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। अगस्त के पहले ही दिन प्रदेश में स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव हो गया है, जो अगले 4 दिन तक बना रहेगा। मध्यप्रदेश में सीजन की 51 प्रतिशत यानी 18.9 इंच बारिश हो चुकी है। जुलाई में कोटे से ज्यादा पानी गिर चुका है। अगस्त में भी ऐसे ही आसार हैं।

भोपाल में 2006 में हुई थी रिकॉर्ड 35.6 इंच बारिश – अगस्त के महीने में भोपाल में एवरेज 14 दिन बारिश होने का ट्रेंड है। इस महीने 13 इंच पानी बरसता है। हालांकि, पिछले 10 में से 5 साल ही बारिश का कोटा पार हुआ है। 18 साल पहले वर्ष 2006 में पूरे महीने रिकॉर्ड 35.6 इंच पानी गिरा था, जो ओवरऑल रिकॉर्ड है। इसी साल 24 घंटे में 12 इंच बारिश का रिकॉर्ड भी है। अगस्त के शुरुआत में ही तेज बारिश का दौर रहता है। अबकी बार भी पहले ही दिन गुरुवार को भी तेज बारिश हो रही है। मानसून के दो महीने- जुलाई और अगस्त ही ऐसे रहते हैं, जब करीब 28 इंच पानी गिर जाता है, जो सीजन की कुल बारिश का 75 प्रतिशत तक है।

कोलार डैम के खुल चुके दो गेट- भोपाल की आधी आबादी की प्यास बुझाने वाले कोलार डैम के 8 में से 2 गेट खुल चुके हैं। वर्तमान में भी डैम में लगातार पानी पहुंच रहा है।

सुबह से रुक-रुककर तेज और हल्की बारिश

अगस्त के पहले ही दिन भोपाल में रुक-रुककर कभी तेज तो कभी हल्की बारिश हो रही है। इससे पूरा शहर तरबतर हो गया है। भोपाल में इस मानसूनी सीजन में अब तक 25 इंच से ज्यादा पानी गिर चुका है, जो 70 प्रतिशत से अधिक है। लगातार बारिश होने से आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है।

बड़ा तालाब अब 1 फीट से भी कम खाली

भोपाल की लाइफ लाइन बड़ा तालाब में गुरुवार तक पानी का लेवल 1665.85 फीट तक पहुंच गया है, जबकि फुल टैंक लेवल 1666.80 फीट है। इस हिसाब से तालाब एक फीट भी खाली नहीं है। तीन दिन से कैचमेंट एरिया में ज्यादा बारिश नहीं होने से तालाब में पानी नहीं आया, लेकिन गुरुवार को पानी में बढ़ोतरी होने लगी थी। बता दें कि भोपाल की तीन वाटर बॉडी यानी, बड़ा तालाब, भदभदा और कलियासोत डैम एक-दूसरे से जुड़े हैं। कोलांस नदी का पानी सबसे पहले बड़ा तालाब में पहुंचता है। जब तालाब फुल भर जाता है तो भदभदा डैम के गेट खोले जाते हैं। इसके बाद कलियासोत डैम के गेट भी खुल जाते हैं। कलियासोत डैम के गेट टेस्टिंग के लिए खुल चुके हैं। हालांकि, यह अभी काफी खाली है।

दिग्विजय बोले-पोर्टल बंद होने से नहीं बिक पा रही मूंग

राज्यसभा में कहा-बुधनी में उपचुनाव हैं इसलिए 4 घंटे पोर्टल खोला गया, केन्द्र हस्तक्षेप करे

भोपाल (नप्र)। एमपी के अलग-अलग जिलों में किसान मूंग बेचने के लिए परेशान हो रहे हैं। किसानों की परेशानी को देखते हुए सीएम ने 5 अगस्त तक मूंग खरीदी कराने के निर्देश दिए हैं। लेकिन, पोर्टल बंद रहने के कारण किसान स्लॉट बुक नहीं कर पाने से किसान परेशान हो रहे

हैं। कांग्रेस लगातार मूंग खरीदी को लेकर आ रही दिक्कतों पर सरकार को घेर रही है। आज राज्यसभा में कांग्रेस सांसद दिग्विजय सिंह ने एमपी में मूंग खरीदी में आ रही दिक्कतों का मामला उठाया।दिग्विजय सिंह ने राज्यसभा में कहा कि परसों के रोज बुधनी में उपचुनाव होने वाला है इसलिए एक दिन चार घंटे के लिए पोर्टल खोला गया।

मूंग बेचने की लिमिट घटाई

दिग्विजय सिंह ने राज्यसभा में कहा- मध्यप्रदेश में मूंग का उत्पादन पिछले 5 साल में तेजी से बढ़ा है। सरकार किसानों द्वारा पैदा किये जाने वाले मूंग की न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी ई उपार्जन पोर्टल पर पंजीयन के माध्यम से करती है। इस साल मध्यप्रदेश में मूंग की फसल खरीदने के लिए जो पंजीयन किसानों द्वारा किए गये थे उनके लिए स्लॉट बुकिंग जून के अंतिम सप्ताह से प्रारंभ करके अंतिम तिथि 31 जुलाई 2024 रखी गई थी। विगत वर्ष किसानों से प्रति हेक्टेयर 10 क्विंटल की खरीदी सरकार द्वारा की गई थी जिसे इस साल प्रति हेक्टेयर 8 क्विंटल कर दिया गया।

स्लॉट बुक नहीं कर पाए किसान

दिग्विजय सिंह ने कहा- अधिकतर समय सर्वर डाउन, तकनीकी खराबी या किसी अन्य वजह से पोर्टल बंद रहा। अधिकांश किसान अपनी मूंग की फसल को बेचने के लिये स्लॉट बुक नही कर पाये। इसी बीच 22 जुलाई को किसानों के लिये ऑनलाइन स्लॉट की बुकिंग अचानक बंद कर दी गई। जिससे हजारों किसान स्लॉट बुकिंग से वंचित रह गए।

मप्र में किसान परेशान, एमपी के पूर्व सीएम ही किसान मंत्री हैं

दिग्विजय सिंह ने कहा- गोदामों के सामने हजारों ट्रेक्टर ट्रॉलियों की कतारें लगी हुई है। बारिश के कारण मूंग भीगने अंकुरित हो रही हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार अभी तक कुल अनुमानित उत्पादन का 18 प्रतिशत ही उपार्जन हो सका है। परिणामस्वरूप या तो किसानों की फसल नष्ट हो रही है या फिर किसान अपनी मूंग की फसल को व्यापारियों को कम दाम पर बेचने को मजबूर है। मध्यप्रदेश में इसे लेकर किसान आंदोलित है तथा उनके द्वारा पोर्टल पर स्लॉट बुकिंग की तारीख बढ़ाने, जिनके स्लॉट बुक हो गए हैं उनकी फसल की तत्काल तुलाई करवाने की मांग की जा रही है। राज्य सरकार पूरे मामले की अनदेखी कर रही है। मप्र के किसानों के हित में केन्द्र सरकार से हस्तक्षेप करने की मांग करता है।

तानें मारे तो किया भाभी और दो भतीजियों का मर्डर

पीडब्ल्यूडी कर्मचारी ने दो को हंसिये से काटा; छोटी भतीजी पर पत्थर पटका था

सागर (नप्र)। सागर के नेपाल पैलेस में हुए ट्रिपल मर्डर का आरोपी देवर ही निकला है। ताना मारने पर उसने भाभी, भतीजियों की हत्या की थी। पहले भाभी को हंसिये से मारा। बचाने दौड़ी बड़ी भतीजी पर भी हंसिया लेकर टूट पड़ा और 7 से 8 वार किए। दोनों की हत्या के बाद वह किचन से बेडरूम में पहुंचा और रो रही छोटी भतीजी पर पत्थर पटककर हत्या कर दी।

आरोपी ने खून लगे कपड़े घर में ही छिपा दिए और हंसिया बाथरूम में जाकर बाल्टी में रख दिया। बड़े भाई के कपड़े पहनकर हत्याकांड को लूट दिखाने के लिए अलमारी में रखे गहने और कैश लेकर भाग निकला। आरोपी पीडब्लूडी कर्मचारी है। हत्याकांड में उसका साथ उसके दोस्त ने भी दिया। पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया है।सागर के नेपाल पैलेस इलाके में 30 जुलाई की रात वंदना पटेल, बड़ी बेटी अवंतिका और छोटी बेटी अन्विका पटेल के शव मिले थे।

सागर में सिविल लाइन के नेपाल पैलेस इलाके में 30 जुलाई की रात वंदना पटेल (35), बड़ी बेटी अवंतिका (7) और छोटी बेटी अन्विका पटेल (3) के शव मिले थे। मां, बड़ी बेटी के शव किचन में पड़े थे तो छोटी बेटी का शव बेडरूम में मिला था। पुलिस ने आरोपी देवर प्रवेश पटेल (30) और उसके दोस्त प्रकाश पटेल (27) को अरेस्ट किया है। प्रकाश सागर के ही अहमदनगर का रहने वाला है। प्रवेश दमोह में पीडब्लूडी में है और सरखड़ी (दमोह) में रहता है।

आरोपी के पास से बड़े भाई की टी-शर्ट, लोअर, डोरमेट, हंसिया, पत्थर का बट्टा, सोने का हार, चांदी की 4 चूड़ियां, 10 हजार रुपए कैश और स्कूटी जब्त की गई है। प्रकाश हत्या में सीधे तौर पर शामिल नहीं था, उसने गहने बेचने में मदद की थी।

ऑनलाइन सट्टा खेलने का आदी है आरोपी

पुलिस के अनुसार, आरोपी प्रवेश को ऑनलाइन जुआ-सट्टा खेलने की आदत है। इस वजह से उस पर अक्सर कर्ज हो जाता है। पिता के निधन के बाद उसे पीडब्ल्यूडी, दमोह में अनुकंपा नौकरी मिली थी। 3 साल से नौकरी कर रहा है। 2 साल पहले ही शादी हुई है।

बड़े भाई विशेष ने उसका 9 से 10 लाख रुपए का कर्जा चुकाया था। इसके बाद से दोनों भाइयों के बीच अनबन थी। फिलहाल, उस पर 1.50 लाख रुपए के कर्ज की बात सामने आ रही है।

तुम्हारे कारण हम लोग आगे नहीं बढ़ पा रहे

प्रभारी एसपी डॉ. संजीव उईके के मुताबिक, आरोपी प्रवेश ने पूछताछ में बताया कि 30 जुलाई की शाम 5 बजे वह विशेष पटेल के घर पहुंचा। भाभी और दो भतीजियां ही घर पर थे। भाई ड्यूटी से लौटे नहीं थे। उसने पैसों की डिमांड की। इस पर भाभी ने कहा कि तुम्हारे कारण हम लोग आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। आए दिन भाई से पैसे लेते रहते हो।

गुस्से में आकर पहले उसने भाभी को धक्का मारा। वह दीवार से टकरा गईं, इसके बाद किचन में रखा हंसिया उठाया और 5 वार किए। अंवतिका पर 7 से 8 वार किए। बेडरूम में जाकर अन्विका पर बट्टा (पत्थर) पटककर मार डाला।

कपड़े बदले, पत्थर दूसरे कमरे में छिपाया

भाभी-भतीजियों की हत्या के बाद आरोपी ने खून लगे कपड़े और हंसिये को बाथरूम में जाकर पानी से भरी बाल्टी में डाल दिया। खून के धब्बे साफ करने की कोशिश की। खून लगा पत्थर दूसरे कमरे में ले जाकर छिपा दिया। इसके बाद बड़े भाई के कपड़े पहने। गहने-कैश समेटकर भाग निकला।

वह सीधा दोस्त प्रकाश के पास पहुंचा। प्रकाश की मदद से उसने कुछ गहने 97 हजार रुपए में बेचे। प्रकाश से लिया हुआ कर्ज चुकाया और दमोह चला गया।पुलिस के मुताबिक, आरोपी घटना वाले दिन सुबह ही दमोह से सागर आया था। वह दोस्त प्रकाश से मिला। उसकी मदद से अपनी स्कूटी गिरवी रखी। हत्याकांड के बाद उसने गिरवी रखी स्कूटी भी पैसे चुकाकर वापस ले ली थी। आरोपी की गिरफ्तारी के लिए एडिशनल एसपी लोकेश सिन्हा के नेतृत्व में 10 पुलिस टीमें गठित की गई थीं।

ससुराल में छिपकर बैठा था आरोपी

पुलिस को शुरुआती जांच से ही विशेष पटेल पर शक था। जांच के लिए पुलिस दमोह पहुंची लेकिन वह नहीं मिला। इसके बाद टीम दमोह के पास सरखड़ी गांव में उसकी ससुराल पहुंची। यहां से उसे हिरासत में लेकर सागर लाया गया। पहले तो वह गुमराह करता रहा, फिर पुलिस के सख्ती करने पर पूरी कहानी उगल दी।

प्रभारी एसपी उईके के मुताबिक, अभी तक की जांच में हत्याकांड के पीछे सिर्फ आरोपी प्रवेश पटेल का नाम सामने आया है। उसके दोस्त ने गहने बेचने में मदद की। हालांकि, अभी जांच पूरी नहीं हुई है। परिवार के कोई अन्य सदस्य शामिल हैं या नहीं, इसकी जांच जारी है।

कलियासोत नदी को साबरमती रिवर फ्रंट जैसा डेवलप करें

विधायक शर्मा ने केंद्रीय मंत्री खट्टर से की मांग; बोले-नदी पर स्टॉपडैम भी बने

भोपाल (नप्र)। भोपाल की कलियासोत नदी को बारहमासी बनाने के साथ साबरमती रिवर फ्रंट की तर्ज पर विकसित करने और घाटों को डेवलप कर पर्यटन केंद्र बनाने की मांग की गई है। इसे लेकर हुजूर विधायक रामेश्वर शर्मा ने केंद्रीय मंत्री मनोहरलाल खट्टर को दिल्ली पहुंचकर आवेदन भी सौंपा है। उन्होंने नदी पर स्टॉपडैम बनाने की बात भी कहीं। ताकि, भोपाल और रायसेन जिलों में फसलों का रकबा बढ़ सके।

कलियासोत नदी कोलार से होते हुए बेतवा नदी में मिलती है, जो कि कलियासोत डैम पर पूरी तरह से निर्भर है। डैम के गेट खुलने के बाद ही इस नदी में पानी आता है। बाकी पूरे साल यह नदी सूखी रहती है।

केंद्रीय मंत्री से यह मांग की- कलियासोत नदी को बारहमासी बनाया जाए। इसके लिए तकनीकी आधार पर सुनिश्चित स्थानों पर स्टॉपडेम का निर्माण

हो। इससे बहुत बड़ी आबादी के जलसाधन- ट्यूबवेल, बावड़ी आदि के जलस्तर में वृद्धि होगी।

जिस तरह साबरमती नदी पर रिवर फ्रंट का निर्माण कराकर उसे न केवल स्वच्छ और सुंदर बनाया, बल्कि चर्चित पर्यटन स्थल के रूप में विकसित भी कराया। उसी तर्ज पर कलियासोत नदी को बारहमासी नदी बनाते हुए साबरमती रिवर फ्रंट की तरह विकसित किया जाए।

कलियासोत नदी पर घाटों का निर्माण हो। जिससे कि सनातनी परंपराओं का निर्वहन किया जा सके। यहां पॉ-वे, आकर्षक पार्क, वाटर स्पोर्ट्स गतिविधि, फूड कोर्ट का निर्माण कराया जाए। इससे कलियासोत नदी के संरक्षण के साथ स्थानीय रोजगार के नए अवसर भी उपलब्ध होंगे।

कलियासोत नदी के संपूर्ण आबादी क्षेत्र के यथास्थिति दोनों ओर रिटेनिंग वॉल अथवा पिचिंग कर इसमें होने वाले अतिक्रमण को रोका जाए।

समय-समय पर एनजीटी एवं विभिन्न पर्यावरण प्रेमियों द्वारा कलियासोत नदी के संरक्षण संवर्धन की दिशा में चिंता व्यक्त की जाती रही है। कलियासोत नदी के बारहमासी बनने एवं पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित होने के बाद इस पर होने वाले अतिक्रमण एवं प्रदूषण की चिंता पूर्णतः समाप्त हो जाएगी। कलियासोत नदी वृहद क्षेत्र में फैली हुई है। इसलिए इसके पर्यटन एवं संरक्षण व संवर्धन की विस्तृत रूप रेखा के लिए आगामी वर्षों के लिए इसका मास्टर प्लान भी बनाया जाए। कलियासोत डेम से नहर के माध्यम से भोपाल एवं रायसेन जिले की हजारों हेक्टेयर भूमि सिंचित की जाती है।

कलियासोत भोपाल की जीवनरेखा

विधायक शर्मा ने बताया, कलियासोत नदी भोपाल की जीवन रेखा है। उसे बचाने का दायित्व हम सबका है। इसे केवल बचाना नहीं है, उसका संवर्धन भी करना है। इसे लेकर ही केंद्रीय मंत्री से मुलाकात की है। नदी की मौजूदा स्थिति और उसकी विकास योजना को लेकर भी सुझाव प्रस्तुत किए। केंद्रीय मंत्री को गुजरात की साबरमती रिवर फ्रंट की कार्य योजना की भी जानकारी दी। जिसके मूल स्वरूप एवं पर्यावरण के अनुरूप सीईपीटी (सेंटर फॉइ इन्वॉयरमेंटल प्लॉनिंग एवं टेक्नोलॉजी) अहमदाबाद द्वारा विकसित किया गया था। कलियासोत के सौंदर्गीकरण के लिए भी इसी तरह के अनुभवी संस्थान से कार्ययोजना बनवाई जा सकती है।